अपन मन अपन धन

अपन मन अपन धन

जगदीश प्रसाद मण्डल

पल्लवी प्रकाशन

बेरमा/निर्मली

APAN MAN APAN DHAN

Collection of Maithili Stories by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-87675-02-5
दाम: 251/- (भा.रु.)

पाँचिम संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2015)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण चित्र: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

कथा-सत्तैर

चौरचनक दही

कुशी अमावसियाक परात। आइसँ चौरचनक दही पौड़ल जाएत...।

सुतले रही कि पत्नी देह डोलबैत बजली–

“सभ कियो दूध आनए जाइए आ अहाँ सुतले रहब।”

गाढ़ नीनमे रही तखन ‘दूध आनए जाइए’ से बजली मुदा नीन टुटला पछाइत ‘अहाँ सुतले रहब’ सुनलौं। ओना, सुतैक इच्छा अपनो रहए आ अपना मनोकेँ। किएक तँ भादो, माघ आ जेठ मास जँ सुतल-सुतल बीतए तँ ओइसँ नीक की हएत। यएह ने भेल राज सुख। तहूमे आब कि भादो ओ खिच्चा रहल आकि अजोह रहल आब तँ अदहा परक अमावसिया सेहो बीति गेल, मुदा कड़कड़ाएल भादोक जुआनी तँ अछिए। ताकल आँखि बन्न भऽ गेल...।

दोहरबैत पत्नी बजली–

“गाए-महींस पोसनिहार एक-एक किसानकेँ जेते दूध होइ छै तइसँ बेसी लेबाले सभ पहुँच गेल हएत। तैठाम जँ अगुआ कऽ नइ जाएब, तँ दूध हएत?”

ओना, मन सुतैक रहए मुदा पाबैनक दूध छी, जँ नै हएत तखन पाबैन केना हएत। तैसंग मन सुतैपर टँगेने ईहो भेल जे आब कि कोनो गाए कि महींसबला सुच्चा दूध थोड़े दइए, पानि मिला दूध बेचैए। मुदा लगले भेल जे पानियोँ मिला कऽ जे दइए तँ दइतो तँ दूधे कहि कऽ अछि।

आ कहबेटा थोड़े करैए, दूधेक दामो तँ लइते अछि। तखन तँ भेल जे दूध-पानि दुनू बरबैर...।

..फेर भेल जे जँ दूध-पानि दुनू बरबैर भेल तखन अनेरे लोक एते हरान भऽ कऽ गाए-महींस किए पोसैए, इनारे-पोखैर किए ने एकेबेर खुना लइए जे पुस-पुसताइन चलैत रहतै। मुदा पेट-पेटक अपन-अपन महत छै ने, केकरो पेटमे पानि रहै छै, केकरो पेटमे दूध रहै छै, केकरो पेटमे बीख रहै छै तँ केकरो पेटमे अमृतो रहिते छइ। मुदा लगले मन उछैट गेल। उछैट ई गेल जे दूधोकेँ तँ लोक पनिछरहा दूध कहिते छइ। माने ई जे जरसी वा आन-आन किसिमक जे गाए अछि ओकरा दूधकेँ पनिछराह दूध बुझि दामो कम दइए आ खाइक परियासो कम करैए। किए ने कम करत, ओकर छालही, डारही, दही तक ने पनिछराहे हेतइ।

ओछाइनेपर मन अकैछ गेल जे अनेरे कोन लफड़ामे पड़ि गेलौं। दूध-पानिक फरिछौट खेनिहारे-पोसनिहारे अपन करत। कुत्ता रहै केकरो आ किदैन देखै आन। मुदा अपने तँ केतौ ने छी, ने खेनहारे छी आ ने पोसनिहारे। पाबैनक नामपर साल भरिपर दर्शन दहीक होइए। से केहेन दर्शन करब, मक्खनबला दहीक आकि पनिछरहाक? मन घुरिया गेल। घुरिया ई गेल जे दूधपनियाँ जकाँ दूध होइए। जइमे पानियोँ फेँट देने तँ पचिये जाइए। मुदा डिब्बाबलामे तँ से नइ हएत, ओइमे हाफ क्रीम, फुल क्रीम दुनू रहै छै, जखन दूधक सभ गुण ऐछे, तैसंग ईहो ऐछे जे गरदाएल रहैए, पानिक केतौ दरस नै रहै छइ। अपना मने जेते फुरत तेते पानि दऽ कऽ तेहेन दूध बना लेब...।

..फेर भेल जे जँ कम पानि दऽ कऽ गहुम-चाउरक चिक्कस जकाँ सानि कऽ मटकूरमे पाथि देबइ, ओहो तँ दहीए भेल। अनेरे किए एक बेर दूध आनब, दोसर बेर जोरन-ले वौआएब, सेहो केतौ मंगनी भेटत तँ भेटत नइ तँ दोकानसँ कीनि कऽ आनए पड़त, फेर ओकर ताकक गरे अम्हौर देबै, तखन ने दही हएत। बड़ मेठैन अछि। मनमे ऐबते पत्नीकेँ

कहलयैन– “जेकरा-ले नोर बहावी, तेकरा कोनो ढेकारे ने।”

पत्नी चौंकली। हम दूध आनैले जाए कहै छिऐन आ ओ नोरक गप कहि देलैन! मुदा अनठेकानी किछु अनुमानो करब तँ नीक नहियेँ हएत। पानिकेँ ऊपरसँ केना बुझबै जे थलगर अछि कि पँकिगर, पीछड़ाह अछि कि घुच्ची-घाची छइ। रोड़ा-पत्थर छै आकि काँट-कुश। तँए नीक हएत जे पुछिये किए ने लिऐन– “केकरा-ले नोर बहबै छी आ ओकरा ढेकारे ने छै?”

मनमे खुशी भेल। खुशी ई भेल जे अनका जकाँ नहि ने जे अपना मने कऽ लेब आ दोख लगा देब घरक पुरुखकेँ। एते तँ जरूर भेल अछि जे पत्नी मनक बात बुझए चाहै छैथ।

कहलयैन– “अहींक दुख-धंधाक बात सोचै छी। मुदा से अहाँ बुझब थोड़े, करवनो देह पकैड़ डोलबै छी तँ करवनो बाँहि पकैड़ झमाड़ै छी।”

पत्नीकेँ बुझि पड़लैन जे हमरे दुआरे मनमे बेथा छैन। जहिना मन-चोभिया नाचमे नंगेड़ाक संग डिगरी गिरगिराइत रहैए तहिना गिरगिराइत बजली–

“हमरा दुआरे जँ मनमे वेदना अछि तँ लिअ, हम गलती मानै छी।”

मन चपचपा गेल। मुँह-आँखि गम्भीर बनबैत बजलौं–

“अखनसँ जे दूधकेँ औंटै-पौड़ैमे लगल रहब, तइसँ नीक ने जे पौडरबला दूधकेँ सानि कऽ मटकुरीमे पाबैनियेँ बेर थोइप देब आ टटके दही खाएब।”

मुदा हमर गप हुनका नीक नै लगलैन। पिनैक गेली। पिनकैत बजली– “अपन कोंढ़िपना दुआरे हमरा कोंढ़नी बनबै छी। हमरा कि नइ बुझल अछि जे अरबा चाउरकेँ पीसि कऽ पिठरिया दही पौड़ लेब।”

की करितौं, भोरे-भोर पत्नी-मुहेँ ‘कोढ़िया’ सुनि कनी ईर-खा मनमे

ईर जगल। झझकारि कऽ बजलौं–

"कनी दू घुस्सा मुँहमे दऽ कुर्ड़ा केने अबै छी ताबे लोटे आकि कमण्डले अखाइर कऽ राखू। अखन चाह-ताह नै पीआउ, आइ पौडरबला दूधक चाह नहि, महींसे दूधक चाह पीब।"

ओना, पत्नीकेँ दुलरबैत कहलयैन मुदा मनक तमतमी नइ मिझाएल रहए। घरसँ भागल लोकक डेग जहिना झटकल होइत तहिना दरबज्जापर सँ निकललौं। ओना, मनमे ईहो भेल जे एक बेर पाछू उनैट नजैर देखि लिऐन मुदा जाबे तमतमी कमै-कमै ताबे डेढ़िया टपि रस्तापर चलि एलौं। रस्तापर ऐबते तरंगल मन जेना वीणाक तार जकाँ तरंगित भऽ गेल। तरंगित मनमे पवन पाबन पाबैन उठि गेल। जाबे पाबैनक जोगार नै करब ताबे हँसी-खुशीसँ मनाएब केना। जोगारो की कोनो एके-आध टाक करए पड़त, तीन दिन पाबैनक जोगारेमे लगत। दूध बसियाएत तखन दही बनत, दही तक अबैत-अबैत मन थीर भऽ गेल। थीर होइते मन चौरासी लाख जीवपर चलि गेल। कोनो दुधपिबा तँ कोनो बिनु दुधपिबा, मुदा छी तँ सभ जीवे-जन्तु। जेते मन फरीच करए चाहैत रही, तेते घोराइते गेल। घोराएले मनमे उठल, जीव तँ गाछो-बिरीछ छी, जे जीवो-जन्तुसँ नमहर होइए ओ कोन दूध पीबैए। बड़ पीबैए तँ सिरक गरे पानि पीबैए। मुदा ओकरा दूध नै होइ छै, सेहो तँ नहियेँ कहल जाएत। चौबगली निच्चाँ-ऊपर सीरबला गाछ, बिनु सिरबला गाछ आ बर्ड़ूबला गाछ केकर दूध पी कऽ एते-एते अछि..?

..फेर मन ओझरा गेल। ओझराइते आगू बढ़ल, ओह! जखन एतए तक आबिये गेलौं तखन झिंगुरकाकाकेँ सेहो भेँट काइए लेबैन। बहू दिन भेँट भेना भऽ गेला। तहूमे आब निच्चाँ मुहेँ भेल जाइ छैथ, आँखिक रोशनाइयो दिनो-दिन कमियेँ रहल हेतैन। चिन्हबो करता कि नहि। मुदा फेर भेल जे जखने हाथ जोड़ि कहबैन जे 'गोड़ गलै छी' तँ ओ अनेरे ने बोलीसँ परेख लेता।

मुदा बीचमे एकटा काजक झंझट तँ ऐछे, पहिने दूधले जाएब कि हुनकासँ भेँट करबैन। फेर भेल जे जँ दूहैमे देरी हेतै तँ कमण्डल रखि कहि देबइ। नइ जँ दूहा गेल हएत तँ दूध लऽ लेब। जँ से नइ केने रहब तँ जहिना खिसिया कऽ घरसँ निकललौं तहिना पहुँचते खिसिऐनीसँ फेर भेँट हएत। अनेरे किए खिस्सा-खिसनीक भाँजमे पड़ब...।

महींसोबला शिकारी, ओ महींस दूहबे ने केने रहए। महींस बोली दइ, मुदा ओहो दोहरी लाभक भाँजमे रहए। पहिल जँ महींस डिरिआइत-डिरिआइत पन्हा जाएत तँ पर्ड़ूकेँ घासो-तासो दऽ कऽ निमाहि लेब। तैसंग दूधक गहिंकियोक भाँज-भुँज लगि जाएत। नपै-जोखैक भाँज बुझले रहए। दूहि कऽ पहिने आँगनमे ढार देत तखन ने दरबज्जापर आबि बेचत। बुझले हिसाब छै, तीन हिस्सा दूध निकालि कऽ रखि तीन हिस्सा पानिक ढार दऽ नेने औत। जँ रतुका दूध रहितै तँ हाथेसँ गाब निकालि लेने रहैत। मुदा से नै रहइ। तहूमे जँ कियो किछु बजबो करत तेकरा थोड़े चलए देत। थनसँ दूहि कऽ सभकेँ देखा देत। कोनो कि कच्चा खेलाड़ी अछि, पुश्तैनी अछि। जखन राम नामक लूटे भऽ रहल अछि तखन की ओहए एहेन अछि जे छुटि जाएत...।

दरबज्जापर पहुँचते मलकार पुछलक–

“भाय साहैब, केते दूध लेबइ। अखन नइ दूहलौं अछि, कमण्डल रखि दियौ। नापि कऽ रखि देब।”

सवुर भेल। सवुर होइते पत्नीक आदेश पालनक वफादारी बुझिते मनमे खुशी भेल। कहलिऐ–

“कनी झिंगुरकाकासँ भेँट करए जाइ छी जँ कनी अबेरो भऽ जाए ते विथुत नइ करिहह।”

बन्हौटा गहिंकी जकाँ मलकारक मनमे खुशी भेलइ। बिसवास दिअबैत बाजल– “अखन ते भिनसरे अछि जे दुपहरोमे ऐबतौं तँ की

विथुत हुअ दइतौं।”

ओना, झिंगुरकाकासँ भेँटक अँटावेश देखि मन फुलाएल रहए मुदा मलकारक आश्वासन सुनि हवाक लहकीमे जहिना फूलो, पातो आ फलो अपना समयसँ पहिने बेसिया जाइए तहिना मन बेसिया गेल। बेसियाइते मनमे उठल- एकटा महींस छै, पाँच किलो कि सात किलो दूध भिनसर आ ओते साँझोमे होइत हेतइ, मुदा बिकरीक ठेकान अछि जे केते लेबाल औत केते नै, तखन एहेन आश्वासन किए देलक? भेल जे पुछिऐ, मुदा गाइयो-महींसक कि ठेकान अछि। कोनो एहेन होइए जे साँझ-भिनसर बन्हौटा लागत तँ कोनो एकोशिया भऽ एकसँझू लागत। तहूसँ बेसी एकोशिया भेने बेठेकान भऽ जाएत। गोटे दिन भोरेमे लागत तँ गोटे दिन रातिमे...।

मन मानि गेल जे एना तँ होइते छइ। मुदा लगले भेल जे ऐसँ अखुनका प्रश्नक हल कहाँ भेल? ई तँ भेल घटबी। मुदा अछि तँ बढ़बीक प्रश्न। मुदा लगले जेना मन चीतसँ पट भऽ गेल। माने ई जे धर्मक संग पाप, रातिक संग दिन, चोरक संग साधु, एक्केठाम केना पति-पत्नी जकाँ रहैए..?

..एक तँ झिंगुरकाकासँ भेँट करैक अछि, तैसंग पत्नीक आढ़ैत सेहो अछि, तैपर अपने कोन ओझरीमे ओझरा गेलौं! मुदा टीकमे लागल चिड़चिड़ी जँ छोड़ा नइ लेब तँ अनेरे ताबे तक धेने रहत जाबे तक ओकरा छोड़ाएब नहि। मन मानि गेल जे दूधक बढ़बीक विचार काइए लेब नीक। कहैले तँ गाइए-महींस भेल, मुदा सबहक चालियो-ढालि आ गुणो-धर्म एके रंग थोड़े होइ छइ। कोनो साले-साल बच्चा दइए जेकरा पुरैहिया कहै छिऐ, तँ कोनो सालक-साल दूधे दइए आ कोनो एहेन टिपौड़ी होइए जे घासकेँ सूंघि कऽ छोड़ि देत आ कोनो एहेन होइए जे निङ्हेसो चिबा खाइए। तैसंग मनुखे जकाँ कोनो ढाहियो मारत, लथारो मारत आ हूरियोहो लइए तँ कोनो एहनो तँ होइते अछि जे अपने बच्चा जकाँ पेट-

थन सभतैर आनो बच्चाकेँ सिनेहसँ अपन दूधो देखबैए आ मुँहमे ढारो दइते अछि..!

..फेर मन घूमल। ऐसँ दूधक बढ़बी कहाँ बुझलौं? मन आगू दिस ससरल, गाइयो-महींस तँ एहेन होइते अछि जे समय-कुसमय नइ बाड़ैए। जखने थन लग कोनो वर्तन लऽ कऽ पहुँचब तँ पनहा जाएत। भलेँ बन्हौटा जकाँ पाँच किलो, सात किलो दूध नै होइ, अदहे किलो होइ मुदा दूध दइमे कोताही नहियेँ करैए? हँ से तँ ठीके। मुदा एहनो तँ ऐछे जेकरा कामधेनु कहै छिऐ, ओकरा जखन इच्छा हुअए तखन दूहि लिअ। धुर्र! अनेरे दूध-दहीक लपौड़ीमे मनकेँ घुरिऔने छी। जानए जअ जानए जत्ता। सतुआ संग घुन पीसाउ आकि घुन संगे सतुआ..; से ओ जानए। सालमे एक दिन चतुरथी चानक चमकमे छह-छह करैत आगू अबैए तइले एते बुधि खपौने अपने नोकसान हएत। मन-चित मारि झिंगुरकाका ऐठाम विदा भेलौं।

झिंगुरकाका अखियासी लोक। ओना, उमेरो उदियास्त दिस निच्चाँ उतैर रहल छैन, मुदा जहिना-जहिना भिनसुरका सुर्ज धीरे-धीरे प्रखर होइत बारह बजेक सीमा पार होइते साँझ दिस धीरे-धीरे उतरए लगैए तहिना झिंगुरो काकाकेँ भऽ गेल छैन। दरबज्जाक ओसारक दछिनवरिया चौकीपर देवालसँ ओंगैठ पूब मुहेँ आँखि बन्न कऽ बैसल रहैथ। आँखि मूनि भरिसक सुर्जपर धियान लगौने रहैथ। ओसारपर बैसल देखि मनमे खुशी भेल। खुशी ई भेल जे बाड़ी-झाड़ी केतौ ताक-हेर नै करए पड़ल, बैसकियेपर भेट गेला। पएर छुबि कहलयैन– “गोड़ लगै छी, काका।”

जेना कोनो विचारक बीच कानसँ आवाज गेलैन तहिना चौंकैत बजला–

“के गौड़ीसुमन?”

कहि जेना फेर अपने दिस नजैर खिरबैत चुप भऽ गेला। किछु-कालक पछाइत बजला– “बौआ, आब होइए मरबे नीक। अनेरे कोन

जंजालमे पड़ि गेल छी।"

काकाकेँ मरै दिस नजैर झूकल देखि मनमे छगुन्ता लगल। छगुन्ता ई लगल जे गाड़ी-सवारीसँ थौकचो भेल लोक जीबए चाहैए जेकरा जिनगी भरि अपनासँ ठाढ़ो ने भेल हेतइ। मुदा झिंगुरकाकाकेँ कोनो तेहेन भीर-भार नहियेँ देखै छिऐन, तैयो एहेन बात बजै छैथ? कहलयैन–

"काका, अखन अहाँ बीस बर्खसँ ऊपरे जीब, तखन किए अखनेसँ गाड़ीक रिजरवेशन करबए चाहै छी।"

जेना हमर गप काकाकेँ नीक लगलैन तहिना मुँहक सुरखीसँ बुझि पड़ल। बजला– "बौआ, जाबे जीवन भाय आ डाक भाय जीबै छला ताबे गपो-सप्प करैमे मन लगै छल। मुदा जहियासँ ओ दुनू मरि गेला, तहियासँ होइए जे अनेरे जीबै छी।"

झिंगुर कक्काक बात नीक जकाँ नहि बुझलौं, मुदा बीचमे नाकर-नुकुर करब सेहो नीक नइ बुझलौं। नाकर-नुकुर केने पाशा बदैल जाइए, तहूमे एकभग्गू लोक झिंगुरकाका छैथे, जेम्हरे ढुलकता तेम्हरे धार-धूर, मोइन फोड़ैत आगू बढ़ि जेता। तइसँ नीक जे कनी पाछूएसँ सह दिऐन। सह देलिऐन– "आ-हा-हा..; ओ-हो-हो..!"

'आ-हा-हा, ओ-हो-हो' सुनि जेना झिंगुरकाकाकेँ सुननिहार संगी भेट गेल होइन तहिना मन कलशलैन। मुदा एक चिड़की मेघ उठि जहिना रौदकेँ रोकि अन्हरा दइए तहिना जेना मनमे भेलैन। भेलैन ई जे सुननिहार जँ बिच्चेमे उठि कऽ चलि जाए तखन तँ सींग सुनने रहत तँ नाँगैर छुटि जेतै, नइ जँ नाँगैर सुनने रहत तँ सींग छुटि जेतइ। मुदा लगले मनमे जेना किछु फुरि गेलैन तहिना जोरसँ पत्नीकेँ कहलखिन–

"बाँस भरि सुर्ज ऊपर आबि गेल, मुदा अखन तक मुँहमे पानियोँ नइ लेलौं हेन। घरक लोक रही तखैन ने..?"

खग जानए खगक भाषा, फुलटुस्सी काकीकेँ अनसोहाँत नइ लगलैन। ओना, चाह बना चुकल छेली, मुदा हमरा देखिते ठमैक गेली। ठमैक ई गेली जे जँ दुनू गोरेले चाह नेने जाइ आ ओ कहैथ जे अहाँक चाह नइ पीब, तखन तँ दरबज्जाक बेइज्जती हएत। आ जँ नइ लऽ कऽ जाएब तखन जँ ओ अपनाकेँ अपमान बुझैथ..?

..अही द्वन्द्वमे फुलटुस्सी काकी आगू बढ़ली।

चाहक चुस्की लैत झिंगुरकाका पुछलैन–

“केमहर-केमहर चललह, गौड़ीसुमन?”

कहलयैन–

“दूध-ले आएल छी, कनी देरी देखलिऐ। अहूँसँ बहूदिन भेँट भेना भऽ गेल छल। तँए... ।”

झिंगुरकाका–

“की करबह दूध?”

“चारिम दिन चौरचन छिऐ किने, तहीले दही पौड़ल जाएत।”

‘पाबैन आ दही’ सुनि झिंगुरकाका ठमैक गेला। एक दिस पाबैन दोसर दिस जुआन भावदक दही! अपन दोख हटबैत बजला–

“बौआ, जीवन भाय बेर-बेर कहै छला चैतक चूरा, भादवक दही, ऐ दुनूसँ बँचले रही।”

❑

शब्द संख्या: 2095, तिथि: 31 जनवरी 2015

अपन मन अपन धन

भोरहरबेमे सुकल भायकेँ नीन टुटिते मनमे उठलैन, जहियासँ ठेकान अछि तहियासँ जेतबेटा छेलौं तेतबेटा अखनो छी, तैबीच केते साल, केते मास आ केते दिन ससरैत ससैर गेल तेकर ठेकानो कहाँ अछि। ठेकानो केना रहत, जहिना अपने छी तहिना दिनो-राति तँ अछिए। ओहो कहाँ महिना-सालक संग अछि। मुदा ओ ठेकान औत केना? मिडिल स्कूलमे मास्सैब डायरी लिखनाइ सिखौलैन, हाइ स्कूल जाइत-जाइत छुटि गेल, तहियासँ डायरियो ने लिखै छी जे तेकरो देखि कऽ ठेकनाएब...।

ओना, नीके भेल जे डायरी लिखब छुटि गेल। आब लोककेँ ओते पलखैत छै जे समय निकालि डायरी लिखत। तहूमे ओकर आब उपयोगिते की रहल? नोकरीक वेतन आकि दिनक भत्ताक खर्च लिखियो सकै छी, मुदा उलफी आमदनियोँ आ काजो लिखब नीक थोड़े हएत। जखन लिखबे ने नीक हएत तँ ओहन शीलापटकेँ राखबे केते नीक हएत?

मुदा लगले सुकल भाइक मन घुरि गेलैन। घुरि ई गेलैन- भाइ! सबहक ई दुनियाँ छी, सबहक दिन राति छी, तैसंग कि लोको-वेद नइ छी। मुदा ओ तँ तखने ने हएत जखन लोक-वेदकेँ खोद-बेद करैत रहब। ओना, खोदो-बेद असान थोड़े अछि। खोदो जहिना पहाड़सँ समुद्र धरि अछि तहिना ने वेदो अछि। पहाड़क पाथर खुनी आकि गावीस माटि खुनी, घी जकाँ पीघलैत पाथर खुनी आकि झहरैत झरना- बहैत धार खुनी, चाहे ओइसँ बनल समतल भूमि- गंगा-ब्रह्मपुत्रक मैदान- खुनी

आकि सभ धारक संगोरल गंगासागरक घाट खुनी, बंगालक खाड़ी खुनी आकि प्रशान्त महासमुद्र खुनी। केते खुनब..! केते खोदब..! ई खुनब आकि खोदब असान थोड़े अछि? आ तइसँ की कम वेदोक थोड़े अछि? एक्के चिकसकेँ दूध-पीठिया बनाबी आकि दलि-पीठिया, चाहे आगिमे पका कऽ लिट्टी बनाबी आकि तेल-घीमे पका पुड़ी-कचौड़ी बनाबी, चाहे रोइटपक्कामे पका रोटी-सोहारी बनाबी- जेकर एकटाकेँ पपरे ने हएत तँ दोसरमे गुद्दे गाइब भऽ पपरे भऽ जाएत। ई तँ भेल तेल-घीमे मुदा तँए कि पानिमे नइ होइए सेहो बात तँ नहियेँ अछि। जहिना दूध-पिण्ड होइए तहिना पानि-पिण्डसँ लऽ कऽ भक्खो, बगिया धरि होइते अछि...।

..बगियो की वगिया छी, रंग-रंगक बगिया अछि, जेते लोक तेते बगिया ने अछि। कियो बगूरक गाछ रोपि बगुरवगिया बनबैए तँ कियो फूलक गाछ रोपि फूलवगिया लगबैए तँ कियो फलवगिया लगबैए। मुदा तँए कि ईहो सोझ-साझ अछि। जँ तीनियेँटा रहैत माने बगूर, फूल, फल-तैयो नीक रहैत। सेहो ने अछि, घोदा-घोदे तीनू अछि। जहिना बगूरमे काँट तहिना तहूसँ मोटगर काँट बेलमे आ टाभ नेबोमे अछि। फूल-पात जहिना बगूरमे तहिना पातो आ फूलो सैनीमे अछि, भलेँ बगूरक लस्सा आकि टुस्सा कहै जे तोरासँ नीक छी, मुदा काँट तँ नमहर ऐछे! तइसँ नीक ने सैनी, जेकर काँट छोट छइ। तहिना ने फूलोक अछि जे एकटा धरतीपर फुलाइए तँ दोसर अकासोमे फुलाइते अछि आ तहिना ने फलोक अछि जे एकटा खेने पेट भरैए तँ दोसर पेनौं तँ मन खुशियाइते अछि..! घुमैत-घुमैत घुमन्तूकेँ आकि चलैत-चलैत चलनिहारकेँ जहिना चालि चलिया घुरिया जाइ छै तहिना सुकल भायकेँ सेहो भेलैन। हाथ-पएर बैसल रहितो मन चलए लगलैन। किनौं ठाढ़े ने होइन, मुदा घीचि-तीरि कऽ थीर केलैन। थीर होइते मनमे वेद उपैक गेलैन। उपैकते भेलैन- वेद तँ वेद छी, अक्षर ब्रह्म। मुदा वेदोमे भेद तँ अछिए। जँ से नै अछि, तँ एते रंगक वेद आ एते वेदवेत्ता केना भेला, कि छैथ?

..भेदो उचिते ने, जेहेन देश तेहेन भेष। जेहेन उपारजन तेहेन भोजन, मुदा उपारजनो तँ प्रकृते अनुकूल, तँए जेहेन भोजन तेहेन जिनगी...।

मुदा जखन देश-देशक माटि-पानि, उपजावारी रंग-बिरंगक अछि तखन तँ जिनगियो ने सभ रंगक हएत चाहे लाल हुअए कि कारी! आ जखन जिनगी सभ रंगक हएत तँ जीबैक विधो-बेवहार ने सभ रंगक हएत। जखन बीध-बेवहार फर-फराक हएत तखन तँ वेदोमे भेद हेबे करत किने...।

..पड़ले-पड़ल सुकल भाइक मन घोर-मट्ठा भऽ गेलैन। मनमे उठलैन जे जे बात बुझए चाहै छी से तर पड़ि गेल आ आने-आने ऊपर भऽ गेल! तखन? तखन तँ यएह ने नीक हएत जे जइ चीजक खेती करब तइमे तइ चीजकैं छोड़ि बाँकी- ओ चाहे उपयोगीए वस्तु किए ने हुअए- सभटा घासे भेल किने। बिना ओकरा हटौने जजात अपन अनुकूल नइ ने हएत। ओ तँ तखने अनुकूल भऽ सकैए जखन दोसर ओकर माटिक शक्ति नइ लइ...।

..मने-मन भेल- डायरीसँ ठेकान नै पेब सकै छी। एक तँ ओहुना ओ अधखरूआ होइए, दोसर अपने लिखनाइए छोड़ि देलौं। तखन? हँ! दोसर ठेकान आरो भऽ सकैए। ओ अछि छठिहारीक दूध। मुदा ओहो तँ डुमले पोखैरक पानि भेल! छह दिनक बच्चाकैं की ठेकान रहतै जे छठिक दूध केहेन होइ छै, भलैं छठम दिन किए ने ओही दूधपर ठाढ़ भेल रहल हुअए। ओहो बेठेकाने अछि। तखन? हँ, तखन तेसरो अछि- पेटक मल आ जन्मक मल। मुदा ओ तँ प्राण छुटैबेर अपन परिचए दइए...।

ओह! ओहूसँ भाँज नै लगत, ओ तँ भविसक भेल। तखन? तखन तँ यएह ने हएत जे जहियासँ अप्पन ठेकान अछि तहीसँ ठेकना ली। मुदा ओहो तँ बेठेकाने अछि। सभ दिन नवके-नवके भेंट होइत गेल, मुदा एते

तँ ऐछे जे जहिया स्कूलमे पिताजी नाओं लिखौलैन तहिया जे गुरुजी उमेरक उमेद करैत पितेक सोझहामे कहलैन- 'जेहेन अपन मन तेहेन अपन धन।'

बच्चा रही मन खाली रहए असथिरसँ मनमे पइस गेल। मन बेसी भरलो ने रहए जे उमटाम होइत। खाली रहए घोरि-घोरि पीबए लगलौं। अखनो मोन अछि। मुदा मोनेटा अछि! मोनेटा किए ने रहत? जहिना दिन-राति लोक अष्टयाम-नवाहमे मंत्र जप तँ करैत अछि, मुदा भीतरक रस-रहस्यसँ तँ हटल रहिते अछि, तहिना अपनो हटल रहलौं। एकर माने ई नइ ने भेल जे सटल नै रहलौं। हँ! मनसँ सटल रहलौं कर्मसँ हटल रहलौं, तेतबे ने भेल? आ तेतबे किए भेल, जनकपुरक जनक बाबाक संकल्पित धनुष उठबैक कुबत नै भेल, सएह ने। अयोध्यासँ सजल आएल बरियाती जनकपुरमे नै हेराएल से कि नै बुझल अछि। बुझले अछि। तँए कि दौजी बरियाती रहैथ सेहो ने। मुड़हन रहैथ, जे जनकपुर आबि ने धोखा खेलैन? जँ नइ खेने रहितैथ तँ डोमक घरकेँ किए जनकक सीता बिआहक बरियातीक बास-स्थल बुझितैथ? ओ की कोनो अयोध्यासँ लऽ कऽ आएल रहैथ आकि जनकपुरेक सज-सजिया, हेल-मेल आ विधि-बेवहार देखि बुझलैन। जँ बुझल रहितैन तँ...।

जखन कि लोहाक हथियार गज-फीट-इंचक हिसाबसँ पहुँच सकैए आ देवगणक धुपकाठीक सोझ धुआँ समान्य परिवार आ विशेष परिवारक दूरी नै बुझा सकलैन! एके रंग हएत तेतबो ठेकान नै रहलैन! मनुक्ख तँ मनुखे छी। जेतए मिथिलाक अर्थात् जनकपुरक सुग्गो-मेना शास्त्रार्थ करैए, कोइली बाजा बजबैए आ हरिणक संग मजूरो डान्स करैए..! सभ जनकेँ अपन-अपन जिनगी छैन, ओ पूर केहेन बाटे हुअए? उपारजनोकेँ कमाइए बुझल जाइए, मुदा उपारजन आ कमाइ दू भेल। उपारजन भेल नव वस्तुक सृजन आ कमाइ जेकरा बुझै छिऐ ओ कोनो बाटे किए ने आबए, मुदा दुनूमे अन्तर तँ ई ऐछे जे एक पैदाइशी भेल

दोसर फेड़-फाड़कें घुमा-फिरा एक बढ़ब दोसर घटब भेल...। जाबे तक जन-जनकें उपारजनक दिशामे नै बढ़ौल जाएत ताबे तक पुरक निरमाण कठिन तँ नै मुदा असम्भव तँ रहबे करत...।

सुकल भाइक मन आगूसँ पाछू घुमलैन। घुमिते अपनापर पड़लैन। अपनापर पड़िते मन तड़ैप कऽ अपन पढ़ाइ दिस बढ़लैन।

पचपन बर्खक सुकल भाइक नजैरपर एक दिस औझुका आड़ि माने पचपन बर्खक जिनगी पड़लैन आ दोसर आड़ि जइ दिन स्कूलमे नाओं लिखौलैन तइ दिनक गुरुजीक ओ वाक्यवाण अखनो हृदयमे गंगाजल जकाँ हेल रहल छैन– 'जेहेन अपन मन तेहेन अपन धन।'

..मुदा मनो तँ मन छी। बाल मन, सियान मन, चेतन मन, अचेतन मन इत्यादि-इत्यादि हजारो रंगक मन अछि। जहिना रंग तँ रंग भेल, मुदा वेदरंग आकि कुरंग की भेल? भाय! ओहो रंग भेल, नै भेल एहेन प्रश्न नै अछि। हँ, एते भेल जे जइ रंगकें रंग बुझै छिऐ से नै भेल, कुरंग भेल, चाहे वेदरंग भेल, मुदा भेल तँ ओहो रंगे। तखन? तखन यएह जे अनेरे दुनियाँमे केतए वौआएब तइसँ नीक जे अपन आँखि अपना देहमे साटि झरिया कोयला मजूरक नाच किए ने नाची।

जहिना सहस्रकें खँतिया दहाइ, इकाइमे आनल जाइए तहिना अपनोकें खँतिया ली। अखन किसान छी, जे स्कूल-कौलेज छुटला पछाइत भेटल। एक भेल किसानी जिनगी, दोसर भेल विद्यार्थी जीवन। तइसँ पहिने बाल-बोध छेलौं। प्लास्टिकक गेनो गुड़केलौं आ राइफलो छोड़लौं आ बैटो घुमेलौं। ओकरा छोड़ू। भगवान राम चौदह बर्ख बोनमे वौएला, अपनो सभ ओते मानि लिअ...।

..ओना, आइक बच्चा चौदह बर्खमे हाइ स्कूल टपि जाइ छैथ, मुदा सुकल भायकें से नै भेलैन। हाइए-स्कूलमे रहैथ। मुदा चौदह बर्ख जँ

छोड़ि देब तखन तँ इसथिते बिगैड़ जाएत! बिगैड़ ई जाएत जे केते बर्खक अवस्थामे रामकेँ बोनबास भेलैन आ केते बर्खक अवस्थामे लंकासँ घुमि कऽ एला? मुदा ओ रामायणिक बात भेल, एतए अपन विचार करैक अछि। चौदह बर्ख चाहे बारह बर्ख जँ निच्चासँ छोड़ि देब तखन तँ गुरुजीक ओ बात जे 'जेहेन अपन मन तेहेन अपन धन।' छुटि जाएत, जैपर जिनगीक दिशा ठाढ़ अछि। हम आगू मुहेँ जाएब आकि पाछू मुहेँ, ई तँ हमरे देखैक वस्तु छी। जइ दिन गुरुजी कहलैन ओही दिन ओ सूत्र-वाक्य संगीत बनि सुतिया गेल। आइयो ओहिना अछि। मुदा ओइ दिनसँ आइमे एते अन्तर तँ आबिये गेल जे- मनुक्खकेँ अपन मन-मनुक हिसाबे मुनिक दिशाक बोध होइ। यएह छी मिथिला दर्शन जइसँ अपन उपारजित जिनगी बनबैत, मृत्युक मुहसँ बँचबैत, हँसैत आनन्द लोक पहुँचबैत...।

..लगले सुकल भाइक मन डोलि कऽ पत्नी दिस पहुँच गेलैन। ओछाइन छोड़ि उठि कऽ बैसैत पत्नीकेँ सोर पाड़लखिन–

"केतए गेलौं, एमहर आउ?"

मुदा फुलटुस्सियोकेँ जेना ठोरेपर रहैन तहिना उत्तर देलखिन–

"भोरे-भोरे लोक भगवानक नाओं लइए आ अहाँ हमरा सोर पाड़ै छी।"

सुकल भायकेँ पत्नीक बोल कटलकैन नै आमक चोभ जकाँ बुझि पड़लैन! मुस्कियाइत बजला–

"हम की कोनो तुलसी बाबा छी जे सरजू नदीक तटपर तीन आँगुरक कोपिन पहीरि घर-परिवार छोड़ि मिथिला दर्शन करए जाए पड़त। सद्य: मिथिलामे छीहे। मुदा छोड़ू ई सब बात, एकटा हिसाब दुनू गोरे फरिछा लिअ।"

सुकल भाइक बात सुनि फुलटुस्सी भौजी सहैम गेली। सहैम ई गेली जे दुनू ओहेन खेलाड़ी छी, जैठाम नीक-अधला कटम-कटा होइत चलैए तैठाम हिसाबे की पछुआएल अछि जे फरिछाएब...।

बजली–

"जे अहाँ दिस हमर बढ़ल से हम छोड़लौं आ अहूँक जे आएल से ओही तरे छूटल। चाह बनबै छी, पीब कऽ भक्क खोलैत आगू दुनियाँ देखयौ।"

❑

शब्द संख्या: 1532, तिथि: 3 फरवरी 2015

टुटली मरैया

दिन लहैस गेल मुदा सुर्यास्त नै भेल छल। ओना, अपन आखिरी कगनीपर पहुँच गेल छला। रस्ता कातक अढ़ाइ-कठवा बाड़ीमे विचारदेव काका धनियाँक कमठौन करि उठि कऽ डाँड़ सोझ करैत रहैथ कि तखने दछिनसँ चारि गोरेकेँ रस्ता धेने अबैत देखलखिन। डाँड़ सोझ होइते अपने कोबीक किआरी दिस आगू बढ़ि गेला।

कतिका कोबी कटल खेत, जइमे गोर पच्चीसे फूल लागल। आड़िसँ निच्चाँ होइते, हँसैत-खेत देखि अपनो हँसी लगि गेलैन। नीक सुतार सुतरल। एक तँ नीक बीआ पइर लगने नीक फूलो भेल, तैपर भौउ सेहो पकड़ाएल। हराहरी साए रुपैये फूल करीब भेल। चारि साए गाछ साए रुपैये फूल! मनसम्फे उपजा बुझि पड़लैन। ओ चारू गोरे पहाड़ी भेष-भूषामे, बोलियो सएह। लाल-बून चेहरा, छरे-छाँट जवान।

विचारदेव काकाकेँ देखि सभ कियो ठमैक गेल। रूकि कऽ चारू गोरे विचार करए लगल जे एक तँ अपना सभ परदेशी भेलौं, देखल-सुनल इलाका नइ अछि, तँए अही गाममे राति-बीच अँटैक जाएब नीक हएत। एक तँ अनभुआर इलाका तैपर ऐगला गाम केते आगू हएत, तेकरो ठेकान थोड़े अछि। गुनधुन करैत रस्तापर चारू गोरेकेँ देखि विचारदेव कक्काक मनमे उठलैन जे आगू बढ़ि पुछिऐ जे किए रूकै गेलौं। मुदा लगले मनमे भेलैन जे भऽ सकैए पैछला संगी सबहक दुआरे अँटैक गेल हुअए। फेर जखन हिया कऽ देखलैन तँ बुझि पड़लैन जे अनठिया सभ छी। भेष-भूषा पहाड़ीक बुझि पड़ैए। आगू ससैर विचारदेव काका पुछलखिन–“अहाँ

सभ किए ऐठाम अँटकल छी?”

‘अँटकब’ सुनि चारू गोरे एकमत बनौलक जे सत्-सत् सभटा बात कहबैन। चारू गोरेक बीच जे मेट रहै, जेकरा बड़का बहादुर तीनू गोरे कहैत, बाजल–

“भाय साहैब, हम सभ वेपारी छी, सभ किछ लूटा गेल, आब चाहै छी जे कहुना जान बँचा घर पहुँच जाइ।”

विचारदेव काका–

“राति-बीच अहाँ सभ अँटकऽ चाहै छी?”

बड़का बहादुर–

“हँ।”

विचारदेव काका–“एक मुट्ठी धनिया पत्ता आ दूटा कोबी काटि लइ छी, संगे चलब। दरबज्जेपर सभ गप हेतइ।”

दुनू फूल कोबी गमछामे बान्हि मुट्ठीमे धनिया पात नेने आगू-आगू विचारदेव काका विदा भेला। ओना, विचारदेव कक्काक मनमे भेलैन जे किछु गप-सप्प करैत चली, मुदा लगले भेलैन जे बहरबैयाक गपमे गपिया जाएब तँ अपन अभ्यागतीक बेवस्थामे कमी आबि जाएत। तँए मने-मन गर अँटबए लगला जे चारि गोरेक भोजनसँ रहैक बेवस्था करैक अछि। ओना, अखन तेहेन जाड़ नहियेँ होइए मुदा तैयो तँ जाड़ेक मास छी।

पाँच दिन पहिने हरिहर क्षेत्रक मेला शुरू भेल। बिहारसँ बाहरो राज्यक वेपारी सभ पहुँच गेल छला। चारू गोरे ऊनी वस्त्रक वेपार ई ठिकिया कऽ शुरूहे दिनसँ केने जे कम-सँ-कम तीन खेप नइ तँ चारियो-पाँच खेप कमाइ हेबे करत। पचास-पचास किलो ऊनी वस्त्र- स्वीटर, चद्दर, गुलेबन इत्यादि- हरिहर क्षेत्रमे कीनि-कीनि वेपारक योजना बनौने छल। ओना, कातिक पूर्णिमा भऽ गेल तँए पाँच दिन अगहनक अन्हार बीति गेल मुदा संक्रान्ति पछुएने अखन कातिके छी। जहिना गंगा तहिना

गण्डको धार कोरा गेल। पेटे-पेट पानि। मुदा पचतिया बाढ़ि ऐने मेला-क्षेत्रक जमीन दलदल करै जइसँ केतौ-केतौ गढ़ा-गुढ़ीमे पानियोँ छेलैहे। जहिना रस्ता-पेराक मरम्मतमे करीब सइयो गोरे व्यस्त, तहिना सैंकड़ो वेपारी अपन-अपन दोकान सजबैमे व्यस्त। जहिना सइयो गाए-महींस, हाथी-घोड़ा, भेँड़-बकरी पहुँचल छल आ पहुँचियो रहल छल, तहिना आनो-आनो राज्यसँ सूती वस्त्र ऊनी-वस्त्रक संग अनेका-नेक वस्तुक दोकान सजियो गेल छल आ सजितो छल। पचास-पचास किलो ऊनी वस्त्र खरीद चारू गोरे गाँठ बना ट्रकपर लादि विदा भेल। मेलाक इलाका तँए छोट वेपारीक बजार मन्द लग-पासमे हेबे करत। तँए दस कोस हटिए कऽ नफगर कारबार चलि सकैए।

यएह सोचि चारू गोरे हरिहर क्षेत्रक मेलासँ समान आनि मुजफ्फरपुरमे उतैर गेल। दोसर दिन भोरे पीठपर लादि पएरे गाम दिस विदा भेल। मन्दी देखि आगू बढ़ैत गेल। गोसाँइ लुकझुइते एकटा गामक कातक एकटा गाछीक बँसबिटी देखि डेरा रखलक। सुखाएल कड़ची जारैनक कमी नहियेँ, पहिने नीक जकाँ खड़रलक। ओना, बाँसक निच्चाँमे चिक्कन रहिते छइ। खाइ-पीबैक ओरियान-बात करैत दोसर साँझ भऽ गेल। मुदा तइसँ पहिने दारू बना चारू गोरे पीब मस्तीमे आबि गेल छल। तही बीच गामक एकटा महिला बहरेली। बड़का बहादुर ठाढ़ भऽ कऽ नाचो करैत आ फकड़ो-फुकड़ी कहैत रहए। एक तँ अनभुआर आदमी तैपर फकड़ा-फुकड़ी! ओ औरत आबि अपना सासुकेँ कहलखिन–

“बँसबिट्टीमे चारिटा अनठिया अछि, ओम्हरे गेल छेलौं, गारि पढ़लक।”

सुनिते सासु विढ़नी बनि गेली। पचपन-साठि बर्खक सासुक मनमे एबे ने केलैन जे परदेशी सभ छी राति-बीच रहत, से जँ पुतोहुकेँ बात बुझि कहि दितऽथिन तँ विवाद एतइ समाप्त भऽ जाइत। मुदा से भेल नइ, अखनो बहुत गाम ऐछे जे पुरने सीख-लीख धेने अछि। मामूली पएरो-

पैडिल साइकिलक जँ दोसर बच्चाक देहमे भीरल कि नइ भीरल मुदा ओ बच्चा माल जकाँ डेँगा देल जाइए। मारिक संग हाड़-पाँजर तोड़ि देल जाइए। आखिर आन बच्चाकेँ बच्चा किए ने लोक बुझऽ चाहैए? आब तँ सहजे नव उमेरक नव फसल लहलहा रहल अछि। चौक-चौराहा रंगबाजक अड्डा बनि राही-बटोहीकेँ लूटल जाइए। वेचारी सासु माए नहि महरानी बनि अपन पुरुखकेँ कानमे नइ दऽ सौंसे गाम नाचि एली। एक्के बात सबहक कानमे भरि एली जे- 'अनठिया सभ हमरा पुतोहुकेँ वेइज्जत केलक हेन!' खुदरा-खुदरी सुन-गुनी धधकए लगल। मुदा एते बिसवास तँ गौंआँ सभकेँ रहबे करै जे चारू गोरेकेँ भारी समान छै, राति-बीच रहबे करत, धड़फड़ीक बाते ने अछि तँए पुरुख-पात लेल धनिसन जे गाममे किछु भेबे ने कएल। मुदा गामक गुन-गुनी गामक गुणा-भागक हिसाब बैसबए लगल। भलेँ चिड़ै एकेटा किए ने होइ मुदा जेहेन शिकारी तेहेन रंग तँ देखबे करैत। जहिना हिरणी सीताकेँ सोनाक बुझि पड़ैन आ वएह लक्ष्मणक लेल जंगली पशु रहए! कियो गोटी बैसबैत जे जँ सौंसे गामक लोक संगोर करि कऽ जाएब तँ फरिक्केसँ ओ सभ देखि राता-राती अन्हारक गरे पड़ाइयो सकैए। जइसँ बड़ पइर लगत तँ चारिटा मोटा पइर लगत। तहूमे नमहर अछि। ससतौआ वौस हएत। कोनो कि चरस-अफीम छी जे जेबीक रूमालेमे करोड़क छिपल रहत। मुदा फेर सोचए जे एक तँ गामक बहुत लोकक कानमे चलि गेल अछि, सभ ओहीपर कोटाक चीनी-मटिया तेल जकाँ टक लगेनहि हएत। तैठाम सोलहन्नी माल हड़पब बदनाम करत। केकर गाए, के रोमए जाए...।

...ई तँ विचारणीय अछिए। मुदा एहेन विरहाएल हवा कहियो काल केकरो नसीव होइ छै, तहूमे राजनीतिमे। एक-मुहरी गाम बनल अछि, तँए नेतृत्वक अवसरकेँ हाथसँ गमाएब घटिया राजनीति भेल...।

..एकटा द्रोपदी कुरू वंशकेँ नाश केलक, रावणक वंशकेँ सीता। तहिना ने साउसो छैथ। एक तँ बाहरी वेपारी, तहूमे आन इलाकामे अपन

कारोबार करैत, तैसंग कमाइक लूरि रहबे करै। गामक चाल-चूल देखि एका-एकी केते गोरे आबि-आबि देखि चुकल छल। बड़का बहादुर बुझि गेल जे समानक चोरि हएत। एकटा चोरि होइ छै जे चुपेचाप जेबीसँ किछु निकालब आ दोसर होइ छै, एक गोरेपर एक ठाढ़ भऽ जाइ छै आ दोसर-तेसर, जेहेन जे समान रहल, तइ हिसाबे उठा कऽ विदा होइए। मुदा एतबे टा नइ ने होइए चीजक संग चीजबलाकेँ सेहो गाइब करए चाहैए! तखन तँ वस्तुक संग जानोक भेल..!

..बड़का बहादुरक मन चहैक गेलइ। अखन तक चुपे-चाप विचारै छल। अपन डुमैत नेतृत्वक संग अपन टुटैत जिनगी देखैत तँए अपन बुधिकेँ कोसैत...। मुदा उपाय? गरमाइत गामकेँ देखि बड़का बहादुर तीनू छोटका बहादुरकेँ कहलक–

"कारोबार तँ लूटेबे करतह जे जानो बँचब कठिन अछि।"

एक बोलिया एक चलिया पहाड़ी बड़का बहादुरक विचार मानि चारू गोरे वस्तु छोड़ि दोसर बँसबिटीमे जा कऽ बैस रहल। पाँच अन्हार रहने इजोरिया धाही देलक। जेकर शंका बहादुरकेँ छल से भइये गेल, मुदा जानो आ रस्ता खर्चक पैयो सभ बँचा लेने। अनका माथपर अपन सम्पैत देखि चारू बहादुर छातीमे मुक्का मारि राता-राती ओतएसँ विदा भेल...।

अपन घर लग पहुँचते विचारदेव काका बजला–

"यएह भेल अपन टुटली मरैया।"

कहि आँगन तरकारियो आ अभ्यागतक जानकारियो दइले बढ़ि गेला। मुदा बड़का बहादुरक मनमे खुटखुटी उठि गेल। खुटखुटी ई जे अपना खेतक तीमन-तरकारी, अपन एहेन सुन्नर रहैक घर, एहेन सुन्नर देह-दशा छैन, तखन किए टुटली मरैया कहलैन..? तीन हाथक लकड़ीक घरमे रहि ओकरे नीक बुझै छिऐ आ एहेनकेँ किए टुटली मरैया कहलैन।

जहिना पतियानी लगल लोक राशनक दोकानपर रहैए आ ऐगला पहिने उचैक लइए तहिना बड़का बहादुरक मनक बात उचैक खसल–

“भाय साहैब, टुटली मरैया की कहलिऐ से नीक जाहिन नइ बुझि पाबि रहल छी।”

बड़का बहादुरक बात सुनि विचारदेव काका पघिलऽ लगला। मोन पड़ि गेलैन अपन जिनगी। तैबीच पत्नी- फुलकुमरि काकी- चाह नेने दरबज्जापर पहुँचली। अपन आगत-भागत देखि जहिना चारू बहादुर मने-मन चपचाइत तहिना दुनू परानी विचारदेवो काका अपन दरबज्जाक नेहमान-मेहमानीसँ गदगदाइत। मुदा जे चुहचुही बहरबैया पाहुनक आगमनसँ हेबा चाही ओ चुहचुही वातावरणमे नै छल। कारण, चुहचुही कि दिन-रातिमे अछि ओ तँ अछि ओकरा देखैक आँखिमे। जहिना एक दिस चारू बहादुर अपन लूटाएल सम्पैतक चोटसँ चोटाएल, दोसर दिस विचारदेव काका बहादुरक मुहेँ ‘टुटली मरैया’ दोहराएबमे ओझराएल। कोन रूपमे ओ सभ आएल छैथ, तैठाम जँ अपने सोखर पसारि देब, ईहो तँ नीक नहियेँ हएत। मुदा कहबो केना करबैन जे ने खाइ-पीबैमे कोताही होइए आ ने घर-दुआरक दिक्कत अछि, मुदा ऐगला बाल-बच्चा तँ नइ अछि। ओह! किए अपन बेथा आनकेँ कहब। जहिया जे भेल भेल। मुदा अपना तँ काल्हि दिनक झखैन करके चाही। मुदा जँ बैसले-बैसल पाशा बदलए चाहब तँ भऽ सकैए जे हुनका सभकेँ कहीं ई ने भऽ जान्हि जे हमरा गपक मोजरे ने देलैन। पहाड़ी छी! एक बोलिया होइते अछि, जखने एकटा मुँह खोलत तखने भोरुका नढ़िया जकाँ सभकेँ जगबैत कहबे करत- ‘मुँहक पान मलिन भेल..!’ तखन कोन उपए? हँ एकटा उपाय अछि, नीक कि अधला कोनो धरानी दोसरकेँ विचारमे बान्हब। जइसँ बिसवास जगै छै आ ओही बिसवासक संग लोक आगू बढ़ैए। मने-मन विचारदेव काका सोचलैन जे उठि कऽ केम्हरो चलि जाइ छी ताबे चाहक संग अपन दोसरो अमल खा-पीब लइ जेता आ हड़बड़ाएल

आबि पुछि देबैन जे अखन तक परिचैयो-पात ने भेल। जखन कि ई ऐठामक बेवहार छी जे पहिने कुशल-छेम होइत आबि रहल अछि...।

..मनमे ऐबते विचारदेव काका आँगन पहुँच पत्नीकेँ कहलखिन–

"अहूँ दरबज्जेपर चलू, लछनसँ बुझि पड़ैए, केहेन पहाड़ सन दिन पहाड़ीक कटैए, ओ सुनैक अवसर भेटत। अपना हाथक राति छी कनी अबेर कि सबेर भानस हेबे करत।"

पतिक बात सुनि फुलकुमरि काकी टुसि देलखिन–

"अपना सबहक खान-पान की अछि ओकरा सबहक की छै ओ बिना बुझने तँ भरि पेट खुआइयो नहियेँ सकै छी।"

पत्नीक बात सुनि विचारदेव काका कलियाइत बजला–

"तहूमे जँ अपन भानस करैक भार अपने लऽ लिअए तखन किए ने अपनो दुनू गोरे ओकरा सबहक बनाएबो देखब आ कहियो देबै जे अपनो दुनू परानीक अभ्यागती अहीं सब दिस।"

दुनू परानी विचारदेव काका चारू गोरेक बीच दरबज्जापर पहुँचला। ओना, फुलकुमरि काकीकेँ मन होइन जे पहिने 'की खाएब' से पुछि लिऐन। मुदा विचारदेव काका आँखि दबैत इशारामे कहलखिन–

"अखन ओहन परिचए नइ भेल अछि जे खान-पानक हिसाबसँ एक्के क्षेत्रक आकि दोसर क्षेत्रक छैथ तँए अखन थम्हू।"

मुदा से भेल नहि, बैसते विचारदेव काका पुछलखिन–

"चिन्हा-परिचए पहिने भऽ जाए तखन आरो गप हेतइ।"

अपन परिचए दैत बड़का बहादुर अपन सविस्तर काज-बातक कथा एक्के साँसमे बाजि गेला। बड़का बहादुरक बात सुनि दुनू परानी विचारदेव काका अपन जिनगीक गंगामे डुमकी मारए लगला। केना माए-बापक श्राद्धक कर्जसँ गाम छोड़लौं...। बीस बर्ख दिल्लीमे बितेलौं...।

आ जखन ऐगलो पीढ़ी पैछलो पीढ़ीकेँ हेराइत देखलौं तखन ऐ दुनियाँमे अपना छोड़ि रहल की...। पछाइत गाम आबि बीस बर्खक कमाइसँ सात कट्ठा खेत कीनि अपन टुटली मरैयाक बास कऽ रहल छी।

बड़का बहादुरक घटना आकि अपन जिनगीक बेथा-कथा विचारदेव कक्काक मनमे धक्का तँ मारलकैन मुदा जड़ि-उखड़न नै भेलैन। विचारभूमि बँचल रहलैन।

अनायास विचादेव कक्काक मनमे उठलैन, टटके कोबीक आमदनी भेल अछि, किए ने गर लगा पुन: ऐ यात्री सभकेँ कारोबार दिस घुमाबी। ओना, चारू गोरेमे बीस-पच्चीस हजारक क्षति भेल, ओते जँ नहियोँ हएत तैयो जीबैक बाट पकैड़ लेत। गामो-घरमे देखै छिऐ हजार-डेढ़ हजारमे सेकेण्ड हेण्ड साइकिल कीनि लोक एक क्वीन्टल तरकारीक कारोबार करि डेढ़-दू साए रुपैआ एक उखराहामे कमा लइए।

बहादुरक बात सुनि विचारदेव काका कहलखिन–

“देखिते छी जे अपनो टुटलीए मरैया अछि, ई तँ गुण अछि जे साग-तरकारी आ फल-फलहरी उपजौनै छी जे अन्नक जोगेटा सँ काज चलि जाइए।”

विचारदेव कक्काक विचारमे जेना बड़का बहादुरकेँ भेटलै, केना डेढ़ साए रुपैआ लऽ कऽ कारोबार शुरू केने रही तहिना जँ डुमैतकेँ तिनकोक सहारा भेट जाए तँ जीबैक आशा तँ भेटिये जाइ छइ। बहादुर सबहक मनमे बिसवास पनैप गेल जे नइ मामा तँ कनहो मामा हेबे करत।

विचारदेव काका विचारि लेलैन जे हजार-हजार रुपैआ पूजी आ दू-दू साए रुपैआ बटखर्चा दऽ देने काज चलि सकैए। ई नइ कहबै जे अहाँकेँ अहिना दऽ देलौं। कहबै जे भाय, जहिया अहाँ सभकेँ घुमबैक मन हएत तहिया घुमा दइ जाएब। ओना, छी पहाड़ी एकबोलिया! एक चलिया! गलत काजसँ परहेज करैबला! तँए नइ घुमबैक बिसवास नइ

कएल जा सकैए।

चारिम बहादुर फुलकुमरि काकीक संग भनसा-घर पहुँच सभ चीज देखि बाजल–

“दादी, अहाँ बैसू, हम भानसो करब आ गीतो गएब।”

❑

शब्द संख्या: 1951, तिथि: 7 फरवरी 2015

हकार

ओछाइनपर सँ उठल नइ रही मुदा नीन टुटि गेल रहए। जवाबदेह लोक जहिना नीन टुटिते सिरमा तरसँ डायरी निकालि दिनक कार्यक्रमपर नजैर चढ़ा चैनसँ ओछाइन छोड़ैत, तहिना अपन काज दिस नजैर खिड़ेलौं।

घरसँ जखने नजैर निकलल कि जगरनाथ कक्काक घरक न्योंपर चलि गेल। रहैक घर बनेता तेकरे नीब लेता, सएह हकार काल्हिये बेरूपहर देलैन। सूहकारैत कहि देने रहिऐन जे समयसँ दस-पाँच मिनट पहिने जरूर आएब। जे भरोस हुनका छैन्हे। मुदा लगले भेल जे काल्हि कहाँ आइए ने बेरूपहर हकार देने छला। जाबे ओछाइनपर सँ उठि नव सुर्जक दर्शन नइ भेल ताबे तक तँ आइए ने भेल। आइ भेल कि काल्हि भेल, तइमे अनेरे अपनाकेँ ओझड़बए चाहै छी, कियो बारह बजे रातिक पछाइतेसँ नव दिन बुझए लगैए तँ कियो जखने नीन टुटल तखनेसँ तँ अपना सन-सन लोक अठबजिया ओछाइन छोड़ि बुझै छी। किए ने बूझब, स्वतंत्र देशमे जँ एतबो स्वतंत्रता नइ भेल तँ स्वतंत्रते की भेल?

मुदा पत्नियों तँ पत्नीए छैथ, ओ तँ सदैत संग पुरिते छैथ। एते तँ विचार मनमे छैन्हे जे सदिकाल पतिक अनुकूल रहबो करिऐन आ बनेनौं रहिऐन। जँ अपन विचारे चलितैथ तँ अपन समयसँ चाह बना हमरो नीन तोड़ि चाह पीऐबतैथ आ अपनो पीबितैथ। मुदा से नइ, बुझल छैन्हे जे नीन टुटलापर दस मिनट देह-हाथ सोझ करैमे लगबे करै छैन, तैबीच चाह बना लइ छी आ प्रेमसँ आगूमे बैस दिनक पहिल चहरा अहरामे दइ

छिऐन। मुदा भोरेसँ गजपट हएब शुरू भेल। नीन तँ टुटि गेल रहए मुदा देह-हाथ सोझ करै दुआरे नै उठलौं, नइ उठैक कारण मनमे हकार उठि गेल। ओही विचारमे लगि गेलौं। मुदा पत्नी बुझली जे अखन सुतले छैथ। जेकर फल भेल जे चाह पीला पछाइत जेना मन हल्लुक होइए से नइ भेल। मनमे जगरनाथ कक्काक हकार हुकड़ए लगल, मुदा मन फरीच नइ रहने हकारक गोड़ा पकड़बे ने करए। घरक न्यौँ लेता। घरे परिवार बनैए आ परिवारे घर। मुदा बीचक समय-संयोग नीक रहल। नीक ई रहल जे असमसानक लहास देखि जहिना गीध सभ हरकट्टा भौर लइत आँखियेपर चोट करैत तहिना पत्नी आँखि लग आबि देखली जे नीन टुटलैन की नहि। मुदा लाभ उनटा भेल, जखने लग अबए लगली कि झपटैत कहलयैन–

“नअ बजेक हकार जगरनाथ काका देने छैथ, झब दे चाह बनाउ, अङ्स-मङ्स करिते समय भऽ जाएत। दसो-पाँच मिनट पहिने नइ जाएब, से केहेन हएत?”

मुदा संयोगे औझुका खराप अछि। एक हवाइ चप्पल कि जूता हरेने जहिना लोक दोसरकेँ जुमा कऽ कातमे फेक दइए तहिना पत्नी झपटि लेलैन–

“अहाँक मन खीरपुड़िया हकारपर टँगल अछि आ हमर?”

मुदा एते वेचारी रच्छ रखली जे कौआ-कुकुर जकाँ लोल कि मुहसँ पकैड़ घीच्चम-तीर नै केलैन, अनुशासित पत्नी जकाँ चाह बनबए गेली। मुदा अपन मन पुन: दोसर घुरछीमे ओझरा गेल। पत्नी कि बाजि गेली जे ‘खीरपुड़िया हकार..?’ काका सोझहे हकार देलैन, खीरपुड़िया केतएसँ चलि आएल। मन औनाइते रहए कि पत्नी हाथमे चाह नेने ठाढ़ भऽ गेली। पैछला सभ बात बिसैर गेलौं। चाह हाथमे पकड़बैत पत्नी बजली–

“औझुका दिन शुभ अछि।”

पत्नीक बात नीक नै लगल। नीको केना लगैत, अपने बेर-बेर

गजपटेमे पड़ै छी आ भऽ गेल शुभ! जहिना चाहसँ मुँह पकल छल तेहने पाकल बोल मुहसँ निकलल–

“शुभ-अशुभक असीरवाद अहीं मुँहमे अछि।”

वेचारी किछु बजली नहि। की मनमे उठलैन की नै से तँ ओ जानैथ मुदा दोसराक घरक हकार पुरब नान्हिटा बात नइ छी। गुरु-शिष्य जकाँ पत्नी आगूमे बैस गेली। रंग-रूप देखि जेना मनमे झड़क उठि गेल। झड़को केना ने उठैत, शुभ-अशुभ तँ काजक फल छी- जेहेन काज तेहेन फल, आकि मुँहक ठकुआ परसाद छी..?

..जेना-जेना पेटमे चाह निजाइत गेल तेना-तेना तामसो कम होइत गेल। जे बात अपने नइ बुझि पेलौं मुदा पारखी पत्नी परेख गेली। परेखते जेना ओ बमरोटिया हाथे टीक पकड़ैक कोशिश केलैन माने रंग-रंगक भभटपन पसारि...।

..मुदा परिस्थितिकेँ विपरीत कहियौ आकि सुरीत, घरक न्योँक हकार अछि, अखन तक घर-अँगनाक बात पत्नीए बुझैत एली अछि, अपने तँ किछु बुझै नइ छी। जहाँ धरि देखैक बात अछि से तँ खढ़-खुट्टा, भीत आ काँच पजेबाक देवाल छोड़ि आगू देखलौं नहि, तैठाम ईंटा-सीमेट, लोहाक बात अछि! की बूझब आ की बाजब। दस लोकमे मुहोँ बन्न राखब अपनाकेँ पाछू मुहेँ धकियाएब भेल। मुदा गलती तँ पछुआ पकैड़ नेने अछि। माने ई जहिना जगरनाथ काका हकार देलैन तहिना मानि लेलिऐन। अनेरे अपने चालिये ओझरीमे फँसि गेलौं। फेर मनमे भेल जे जे हूसि गेल से हूसि गेल मुदा ओकरा...। नै जाएब तँ कहबे करता जे फल्लाँ चारि साए बीस अछि। गपक कोनो ठौर-ठेकान नइ छै, बाजत किछु करत किछु। तहूमे जँ चाहो-ताहोक ओरियान केने होथि, तखन नइ गेने- हेए चाहपत्ती-चीनीक खर्च नइ हेतैन मुदा दूधक दाम तँ दुरि भइये जेतैन। बेटाक सुमारक लोक बिसैर जाइए, पाइक सुमारक थोड़े बिसरल

जाइ छइ। फेर मन अपनापर सँ जगरनाथ काकापर पहुँचल। मन तमतमाएल रहबे करए, धारक पानि जकाँ तमतमाइत आगू बढ़ि गेल। की सोचि जगरनाथ काका हकार देलैन! हम कहिया ईंटा-सिमटीक घर बनेलौं जे हुनका हकार देने छेलिऐन?

मुदा फेर मन घुसकल। घुसकल ई जे जखन जगरनाथ काका भीत-घरसँ ईंटा-सिमटीक घरमे प्रवेश करए जा रहल छैथ आ श्रद्धापूर्वक हकार देलैन तँ नहियों जाएबकेँ उचित नहियेँ कहल जा सकैए। मन ठमकल, मुदा बेसीकाल ठमकल रहल नहि। चारिटा बेटा जगरनाथ काकाकेँ छैन, पाँचम अपने भेला। परिवारक भीतरो तँ परिवार अछिए। एक भैयारीक परिवारमे बाल-बच्चाक आगमन रहैए जइसँ ओछाइन-बिछाइनसँ लऽ कऽ घर-ओसार धरि किछु-ने-किछु विकृत भइये जाइए, दोसर भैयारीकेँ दस बर्ख पूर्ब एहेन समस्या छेलैन आ नइ छैन तँए घर-ओसारक सेखी बरबैर केना रहत।

मुदा जेते मन आगू दिस ससरए तेते जाले-जाल, महजालमे फँसल जाइ। घड़ीपर नजैर पड़िते मन चौंक गेल। चौंकते निर्णय केलौं जे हकरिया जकाँ नइ समांग जकाँ जगरनाथ कक्काक संग बेवहार करब।

मुदा लगले भेल जे चामेक मुँह छी, कहीं गपक सहमे किछु बजा गेल जे जगरनाथ काका-ले अबघात होइन तखन तँ आरो गड़बड़ हएत। पत्नी दिस नजैर उठेलौं तँ बुझि पड़ल जे ओ टीक पकैड़ चानिपर चढ़ए चाहि रहली अछि। कि बिच्चेमे धक-दे मनमे उठल, 'की खीरपुड़िया हकार' बजल छेली। गर पबिते बजलौं–

"अहाँ बिच्चेमे तखन की टपैक गेल छेलौं- खीरपुड़िया हकार? काका तँ सोझहे मुहेँ हकार देलैन आ सोझहे मुहेँ सूहकारि लेलिऐन।"

मुदा पत्नियों कि पत्नी छैथ ओ लालबुझक्करि जकाँ बुझि गेली जे अहिना पुरुख-पात केतौ विदा होइकाल रोब झाड़िते छैथ जे जूता-चप्पल

गंदा अछि केना लोक लग एहेन पहीरि कऽ जाएब। मुदा मूल प्रश्न तँ अछि जे ईंटा-सिमटीक घरक माने भेल पचास बर्ख ऐगला जिनगीक रहैक ठौर, चारि भाँइक भैयारीक घर, केना बनौल जाए? जेना ओ बुझिते छेली कि की, बजली–

"भिनसुरका चाह पीब लेलौं से बड़बढ़ियाँ, झब-दे नहा कऽ ओइठाम चलि जाउ।"

पत्नीक सह पाबि अपन सह मारैत बजलौं–

"जखन घरसँ बहरा आनठाम जाएब तखन किछु अनजल नइ कऽ लेब से नीक हएत?"

पत्नीकेँ जेना बुझले रहैन कि की झपाटा मारलैन–

"शुभ मुहूर्तमे घरक न्योँ लेल जाएत। केना पैछला पुरुखा ऐगला-ले गाछी-कलम, पोखैर-इनार, इस्कूल-अस्पताल बना सेवाक दुआर खोलने रहला तहिना ने बुझए पड़त जे आगूओ अहिना खुजल रहइ।"

ओना, पत्नीक सभ बात नीक नाहित नइ बुझलौं, मुदा एते बुझैमे आबि गेल जे जहिना आइ घरक न्योँ हँसी-खुशीसँ जगरनाथ काका लेता तहिना सभ दिन परिवार हँसैत बास करैन।

समयसँ अदहा घन्टा पहिने- साढ़े दस बजे- जगरनाथ काका ऐठाम पहुँचलौं। पुरना दरबज्जापर असगरे जगरनाथ काका बैसल चौचंग रहैथ। देखिते जेना मनमे उत्तकण्ठ जगलैन। जेना हमरा एने हुनकर घर बनि कऽ ठाढ़ भऽ गेल होइन, बुझि पड़ल जे तहिना भेलैन। बुढ़ाएल देह रहितो जेना पानि चढ़ि गेल होइन तहिना चौकीपर सँ उठि दहिना डेन पकैड़ देखबैले विदा भेला। मुदा से भेलैन नहि। मलेटरी जकाँ परिवारक सभ अपन-अपन काजपर कनखड़ल। जेठकी पुतोहु- जे हमरा भावो हेती- बिच्चेमे दू गिलास चास नेने पहुँच बजली–

"पानियोँ पीथिन।"

भैंसूर-भावोक बीचक बात छी। ओना, वंशगत भावो सेहो होइ छैथ, आ समाजगत सेहो। ऐठाम समाजगत अछि। भैंसूर-भावोक बीच बाजब वर्जित अछि। भैयारी बीचक कोनो बात-विचार भैयारीक भेल। ओना, नीक काज शुभ होइत अछि तहूमे जगरनाथ काका तीन जोड़ ऊपर छैथ, तँए मने नइ हृदयमे सेहो खुशी छैन्हे। खुशियो केना ने रहतैन, अपन ओहन घर बनि रहल छैन, जे जिनगीमे दोहरा कऽ समस्या नइ हेतैन। तैसंग ईहो देखि रहल छैथ जे चारू बेटो, जे बीस बर्खसँ चालीस बर्खक अछि ओकरो सभकेँ भरिसक पार-घाट लागिये जेतइ। तैसंग जे छोट-छोट बच्चा अछि ओकरो पचास-साठि बर्खक सेवा भइये रहल छइ। अपने चुपे रही कि बिच्चेमे जगरनाथ काका कहलखिन–

“पानियेँ किए, पुड़ी-परसाद सेहो खेबे करता। जाउ, अहाँ अपन काज देखू। दुनू-बापूत चाहो पीब आ बतियेबो करब।”

जगरनाथ कक्काक मनमे तेते खुशी पइस गेल रहैन जे चाहो अदहा मुँहमे जानि अदहा ठोरपर होइत नीचे खसि पड़ैन। चाहक इच्छा ओते नइ जेते किछु बजैक मन रहैन। पुतोहुकेँ गवाही रखि बजला जे दुनू-बापूत बतियाइ छी। हमरो हरल ने फुरल पुछलयैन–

“काका, अपनेक तँ आँखि-मुना मानैबला लोक छी, अपने हकार बजलिऐ, हम सूहकारि लेलौं।”

हमर बात जेना जगरनाथ काका नीक जकाँ नइ बुझलैन। अधरखरूआ बुझि पड़लैन आकि की। बाल-बोध बच्चा जकाँ मुँह दिस मुँह तकए लगला। जेना हुनकर आँखि आँखिमे पइस गेल। पैसते बुझि पड़ल जे अखन दुइए गोरे छी। काका गुरुए भेला, हम चेले भेलिऐन। जँ कियो तेसर रहैत तँ लाजो होइत। मुदा जँ गुरु लग अपन बात लाजे छिपाएब आकि कोनो रोग डॉक्टर लग आ झर-झगराक बात ओकिल लग तँ ओ अशुभ छोड़ि शुभ नइ...। जेना तरसँ उधुक्का मारलक तहिना भेल।

कहलयैन– “काका, हकारकेँ पत्नी तेना लिड़ी-बीड़ी करए लगली, जे किछु फुरबे ने कएल।”

आगू बजैले बात ऐबते रहए कि बिच्चेमे जगरनाथ काका लोकि लेलैन। बजला–

“बौआ, हकारक बात पाछू करब पहिने बतिआइ जे छी से कहै छिअ।”

काका-बातक कोनो अरथे ने लगल। की बतिआइ छी? मुदा आँखि देखिते ओ बुझि गेला। बजला–

“गप-सप्प जे करै छी बतियाएब भेल। तहिना जखन खेत जोत-कोर होइत बतिआइए तखन ओ खेत गहुम-जअक बीआ पचबै-जोकर भऽ जाइए। तहिना घरो निच्चाँ सँ तैयार होइत ऊपर छड़ा रहै जोकर बनि जाइए तखन ओ अन्तिम बातीसँ बान्हि बतिआएल जाइए।”

ओना, कक्काक विचार कानकेँ सुनैमे नीक लागए मुदा मन भीतरे-भीतर उविआइत रहए जे पत्नीक नालिस हाइ-कोर्टमे केने छी, देखा चाही, फैसला केकर अनुकूल होइए। मुदा बीचमे टोकबो केना करबैन। तहूमे पत्नीक प्रश्न लऽ कऽ। लगले कहि देता जे पत्नी जोड़ू होइ छैथ, तँए करखनो तोरो जोड़ऽ पड़तह आ करखनो हुनको जोड़ए पड़तैन। मुदा तेहेन कोसी-कमला धारक वेग जकाँ काका उधिआ रहल छैथ जे हुनका पकैड़ अनैमे अपनो भँसि जाएब। सेहो डर हुअए। मुदा सुतरल, कहलयैन–

“काका, आइ ते घरक नाउएँ लेब, तखन जे मठौठक बाती बान्हि बतिअबै छी..?”

शिकारी काका शिकार पकैड़ लेलैन। शिकारीकेँ आनन्द तँ शिकारे पछुअबैमे अबै छइ। ओ बुझि गेला जे पत्नीक बात पहिने बुझए चाहैए। एक्केबेर मोड़ि बजला–

“बौआ, अपना ऐठामक ताना-बना विशाल अछि। विशालक माने

ई भेल जे जइमे सबहक अँटावेस अछि।”

कक्काक सहटैत विचार देखि सह दैत बजलौं–

“काका, खीरपुड़िया हकार की भेल?”

बजैक झोंकमे तँ बाजि गेलौं, मुदा कक्काक जे मुखमण्डल देखलयैन तइसँ बुझि पड़ल जे ओ भरिसक बुझि गेला जे घरवालीक बात पुछलक हेन। मुदा कक्काक तँ अँखिमुना विचार घर छिऐन तँए लाजे-संकोच किए हएत। बजला–

“बौआ, जेते रंगक अपना ऐठाम काज अछि तेते रंगक हकारोक बेवहार अछि। अखन तँ धड़फड़ीमे छी। जँ गप शुरू करब आ बिच्चेमे जइ काजक स्थापना करब ओकर जँ कोनो खगता उपस्थित भऽ जाएत तखन जँ नाँगैर बुझने रहबहक तँ मुँह छुटि जेतह आ मुँह बुझने रहबहक तँ नाँगैर छुटि जेतह।”

कक्काक विचार सुनि बुझि पड़ल जे काका काज दिस घरमुहाँ भऽ गेल छैथ तँए बातकेँ आगू बढ़बैत पुछलयैन–

“काका, घरक न्यौं लेब, तइमे खाइ-पीबैक ओरियान अनेरे किए केलौं।”

हमर बात सुनि काका घड़ी दिस नजैर खिड़ौलैन तँ बुझि पड़लैन जे पान-सात मिनट जगह फाँक अछि। बजला–

“बौआ, खाइ-पीबैक बेवहार सेहो अपना ऐठाम, एहेन सूत्र बनौने अछि जइमे समाजक सबहक खान-पीनक चलैन चलि रहल अछि। केतौ जातीय तँ केतौ सामाजिक, जनारक रूपमे हरिजन, तँ भोज-भण्डारामे सहरगंजा।”

आगू बजैले बाँकीए रहैन कि बिच्चेमे मोबाइल टनटनेलैन। घरक कारीगरक संग जेठका बेटा पहुँच रहल छैन। कक्काक काज देखि

कहलयैन–

“काका, हमहूँ समांगे छी, अपना सिमटी-ईंटाक घर नइ अछि जे किछु बुझल रहैत। तखन अहाँ लग रहब, हाथक आँगुरक इशारासँ जे कहब से करब।”

चारू दिससँ सभ समांग पहुँच पूजा शुरू केलैन। खीर-पुड़ीक परसाद। कोदारिक पूजा करैत न्योँ खुनब शुरू भेल।

❑

तिथि: 11 फरवरी 2015, शब्द संख्या: 1911

दहेजुआ गाए

फगुआक दिन। सम्मत सेहो जरत। ढोलक-डम्फाक संग रंग-रंगक गबैया रंग-रंगक गीतो गौत आ नचबो करत, करवनो विरह गौत तँ करवनो वसन्त, करवनो फागु गौत तँ करवनो जोगीरा, करवनो एक-तलिया तँ करवनो बहु-तलिया गीतो गौत आ पीहकारियो भरत। मुदा पीहकारी तँ पीहकारी छी, हास-हँसीक छी आकि दुख-दुखिक ई तँ ओ जानैथ जिनका पीहकारी भरऽ अबै छैन। ओना, आब फगुओक चालि-प्रकृति बदैल गेल तँए जँ नचनाइ-गौनाइ बदलल, तँ कोनो अतिश्योक्तियो नहियेँ भेल, मुदा बदलल की? फागुन पूर्णिमाक दिन-राति मनबैबला पाबैन, भोरेसँ लोककेँ पाबैनक बमकोला मने-मन फुटऽ लगैत। रंग-अबीर चढ़ौल पुआ खेबे करत, विरह-वसन्तगेबे करत, दिनक जे रातिक सीमा अछि तइकाल सम्मत सेहो जरबे करत। चैतक नव प्रभातमे प्रवेशो करबे करत। किए ने धुम-धामसँ पाबैनक सुआगत हुअए। पाबैन छी, सबहक छी, अपना ओकातिये सभ खेबो-पीबो करत आ गेबो नचबो करत। बाइस बर्खक विवेक आ एक्कैस बर्खक सुजीता सेहो किए ने पाबैन मनौत..?

बाल सुर्ज उगि गेल मुदा अपना पएरे ठाढ़ नइ भेल छल, चाहक तैयारी करैत सुजीता विवेककेँ बजबए चुल्हि तरसँ उठि आगू बढ़ल। सबहक अपन-अपन बुझै-चलैक लूरि अपन-अपन छइ। इमानदारीन सुजीताक मनमे मिसियो भरि कुवाथ नहि जे भनसा घरमे पतिकेँ किए चाह पीबैले आकि खाइले नइ देबैन। जाबे ओ भनसा घर आबि नहि खेता-पीता ताबे भाड़ाक वर्तनक सुख-दुख केना बुझथिन। मुदा से

विवेकोकेँ रहै जे गामक छौड़ो-माड़रि आ छह-पाँच करैबला बुढ़ो-पुरान किए ने खिधांश करैत, मुदा तेकर मिसियो भरि परवाह मनमे नइ छेलइ। अपन-अपन सभकेँ मुँह छै, अपना बुधिये बजैए, तइसँ हमरा की। अपन जिनगी अछि, अपन परिवार अछि, अपन समाज अछि, अपन संसार अछि। चुल्हिक पँजरामे दुनू बेकती- विवेक आ सुजीता- बैस चाहो पीबैत आ गपो-सप्प करैत। अपन पाबैन मनेबाक विचार व्यक्त करैत विवेक बाजल–

"अहाँक तँ पहिल होली ऐठामक छी।"

एक तँ फगुआक उन्मत हवाक झोंक तैपर पतिक संग बैस चाहो पीबैत, सुजीताक मन मचैल उठल। बाजल–

"जखन साले भरिमे बिसैर गेलौं, तखन ते ऐगला जिनगी बिसरले हएब।"

पत्नीक विचार सुनि विवेक ठमैक गेल। मुदा पाबैनक दिन, तँए औझुका विचारो आ पूरो करब अनिवार्य अछि। मनमे एकटा झटहा जकाँ विवेककेँ लगि गेल, मुदा समैयो तँ समैये छी। बाँस भरि सुर्ज चढ़ि गेला मुदा अखनो किछु ने विचार केलौं आ ने ओरियान केलौं हेन। सामंजस करैत विवेक बाजल–

"अहाँक बात विचारैले उधार रखै छी, नगदी काज अखन चलए दियौ।"

पतिकेँ अनुकूल बनैत-बनबैत सुजीता बाजल–

"होली पाबैनक दिन छी, तीत-मीठ आइ सभ खाएत-पीअत तँए उधार रखै छी ते राखू मुदा आइए सालक अन्त हएत आ नवका साल चढ़त, तँए नव-पुरानमे नवकाकेँ पुरनामे ने घोंसिया देबै आ कि पुरनेकेँ नवकामे।"

'नव-पुरान' सुनि विवेकोकेँ सुतरल, बाजल– "नवे पुरानो होइ छै

मुदा..?”

‘मुदा’क पछाइत विवेकक बोलती बन्न भऽ गेल। तुकबन्दीक हिसाबसँ नवे पुरान होइ छै, तहिना पुराने नव हेतइ। ओना, नव आ पुरान सभ किछुमे होइते अछि, मुदा अपन-अपन सभकेँ जगह छै केतौ नव पुरानो होइए आ केतौ पुरान नबो, मुदा एके दाबिये खीरो आ खिचड़ियोकेँ थोड़े लारल जाएत। ओना, जे बात विवेकक पेटमे छल ओ पेटेमे रहने बोलीक बाटे नइ निकलल छल। तहिना सुजीतोक मनमे विवेकक मनसँ भिन्न दोसर-ठाम छल तँए ओहो विवेकक विचारकेँ ने नाँगैर पकैड़ सकलि आ ने मुँह। मुदा फगुआक खुमारी चढ़ल, तँए भुतलग्गु जकाँ खरियबैत सुजीता बाजल– “‘मुदा’ कहि कऽ चुप किए भेलौं?”

ओना, विचारक गर देखि सुजीताक मन पतिक विचारपर लदब छेलैन, मुदा से सुतरल नहि। बीचक जे चुपा-चुपी समय खटियाएल ओ विवेककेँ पाशा बदैल फेकैक अवसर दऽ देलक। हूसल आ बिनु हूसल दुनू परिस्थिति दू रंगक वाण बनबैए। मुदा से नइ विवेककेँ अपने बात मनमे घुरियाइत तँए साधि कऽ वाण फेकैक अवसर भेटते, बाजल–

“साले-साल वसन्तो अबैए, होलियो अबैए, मुदा होली कोन वसन्तमे अबैए से कहू।”

पतिक साधल वाण लगिते सुजीता सकपका गेल। सकपका ई गेल जे चैत-बैशाखकेँ वसन्त रीतु शास्त्र-पुरानमे कहल गेल अछि, मुदा रंग-अबीरक संग वसन्त तँ माघ-इजोरिया पंचमीएकेँ आरम्भ भऽ जाइए। जइ दिन सरस्वती पूजा सेहो होइए। तइ हिसाबसँ दस दिन शेष-माघ आ तीस दिन फागुन मिला चालीस दिन भऽ जाइए। सालक छह रीतुमे वसन्त एकटा सेहो अछि। तँए दू-दू मासक हिस्सा भेल। तइ हिसाबसँ मात्र बीस दिन चैत बँचैए। ई तँ भेल एक दिसक, दोसर दिस जँ बैशाखक पूर्णिमासँ लइ छिऐ तँ तीस दिन बैशाख आ तीस दिन चैतसँ पहिने फागुनेक

पूर्णिमामे होली होइए। तखन तँ एको दिन ने बँचैए, तखन होली केना वसन्ती पाबैन भेल..? विचारक बोनमे अपनाकेँ हेराइत देखि सुजीता बाजल–

"जँ पाबैन रीब-रीबेमे खपा लेब तखन तँ फगुआ फगुए रहत।"

सुजीता अपन बेथा नहि बाजि, विचारकेँ बहटारलक, मुदा से विवेक बुझि गेल। पहिने अपने अनुकूल बनब तखन ने पत्नियोँ अनुकूल बनती। जहिना पत्नीक मनमे पतिक अनुकूलता नचै छै तहिना ने पत्नियोँक अनुकूलता पतिक मनमे नचिते अछि। विवेक बाजल–

"अखन तक अहीं ने गप-सप्पमे ओझरौने छी नइ तँ हमर मन बनल अछि जे दुनू परानीक सझिया कारोबार अछि आ सझिया पूजियो छीहे, से नै तँ दुनू गोटे औझुका आमद पाबैनमे लगा दियौ।"

पतिक इशारा सुजीता नीक जकाँ नहि बुझि पएल। बजली–

"जँ दिन-दिनक आमदसँ अनदिनो चलत आ पाबैनो चलत तखन पाबैन की भेल?"

अखन धरिक जे गप-सप्प पति-पत्नीक- माने विवेक आ सुजीताक- बीच रहल ओ अपन जिनगीक बाट बना अपन विचारक जिनगीक बीच दुनू बेकती जीवन-जापन हँसी-खुशीसँ बितबैत रहल...।

आइ फगुआ छी भोरेसँ सभ अपन पाबैनक पवनौट पबैमे लगले छैथ। ओना, विवेकक मनमे उठल जे व्यास बाबा अपन व्यास पद्धैतसँ जोड़ि औझुका कमाइ काल्हिले राखब वर्जित केने छैथ। मुदा जँ एहेन बात अखन बाजब तँ अनेरे महा भारत उनैट जाएत! खेबा-पीबा दिन जँ रमा-कठोला भेल तखन तँ पाबैन पाबैने रहत! अपन जोड़ क्रिया करैत विवेक बाजल–

"जइ आमदनीपर अपन जिनगी ठाढ़ अछि ओकरा लगौलासँ सगर समाजक पाबैन मना लेब।"

'सगर समाजक पाबैन मना लेब' पतिक मुहसँ सुनि सुजीता बाजल–

"जखन सौंसे समाजक पाबैन मनाएब तखन किए ने अपन पैछलो जिनगीक सोहर-समदौन सेहो सुनाइए देबैन।"

'सोहर-समदौन' सुनि विवेक भोतिया गेल। भोतिआइक कारण भेल, फगुआ दिन लोक फागु गौत, जोगीरा गौत, विरह-वसन्त गौत आकि सोहर-समदौन गौत। मुदा पाबैनक दिन छी किने, पूवजनक फगुआ किए ने दुनू परानी मनाइए लेब। बाजल–

"अहूँकें ते बुझले अछि जे मास्टरो साहैब कें दुधाएल भाँग पीऔनहि हेबैन।"

सुजीता–

"किए ने बुझल रहत। केता दिन पाकल केरा, दूध आ मिसरीक संग भाँग मिला सेहो पीऔने छिऐन।"

विवेक–

"अपन तीनू गाइयक औझुका दूधक शरबत बाल-गोपालसँ चेतन धरिकें पीआ देबैन।"

जहिना बी.ए. पास विवेक तहिना बी.ए. पास सुजीता। विवेक एकटा बुधियार किसानक बेटा आ सुजीता किसान परिवारसँ उठल शिक्षकक बेटी। दुनू परिवारक अपन रीति-रिवाज, अचार-विचार। विवेकक पिता जगरनाथ, बहुत बेसी खेतबला किसान नहि मुदा अपन किसानी जिनगी ओहन बनौने छैथ जे अखन धरिक मिथिलाक परिवारक रहल। बी.ए.मे जखन विवेक पढ़ैत रहए, तखन केते सभामे दहेजक विरोधमे बजबो कएल आ दहेज नइ लेब, से सप्पतो खेलक। मुदा जेना-जेना सभाक माध्यमसँ बढ़ैत गेल तेना-तेना भेटैत गेलै जे बहुसंख्यक समाज ऐ बातकें मानि चलि रहल अछि जे जेकरा जेते बेसी दहेज भेटत

ओ ओते प्रतिष्ठित परिवार भेल। तेतबे किए, एके आदमी बेटा बेर राजा आ बेटी बेरमे रंक बनि हँसबो करैए आ कनबो करैए। विवेककेँ मन धिक्कारलकै। बी.ए.मे पढ़ै छी, दू बर्खमे पढ़ाइ सम्पन्न हएत। एम.ए. तँ प्रोफेसर बनैले प्रोफेसरक बेटा पढ़ैए, आन किए एकपेरिया रस्ता पकड़त। बी.ए. मूल चौराहा भेल। ऐठामसँ लोक अपन जिनगीक चौबगली रास्ता धरैए। दुइए बर्खक भीतर पढ़ाइ सम्पन्न हएत, बिआह हएत परिवार ठाढ़ करैक भार सेहो पड़त। बहुत दिन दहेजक भाषण केलौं। दहेज तँ समाजक बोहैत धार छी। जइमे पाप-पुन दुनू दहाइए!

सुजीताक पिता हाइ-स्कूलक शिक्षक, जिनका केते गोटे एकभग्गू कहै छैन तँ केते गोटे बहुभग्गू। जे अपनो मनिते छैथ। जखन अपनाकेँ बहु-भग्गू मानि विचारै छैथ तँ मानि लइ छैथ जे एमेले आकि एम्पीक चुनावमे केतेको गोटे भोँट मंगैले अबै छैथ, शिक्षक छी हमरा कोन राजनीतिसँ मतलब अछि, पढ़ब-पढ़ाएब अधिकार-कर्तव्य भेल। दरबज्जापर आएल आगन्तुककेँ सुआगत केना ने करबैन, एहेन परिस्थितिमे मास्टर साहैब सन लोककेँ उकड़ू हेबे करतैन। से भेने भोँटो ने खसबै छैथ जे से अपन मन खुटखुटेतैन जे जुवानक कोनो ठेकान नइ अछि।

..मुदा एकटा भोँट दस गोटेमे बाँटब केना, तइसँ नीक ने ई भेल जे जँ कियो कहता जे हमरा भोँट नइ देलौं, तँ हमहूँ ने सवारी कसि देबैन जे जँ अहाँकेँ नइ देलौं तँ किनका देलिऐन, सएह कहू। सोझ-साझ रस्ता भेटने बहुभग्गू मानि लइ छैथ। एकभग्गू ऐ मानेमे छैथ जे कोनो झगड़ा दू गोरेक बीचक रहल तेकरा एकतरफा बुझि अपन विचार सुना दइ छथिन, तइसँ एकभग्गू कहि गाममे कियो बातक मोजरे ने दइ छैन। मुदा तँए कि मास्टर सहैबक मुँह मलिन रहै छैन, सेहो नहियेँ रहै छैन। अपन धूनमे अपन जिनगीक गाड़ीकेँ कखनो जुआ पकैड़ तँ कखनो पछुआ पकैड़, कखनो ठेलैत तँ कखनो घीचैत चलिये रहल छैथ।

ओना, उमेरक हिसाबसँ विवेक एक बर्ख तीन मास सुजीतासँ जेठ, मुदा दुनू मैट्रिको एके बैचमे पास केलक। दुनू दू गामक मुदा एके कौलेजमे दुनू पढ़ैत। सुजीताक बिआह मास्टर साहैब करता, पढ़ैओक दृष्टिसँ आ उमेरोक हिसाबे सुजीता बियाहै-जोकर भइये गेल छल। मास्टर साहैबक विचारक अनुकूल केतौ सुजीताक बिआहक गरे ने लगैन। ने अपन विचार बदलैक पक्षमे रहैथ आ ने कियो नाकपर माछीए बैसए दन्हि। जेते बेटीकेँ बेसी पढ़ाएब तेते बेसी दहेजो लगबे करत। जे बात मास्टर साहैब सुजीताक बिआहक गप-सप्पक क्रममे बुझलैन। अपनो छगुन्ता लगैन जे कहू ई केहेन भेल जे जइ बेटीकेँ पढ़ा-लिखा, सज्ञान बना दोसराक हाथमे देब, आ तैपर सँ नगदो नारायण देब! ओना, मास्टर साहैबक विचार ईहो रहैन जे एक नव परिवर ठाढ़ होइए तँए परिवार ठाढ़ होइक जे आवश्यक काज अछि ओकरा पुराएब आवश्यक अछिए। अपने शिक्षक तँए दहेजक अपन परिभाषा बनौनहि रहैथ। परिभाषा रहैन जे नगद-नारायण दहेज भेल, मुदा वस्तु-जात तँ से नइ भेल। ओ तँ जिनगीक आवश्यक वस्तु भेल जे बेटा-बेटीकेँ माइए-बाप ने पुरौत। ओना, सुजीतापर मास्टर साहैबक प्रभाव ओते नइ जेते माइयक प्रभाव छल। नारी जिनगीक देखल-सुनल अनुभव माएकेँ छेलैन, तँए सुजीताकेँ अपन जिनगी अपना हाथमे रखि ठाढ़ केने छेली।

गामसँ कोस भरिपर हाइयो-स्कूल आ कौलेजो। जहियासँ सुजीता गामक मिडिल-स्कूल टपि हाइ-स्कूलमे नाओं लिखौलक तहियासँ मास्टरे साहैबक संग स्कूल-कौलेज जाइत-अबैत छल। आ स्कूल-कौलेज जाइसँ पहिने आ एला पछाइत माइयक देख-रेखमे रहै छल। स्कूल-कौलेजसँ एला पछाइत सुजीता घर-परिवारक काजमे जुटि जाइ छल। बच्चेसँ सुजीता बुझि गेल छल जे अपन शक्ति भरि परिवारक काजमे माइयक संग पुरैत रहब तखने ने मातृत्वक गुण औत। जँ से नइ करब तँ माए थोड़े खर्ड़ा-बाढ़ैनसँ झाँटत, गलैत मने यएह ने कहत जे जेहेन धी रहत तेहने ने

मातृत्व पौत। सफल नारीत्व तँ सफल मातृत्वेमे ने भेटै छइ। जँ से नइ भेटै छै तँ कुमारियो केना मातृत्व प्राप्त कऽ माए कहबैत आबि रहल छैथ..?

विवेकक पिता जगरनाथ अपन कर्तव्यक सीमा-सरहदक संग परिवारमे जीवन-जापन करैत जुआनीएसँ चलि आबि रहल छला। बेटाक पढ़ाइयोक भार अनका जकाँ माथपर कहियो ने पड़लैन। जे विद्यार्थी परिवारसँ दूर रहि विद्याध्ययन करै छैथ, हुनका ने बेसी खर्च-बर्च होइ छैन, जइ भारसँ पिता परेशान रहै छैथ। तेहेन ने परिस्थिति कहियो जगरनाथकेँ भेलैन आ ने पढ़बै-लिखबैक कहियो मत्थदुखी भेलैन। एकरसक जिनगी परिवारमे सभ दिन बनल रहलैन। ओना, विवेककेँ एते बात घोरि कऽ पीआ देने रहथिन जे ‘बौआ, पढ़ब-लिखब ज्ञान अर्जन करब भेल। ऐ ज्ञानसँ अपन जिनगीमे समायानुसार बढ़ौतरी करैत चलब रहबे समतल जिनगी बना जीब भेल। जखने उबड़-खाबड़ औत तखने जिनगीमे घटी-कुघटी हएत।’

पिताक विचारकेँ गिरह बान्हि अपन चालि बना चलैक रास्ता विवेक रोपि नेने छल। दहेजक धारमे उठल अवारकेँ विवेक परेख नेने छल। जइसँ गुलामी आजादीक जिनगीमे अपन सीमांकन कऽ नेने छल।

साल भरिसँ मास्टर साहैब सुजीताक बिआहक चर्च-बर्च करैत आबि रहल छैथ मुदा अपन विचारानुकूल केतौ बिआहक गर नइ लगलैन। विवेककेँ बुझल जे मास्टर साहैबक विचार अनका-ले जे होउ, मुदा हमरा-ले तँ अनुकूले अछि। हुनकासँ नगद-नारायण नइ लेब, मुदा खाइ-पीबैले, जीवन-जापन-ले गाए तँ देबे करता। किए ने अपन दुनू परानीक जे उपारजित शक्ति अछि माने श्रम करैक जे समय अछि ओकरा जीवनोपार्जनक दिशामे बढ़ाबी।

बी.ए. फाइनलक तेसर मासमे विवेक आ सुजीताक भेँट भेल।

ओना, दुनू एक-दोसरसँ परिचित। मुदा बिआहक सुन-गुनी दुनूक कान तक पहुँच गेल छल। दुनू अपन जिनगीक किताब सादा पन्नामे लिखब शुरू कऽ नेने छल। दुनू किसान परिवारसँ उठल, किसानी जिनगीकेँ उठबैक संकल्पक संग एक-दोसरसँ सम्बन्ध-सूत्र बनबैक विचार एक-दोसरकेँ दऽ देलक।

विवेक आ सुजीताक श्रम-शक्तिकेँ अँकैत मास्टर साहैब जीवनोमुखी रस्तापर आनि विवेककेँ जमाए बना लेलैन।

❑

शब्द संख्या: 1908, तिथि: 15 फरवरी 2015

मेटाइत जिनगी

तीन बर्खसँ रमेश काका भेँट नै भेल छला, भेँट नइ भेल छला एहेन बात नहि, तीन बर्खपर अपने गाम आएल छेलौं। बंगालमे रहै छी, रविन्द्र संगीत मण्डलीसँ जुड़ल छी। ओना, सरकारी आकि कारखानाक नोकरी जकाँ बन्हाएल नइ छी, मुदा संगीत मण्डलीक बान्ह तँ लगले अछि। सइयो मण्डली बंगालमे चलिते अछि जइसँ कोनो ने कोनो मण्डलीमे जगह भेटिये जाइए।

गाम ऐबते मनमे भेल जे पहिने रमेश काकासँ भेँट करबैन, मुदा गाड़ीक झमाड़सँ एते झमैड़ गेल रही जे मनो आ देहो असोथकित जकाँ बुझि पड़ए। एक तँ गुरु ऐठाम जाएब, रमेश काका संगीत विद्याक आदि गुरु छैथ। जहिया हाइए-स्कूलमे पढ़ैत रही तहियेक गुरु छैथ। तैपर जँ अलसाइत-मलसाइत जाएब सेहो केहेन हएत। तैबीच दिनेश भाय आबि गेला। रस्तेमे अबैत रही कि कियो हुनका कहि देलकैन जे महेन्द्र गाम एला अछि। रस्तेसँ रस्ता दिनेश भाय पहुँच गेला। दिनेश भायकेँ देखिते माएकेँ कहलिऐ–

“माए, चाह पीबैक मन होइए।”

पुरान विचारक लोक माए, उनटा कऽ बाजल– “ई केहेन हएत जे रस्ता-बाटक भुखाएल छह, पहिने किछु खा लेबह तखन चाह पीबह आकि पहिने चाहे पीबह!”

अपन बातक जिद्दी माए, किनौं बात नइ मानैत। तँए बात बदलैत बजलौं– “टीशनपर गाड़ीसँ उतैरते जीआलाल कक्काक दोकान मोन पड़ि

गेल। सानल छोला-सिंघारा तैपर आमीलक चटनी आ अमीरती भरि पेट खा लेलौं। अखन खाइक मन नइ अछि, दिनेशो भाय छैथे।"

छोला-सिंघारा तँ माइयक मनमे नहि अँटकलै कनी-मनी राहड़िक दालि, आमील अँटकबो केलै तँ कँचका आमक फाँड़ा, मुदा अमीरती कण्ठे लग अँटैक गेलइ। बाजल–

"पहिलुके जकाँ जीआलाल दोकानक अमीरती रहैए आकि धिया-पुता सभ आब बनबै छइ।"

माइयक बात सुनि आरो चपाड़ा देलिऐ–

"एँह माए! आब बुड़हे जकाँ धियो-पुताक हाथ बैस गेलैन, पहिलुकोसँ नीक बनबै छैथ।"

माए अनुकूल होइत बाजल–

"पानि पीबह किने?"

कहलिऐ–

"कोनो कि पाछूके नोनगर खेलौं जे पियास लागत, अमीरती तँ ओहिना कण्ठ लग बैसल अछि। चाहेटा पीब।"

माए चाह बनबए गेली। दिनेश भाय बजला–

"ऐबेर बहु-दिनपर एलह।"

तीन साल पहिने सालमे चारि-पाँच बेर आबि जाइ छेलौं, मुदा ऐ बीच एहेन काज बढ़ि कऽ नमरि गेल जे तीन साल केमहर बाटे चलि गेल से बुझबे ने केलिऐ। ओना, भेल ईहो जे बंगालसँ मण्डलीक संग आनो-आनो राज्य कार्यक्रममे जाइत-अबैत ओहीमे हेराएल रहलौं। मुदा दिनेश भाइक प्रश्न उचिते छेलैन, तँए किछु बीचमे बाजब उचित नै बुझि मानैत कहलयैन–

"हँ भाय, तीन सालपर एलौं। गामक की हाल-चाल अछि?"

जेना दिनेश भाय बुझिते रहैथ कि की तहिना आन सभ गपकेँ मनसँ टारैत बजला– "रमेशकाका मेटा रहला अछि!"

'रमेशकाका मेटा रहला अछि!' सुनि मन चौंकल। की मेटा रहला अछि? पैछला खेप जे आएल रही, केहेन बढ़ियाँ रहैथ। ओना, पहिलुका जे रूआव आ सैहबी छेलैन तइमे कमी तँ भइये गेल रहैन, मुदा मेटा रहल छैथ ई तँ बड़ भारी बात भेल। तही बीच माए चाह नेने पहुँचल। तीनू गोटे- हमहूँ, दिनेशो भाय आ माइयो- चाह पीबए लगलौं। मुदा रमेश कक्काक समाचार जेना मनकेँ हौंड़ैत रहए तहिना मने-मन बुझि पड़ए। केना दिनेश भायकेँ पुछितिऐन जे की मेटा रहला अछि। किछु छैथ तँ रमेशे काका ने पहिल गुरु छैथ। चाह पीला पछाइत दिनेशो भाय चलि गेला आ माइयो काज-उदममे लगि गेल। बैगकेँ सिरमा बना, बिना कपड़ा बदलनहि चौकीपर ओंघराइत बजलौं– "माए, थकान बुझि पड़ैए कनी लोट-पोट कऽ लइ छी पछाइत नहाएब। नहा-खा कऽ कनी अराम करब पछाइत रमेश काका ऐठाम जाएब।"

साठि बीघाबला रमेश कक्काक परिवार। रइस ठाठ-बाठ। पिता- दयाराम- जेहेन धन-सम्पैतसँ सम्पन्न तेहने पढ़ल-लिखल। रमेश काकाकेँ कहियो अपना अमलदारीमे घरक कोनो काज-भार नै पड़ए देलखिन। रमेश काका संगीत-प्रेमी लोक तँए संगीतक बोनमे हेरेलहा सभ जे अबैत तेकर सुआगत संगीए जकाँ करैथ। शुरूहेसँ रमेश कक्काक झुकाउ संगीत विद्या दिस रहैन। तँए दोसर दिस किछु देखबे ने करैथ। हाइ स्कूलक पछाइत रमेश काकाकेँ सभ साजो-बाज आ सिखौनिहारोक बेवस्था घरेपर पिता कऽ देने छेलखिन। ओना, रमेश काका मूलत: गायनक प्रेमी छैथ, मुदा सभ साजो-बाज बजबैक लूरि सिखनहि छला। कृष्णे जकाँ रंग-रंगक संगी, आनो छैन्हे।

पिताक परोछ भेला पछाइत रमेश कक्काक जिनगी एकभग्गू भऽ गेलैन। अपन मण्डली, बजन्त्रीकेँ दरमाहा-भोजन दऽ अपने ऐठाम रखै

छला। खेती-गिरहस्ती दिस नजैरे ने जान्हि। जाबे विधवा माए जीलिखिन ताबे महाजनियोँ आ खेतीओ-पथारी जीवित तँ रहलैन मुदा निच्चाँ मुहेँ हहरऽ लगल छेलैन। नोकर-चाकरक हाथे काज चलने उपजो-वारी आ महाजनियोँ, दिनो-दिन कमए लगलैन। मुदा तैयो पिताक परोछ भेला पछाइत पाँच बर्ख धरि, जाबे माए जीलिखिन ताबे, कर्ज-बर्ज आ खेत-पथारमे हाथ नइ लगल छेलैन।

शास्त्रीय संगीतक प्रेमी रमेश काका, अपना ऊपर भार एलो पछाइत जिनगीमे कोनो बदलाउ नइ एलैन। जहिना माता-पिताक अमलदारीमे तहिना पछाइतो रहलैन। जइसँ साले-साल चीज-वौस खेत-पथार बिलटए लगलैन। साले-साल खेत बेचऽ लगला। पिताक अमलदारीक जेहेन जिनगी आ मन बनि गेल छेलैन ओ बनले रहि गेल छेलैन, मुदा साल दसेक करीबसँ जखन ढहैत सम्पैत दिस नजैर उठि पहुँच गेलैन जे किछु दिनमे सम्पैत ओरा जाएत, मुदा जिनगीक कोन ठेकान अछि, पछाइत केना चलत..? एहेन विचार मनमे ओही दिनसँ चलि अबैत रहैन जइ दिनसँ अपना मण्डलीक लोक सभ, जेना कियो ठेका वादक, तँ कियो वीन वादक, कियो मजरी बनि घुरघुराइत तँ कियो राधा-कृष्ण बनि नचैत छेलैन, ओ सभ कियो मण्डली बदैल-बदैल अठजाम, नवाह, अध-मासी, मासी, सबा-मासी, तीन-मासी, छह-मासी, बर्ख, तीन-बर्ख, तेरह बर्खक चौबीस घन्टाक धुनमे समय लगबए लगला...।

..मुदा अपने? पँच-पँच घन्टा एक स्वर-साधनामे लगबै छला ओ भग्न हेबे करत किने। की ओ ओइ स्थानक भग्नावशेष जकाँ ने तँ भऽ गेला?

रंग-रंगक विचार महेन्द्रक मनमे उठए लगल। जे रमेश काका मरि नहि रहला अछि तँ कुहैर जरूर रहला अछि। मुदा लगले रमेश काकापर सँ नजैर हेट भऽ अपनापर ऐबते महेन्द्रक मनमे उठल जे की हुनके जकाँ

अपनो कुहरै छी? से तँ नइ कुहरै छी। मुदा छैथ तँ वएह गुरु। तखन हुनके किए एना भेलैन? मुदा किछु छैथ तँ ओ गुरुए छैथ आ हम चेले छिऐन किने। तँए अपना मुहेँ की बजै छैथ से सुनला पछातिये किछु विचारब नीक हएत। जँ केतौ बुझैमे नइ औत तँ शंका उठा समाधान करा लेब। मनमे अबैत-अबैत महेन्द्रक विचार जेना तनल। एगारहक समय भऽ गेल छेलइ। रमेश कक्काक नहाइ-खाइ-अराम करैक समय छैन, अखन जाएब नीक नहि। तैबीच ताबे अपनो नहा-धो खा-पी किछु लोट-पोट कऽ लेब। तीन बजे हुनका लग हाजिर भऽ पहिल पतियानीमे बैस चाहो पीब, पानो खाएब आ अपन फुलाइत मुँह बन्न केने रमेश कक्काक विचार सुनि मनमे घोंटब। जाबे घोंटब नइ ताबे बूझब केना? कौआ कान नेने उड़ैए, तइ पाछू दौड़ब थोड़े नीक हएत, दुनू हाथे दुनू कानमे आँगुर दऽ देखि लेब जे केतौ गुज्जी-तुज्जी ने तँ अँटकल अछि। उठि कऽ महेन्द्र नहाइले विदा भेल, मुदा कलेपर मनमे उठि गेलै, हहरैत जिनगीक सभ किछु हहरऽ लगै छइ। रमेश कक्काक आब ओ देवियो आ कराहो धीरे-धीरे छीना रहल हेतैन। तँए एहेन खसैत-पड़ैत जिनगीक दर्शन-ले विचार करब नीक। जखने एते दिनपर भेँट करए जेबैन, आ बुझि रहल छी जे ओ खसि-पड़ि रहला अछि, तखन किछुओ दिनक खुशी नइ देबैन सेहो केहेन हएत। मुदा ईहो तँ विचारणीय ऐछे जे जखन मन-माफित उपार्जन करै छी तँ किए ने किछु अपनो प्रदर्शन गुरु-आश्रममे करी। मन मानि गेलै जे ऐगला खेप जे आएब तैबीचक जिनगीक भार उठा कहबैन, गुरु दछिना दिअ?

अढ़ाइए बजे तैयार भऽ कऽ रमेश काकासँ भेँट करए विदा भेल। ओना, चाहपत्ती, कौफी आ साल भरि चलैबला दूधक पैकेटक संग आरो सनेस सेहो लऽ लेने रही तँए समयसँ पहिनौं पहुँचब अनुचित नहि। अनुचित ओतए जेतए धरवारीकेँ बिनु परेखने कखनो पहुँच जाइऐ। ओना, एहनो धरवारी तँ छैथे जिनका अपनासँ अधिक वौस नै छैन,

तिनका ऐठाम समय-कुसमैयक जँ ठेकान नइ राखब से केहेन हएत।

रमेश काका सुति उठि, मुँह-कान धो पानि पीब दरबज्जाक ओछाइनपर बैसते रहैथ तखने पहुँचलौं।

नीक जकाँ बैसलो ने रहैथ, बैसैक ओरियान करिते रहैथ कि पाछूएसँ कहलयैन–

“गोड़ लगै छी काका!”

पाछू उनैट तकलैन कि नजैर पड़लयैन। तैबीच चीज-वौसक कार्टून दुनू हाथसँ बढ़बैत कहलयैन–

“काका, ई काकीकेँ सुमझा दियनु।”

‘काकी’क नाओं सुनि रमेश काका चोटे दुनू हाथसँ कार्टून पकैड़ बजला–

“बैसह, पहुँचेने अबै छी।”

आँगन दिस बढ़ला तँ पाछूसँ कहलयैन–

“काका, चाहपत्तीक संग कौफियो अछि, भलेँ अपने फुटा-फुटा फुटमे पीब, मुदा अखन दुनू मिला तीनू गोरे संगे बैस कऽ पीबो करब आ गप्पो करब। बहुदिनक गपो बाँकी अछि। हम तँ अपनेक रूप काकियोमे पबिते छी।”

काकी चाह बनबैले चुल्हि पजारिते रहैथ कि रमेश काका कहलखिन–

“कनी थमि जाउ। पहिने कार्टून खोलि वौस निकालि लिअ। महेन्द्र बाजल जे अही वौसक चाह पीब।”

कार्टून खोलिते काकी-ले आनल साल भरिक वस्त्र, ओना- सालक लेल मौसमी वस्त्रक खगता होइए मुदा एको मौसमक एहेन वस्त्र तँ होइते अछि जे सालो भरि चलैए। वस्त्रक संग मंगटिका तैसंग खेबो-पीबोक

किछु वौस आ किछु नगदो-नारायण देखि दुनू बेकतीक छाती उमैड़ गेलैन। ललियाइत मनो आ मुहोँ नेने रमेश काका दरबज्जापर पहुँच कहलैन–

“बौआ, केते दिनपर गाम एलह?”

तैबीच चाहो आ बिस्कुटो नेने काकी पहुँचली। केना कहितिऐन जे बिस्कुट नइ खाएब। जुग उनैट गेल अछि, खैयो-पीबैमे बम-बारूद तँ चलिते अछि। तीनू गोटे संगे बैस चाहो पीबैत आ एक-दोसरकेँ देखबो करैत, मुदा बजैत कियो ने किछु। महेन्द्रक मनमे रहै जे रमेश काका बजता ओइ अनुकूल अपनाकेँ ठाढ़ करब, मुदा रमेश काकाकेँ पुश्तैनी टुटैत विचारमे अखनो एहेन विचार मनमे रहबे करैन जे अपन हारल-मारल जिनगीक बेथा दोसरकेँ केना कहबै? फेर मनमे ईहो होइन जे महेन्द्र चेला छी, कहियो किछु छिपौलिऐ नइ, मुदा फेर ईहो होइन जे अपन घर-परिवारक बाते कहिया कहलिऐ जे छिपौलिऐ नहि। फेर होइन जे तीनियेँ बर्खमे एते निच्चाँ उतैर गेलौं, सेहो बात तँ नहियेँ अछि, आस्ते-आस्ते उतरैत तँ रहबे केलौं। सेहो तँ नहियेँ कहलिऐ। कहबो केना करितिऐ। कोनो कि बुझै छेलिऐ आकि मनमे उठबो कएल रहए जे एहेन दिन देखए पड़त। एकाएक जखन तीन बर्खक बीच संगी छोड़ि चलि गेल, परिवारक लछमी पड़ा गेली, असगरे घरमे औनेबो करै छी आ वौएबो करै छी। से कहबो केना करितिऐ।

..विचारक खण्डन-मण्डनमे रमेश काका नीक जकाँ ओझराएल रहैथ। हमरा हुअए जे रमेश काका जे बजता, तइमे अपनो विचार सामिल करब, मुदा जँ बजबे ने करता तखन सम्मिलित केतए हएब। बजलौं–

“काका, अपने तँ नमहर जिनगी जीब दुनियोँकेँ बहुत देखलिऐ, हम तँ नव-नौतार छी, तँए पहिलुका समय आ अखनमे कि दूरी बनल बुझि पड़ैए?”

हमर बात सुनि रमेश कक्काक हृदए चनैक गेलैन। शीशा जकाँ चुरम-चूर भऽ गेलैन। मुदा चनैकतो मनमे विचार चमकबे करैन, बजला–

“बौआ, ओ समय ओहन छल, जइमे शास्त्रीय संगीत अपन जुआनी पेब खूब फुलाएल फड़ल छल। जिनगीमे औझुका जकाँ भाग-दौड़ नइ छल। मुदा तँए दौड़म-दौड़ नइ छल, से बात नहि। समटल जिनगी, समटल किरिया-कलाप छल। पैघ दरबार होउ आकि मध्यम, सबहक बीच संगीतसँ जुड़ाउ अनिवार्य छेलइ। मुदा..!”

‘मुदा’ कहि रमेश कक्काक मनमे पाछूसँ जेना धक्का लगलैन। धक्का लगिते बजैक क्रम भंग भऽ गेलैन। धक्का ई लगलैन जे समयकेँ पकैड़ लेब, यएह तँ जिनगी छी। मुदा से तँ बुझितो छुटि गेल। समैये ने जीव-जन्तुसँ मनुक्ख धरिकेँ ऊर्जा दऽ ऊर्जवान बनबैए। मुदा लगले मन मलैक गेलैन, मलैकते भेलैन जे मनमे एहेन तँ ने भ्रम भऽ गेल अछि जे जे अपने भोगै छी ओ महेन्द्रोकेँ कियो कहि देने होइ जे से ओहो बुझैत हुअए। जँ ओ बुझैत हएत तहन जँ छिपाएब तँ सद्यः झूठ बाजब भेल। झूठ तँ जिनगीक ओहन मूठ छी जे हाथसँ छुटिते निकैल जाइए। जे छिपबए चाहै छी तँ ओ संगीक संग बिसवासघात हएत...।

..मनमे बिसवासघात उठिते पसीज गेला। पसिजते मनमे उठलैन जे किए ने महेन्द्रसँ जहिया पहिल भेँट भेल तहियासँ आइ धरिक सभ विचारक आदान-प्रदान कऽ ली। फेर लगले भेलैन जे जखन आगू भऽ कऽ महेन्द्र बाजल तखन किए ने ओतैसँ विचार शुरू करी। किछु भेल तँ महेन्द्र डारि भेल। फेर मन बदललैन। बदललैन ई जे शुरू केम्हरसँ करी। अखनुक जे वीर्तमान अछि तेम्हरसँ आकि बच्चामे जइ दिन भेँट भेल तेम्हरसँ। जँ तेम्हरसँ शुरू करब तँ भविस छुटि जाएत। नमहर इतिहास माने नमहर जिनगी अछि। मुदा भूतो-भविसक बीच वर्तमान अछि, यएह ने एकटाकेँ मुँह आ एकटाकेँ नाँगैर पकैड़ गणेशजी जकाँ खेलाओत।

रमेश काका बजला–

“बौआ, अपने तँ सुरखीपर जोड़ल घरक देवाल जकाँ रहलौं, ढनमना गेलौं, मुदा तूँ तँ से नइ छह। आजुक समय तोरा संग छह, तँए किछु अपन पहिने कहह।”

महेन्द्रक मनमे उठल जखन दुनू बेकतीक शेष जिनगीक भार उठबैक शक्ति अपना कन्हामे अछि तखन किए ने श्रवणकुमार जकाँ दुनूकेँ पाँचो धामक दर्शन कराइए दिऐन। महेन्द्र बाजल–

“गुरुदेव, अपने शोक-पीड़ा मनसँ हटा लिअ। मने रोगो आ सोगोक घर छी, जे देहक पीड़ाक अधीन भऽ गेने अधीनस्थ कबूल कऽ लइए, मुदा अछि तँ ओ स्वतंत्र। इजोते-इजोत ऐ दुनियाँमे छइ। ओना, ई बात जगह देखि उचित-अनुचित सेहो होइए। जे ऐठाम अनुचित भेल, मुदा उठैत जिनगी, खसैत जिनगी आ ठमकैत जिनगीक बुधियो आ विवेको घुसुक-फुसुक करैत ठहकबो तँ करिते अछि। ई सोचि बजलौं, तँए एकरा अनुचित नहि लेल जाए।”

सोग-पीड़ा सुनि रमेश कक्काक मनमे, जहिना शरदक पहिल-दोसर-तेसर साँझ आ सिंगहारक महमही जेना द्रूत गतिसँ पसरैत भरि राति अपन घर-आँगनकेँ महमहबैत रहैए तहिना महमहा गेलैन। बजला–

“की दिन छल आ की दीन भेल। रामनवमी आकि जन्माष्टमीमे जहिना बच्चा जन्मसँ लऽ कऽ माइयक पलना, समाजक सोहरक संग समाजमे पसरल रहैत छल, ओ आइ..?”

‘आइ’ कहि रमेश काका चुप भऽ गेला। रमेश काकाकेँ चुप होइत देखि महेन्द्र बाजल–

“काका, जइ समाजमे रहै छी आ जीबै छी, ओ जाल जकाँ पसरल अछि। मनकेँ जेतए फुरै छै तेतए रहि जाइ छइ।”

महेन्द्रक बात सुनि सुधनी काकी बजली–

“बौआ, छेलै ते अपनो सबहक, मुदा की भेल, कहाँ भेल, से अखनो कहाँ बुझि पाबि रहल छी।”

सुधनी काकीक बात सुनि महेन्द्र बाजल–

“काका, बड़ीटा दुनियाँ अछि। एते भारी दुनियाँमे वौआएब सोभाविके अछि। तँए जे हूसल से हूसल। आइसँ फेर वएह बुझू। चलू दुनू परिवार संगे रहब।”

महेन्द्रक बात सुनि रमेश कक्काक मेटाइत मन ओहिना फुला गेलैन, जेहेन फूल रोपि, माली बनए चाहै छला।

❑

शब्द संख्या: 2129, तिथि: 20 फरवरी 2015

धुर बुड़ि तोरा बजै ने अबै छौ!

फगुआ पाबैनक दिन। भिनसुरका समय। त्रिकाल भाँग पीयाक सबहक पहिल समय उदित भऽ गेल छल...।

..पाबैनक दिन छी, महावीरजीक स्थानमे भोरेसँ लोक भाँगो पीत आ ढोलक, डम्फा, झालि, मजीराक संग विरहा-वसन्त गौत आ फगुओ-जोगीरा गेबे करत। सभ दिन तँ लोक खटिते अछि, सरकारी आदमी आकि करखन्नाक आदमीकेँ अठवारे छुट्टी होइ छै, से गाम-घरक परिवारमे माने किसान-परिवारमे थोड़े होइ छइ। ओ तँ छी लूटि लाउ, कुटि खाउ, भिनसर भने फेर जाउ...।

मुदा तँए कि लोक बाप-दादाक लगाएल पाबैन छोड़ि देत सेहो केहेन हएत। गामक आने जकाँ बालगोविन सेहो अपन समयपर सेर भरिक गुड़क गोला नेने महावीरजीक स्थान पहुँच गेल। गामक बारहटा स्थानमे महावीरोजीक स्थान सार्वजनिक स्थल छीहे। तैसंग स्थानकेँ ईहो अधिकार तँ छइहे जे सभ दिनसँ होरी गेबो आ खेबो-पीबोक जगह रहैत आएल अछि, तँए केकरो मनमे शंका रहबे ने करै, तहूमे बालगोविन तँ सहजे मन-मौजी तँ अछिए। कियो अपने मोजेमे ने रहऽ चाहैए।

समयसँ पहिने, माने आनक जुटानसँ पहिने फचाँरि काका भाँग-पत्तीक झोरा लऽ कऽ पहुँच गेल छला। भाँगक पत्तीए ने जड़ि भेल, मरीच-मसल्ला तँ ओकर मेजन भेल, एहने विचार फचाँरि कक्काक मनमे रहबो करैन। तैसंग ईहो रहैन जे गाममे हमरा सन केते भँगखौके अछि,

अखुनका जकाँ कि थोड़े बाढ़ि आबि गेल जे धिया-पुतासँ चेतन धरि खेबे-पीबे करत। तहूमे कि भाँगेटा थोड़े अछि, पुड़िया-पुड़ीसँ लऽ कऽ शीशी-बोतल धरि उपलब्धो तँ भइये गेल अछि।

मुदा मूल बात फचाँरि कक्काक मनमे ई रहैन जे सभ दिन घरमे त्रिकाल भाँग खाइ-पीबैवला छीहे, खाइक माने गोली पीबैक माने शरबत। ऐसँ सस्ता की भेटत, सार्वजनिक स्थानक मुँहपुरखी छोड़िए देब ने बुड़िपना हएत। से किए छोड़ब। यएह सोचि फचाँइर काका अपना समयसँ तँ नहि, अपने तइसँ पहिने सूर्योदयक समय पहिल खेप भाँग चढ़ा लइ छैथ, मुदा दसगरदा जगह तँ दसगरदा छी, दस गोटेक संगोर छी कनी-मनी आगू-पाछू होइते अछि। तही खियालसँ सात बजेसँ किछु पहिने फचाँरि काका पहुँच धियो-पुतो आ चरो-चेतनकेँ, केकरो ढोलक तँ केकरो झालि, केकरो डम्फा तँ केकरो मजीरा, केकरो सिलौट-लोढ़ी तँ केकरो डोल-गिलासक आदेश बाँटि चुकल छला। सात बजेक करीब बालगोविन गुड़क ढेपा गमछामे बन्हने पहुँचल। गमछा खोलि फचाँरि कक्काक आगूमे ओछाइनपर बालगोविन रखि देलक। भाँग केना बनै, केहेन बनै, केकरा-ले बनै, बालगोविनक मनमे नाचि रहल छल। मुदा अगुरवार बाजब उचित नइ बुझि चुपे रहए। भिनसुरका समय तँए सुर्ज भगवानसँ लऽ कऽ हवा-पानि, गाछ-बिरीछक संग मनुक्खक मन सेहो ठण्ढ-शीतल छेलैहे। अन्हार कोनो मासक किए ने होउ, मुदा दिनक अपेछा रातिक संग भोरो शीतल रहिते अछि।

गामक लोक थहाथही करए लगल। महावीरजीक मण्डपमे कीर्तन मण्डली बैस ढोलकक औंठी कसऽ लगल। मजीराबला मजीराक डोरी सेरियबए लगल। धिया-पुता बिनु साजे-अबाजे सऽरऽ रऽ रऽक संग होरी है; होरी है, चिचिआइत...।

..एक दिस बालगोविन ठाढ़ आ दोसर दिस फचाँरि काका बैसल जुति-भाँति लगबैत रहैथ। चँगेरामे गुड़, भाँगक पत्तीक झोराक संग रंग-

बिरंगक मसल्ला राखल। अमेनियाँ-पानिसँ सिलौट-लोढ़ीकेँ अमेनियाँ करैत बौका बाजल–

“भाँगक पत्ती केते देबै से काका फुटा दिअ।”

हलहल्ली भरैत फचाँरि काका बजला–

“जे वौस महावीरजी-स्थान पहुँच गेल आब ओ थोड़े घुमि कऽ घर जाएत।”

इशारामे फचाँरि काका बौकाकेँ कहि देलखिन। मुदा सुनि कऽ अनसुनी करैत बौका बात मिलेलक–

“सबटा भाँग पीसि देबइ।”

फचाँरि कक्काक मुहसँ निकललैन–

“हँ।”

‘हँ’ सुनि बौकाकेँ मनाही करैत बालगोविन मुँह खोललक–

“बौकू भाय, पहिने जेते भाँगक त्रिकाल पीआक छैथ हुनका पुछि लहुन। हुनका सभले फुट कऽ आ जे अनाड़ी आकि बाल-बोध अछि तेकरा सभले वीधे पुरौल जेतइ।”

‘वीध’ सुनि बौका बाजल–

“हँ, हँ सिलौट-लोढ़ीमे जे लागल-भीड़ल रहत ओ ओकरा सभले रहतै। मीठक लोभे ने ओ सभ शरबत पीअत। थोड़े बुझत जे कोन केहेन अछि। भाँगक रस अखन ओ सभ थोड़े बुझलक हेन। मुदा अपना सभ ते बुझै छी, तँए जानि कऽ एहेन करब नीक नहि।”

फचाँरि कक्काक मन ओइ सीकपर टँगल रहैन जेतए अनाड़ी-धुनाड़ी निशाँ पीब निसा जाइए आ ‘होरी है बलजोरी है’, गबैत मुहों-कान आ देहोमे रंग-अबीरसँ भरैत लूट लूटि कूट कूटि पाबैनक नीक मनोरथ पुरा लइए। अही आवेगमे फचाँरि काका बालगोविनकेँ कहलखिन–

“धुर बुड़ि तोरा बजै ने अबै छौ।”

बालगोविनक नरसिंह मरल नइ छल। नरसिंह तँ ओतए मरै छै जेतए ओकर प्रतिकूल मौसम रहै छइ। बालगोविनक मन तँ ई बात नहि बुझि सकल, मुदा सेवाक जे भाव धार बना बालगोविनक जिनगीक संग प्रवाहित भऽ रहल छै ओइमे किछु खरोंच तँ भइये गेल रहइ। जइसँ मनमे केतौ ने केतौ चोट लगैत रहइ। मुदा से बालगोविन नइ बुझि पबैत रहए जे खरोंच केतए अछि। ओना, चोटो चोटे छी। केतौ विवेकक चोट तँ केतौ बुधिक चोट, केतौ विचारक चोट तँ केतौ मनक चोट, केतौ धनक चोट, तँ केतौ धरमक चोट। जेते चोट तेते चोट्टा, जेते चोट्टा तेते-ले तेते चुट्टा। जेते चुट्टा तेते चुट्टी...।

ई सभ बात तँ बालगोविनक मनमे नइ उठल मुदा अपन जिनगीक जे संस्कार- काज करैक ढंग- रहै ओ बालगोविनक मनक आगूमे आबि जाँघ अड़ा घेरि दइ जे जँ लोक अधला काज नइ करत तँ कोन तराजू ओकरा अधला काजक टोकरीमे फेक देत। जँ फेकत तँ ओ अन्याय छी। जँ न्याय-अन्यायक बीच मनुक्ख अपन धार बना नइ चलत तँ ओ जिनगीए की?

ऐ रूपमे बालगोविनक नरसिंह जगल रहइ। मरबो केना कएल रहितै। मरै तँ ओतए छै जेतए अनीति क्रिया पकैड़ कर्ता करैए। ओना, बालगोविन फचाँरि काकाकेँ आदरक दृष्टिसँ बेवहार करैत आबि रहल छल, मुदा दुनियाँ तँ दुनियाँ छी, सबहक छी, अपना-अपना लुरिये-बुधिये लोक जीबैए। बालगोविनक मनमे ओ बाल अचेतन-देवता मन्दिरमे तेना बैस गेल जे बान्ह-छान्ह तोड़ैले सनसना कऽ आगू आबि गेलइ। मुदा तैयो बालगोविन पएर पकैड़ मनकेँ मनाही करै जे फचाँरि काकाकेँ आन जे बुझौन, मुदा बालगोविन तँ ई बुझिते छैन जे समाजक बीचमे सदिकाल फचाँरि कक्काक बोल खापड़िक लाड़ैनसँ लड़ैत तीसी जकाँ चनचनाइते रहै छैन, जे समाजमे सभसँ नमहर बुड़िबक के तँ फचाँरि काका। जेकरा

पाछू दिन-राति लगल रहै छी, सएह सभ नइ मोजर दइए। मुदा तँए कि फचाँरि काका पाछू हटि जेता, सेहो तँ नहियेँ अछि। केतबो लोक किए ने बुझै मुदा अपने तँ बुझिते छी, जे जेकरा-ले चोरि करै छी सहए चोर कहैए, अपन मुँह छै बजैए। मोबाइल जकाँ रिसीभ करबै तखन ने। मुदा चोर लग आबि फचाँरि कक्काक मन अँटैक गेलैन। जेना रस्ता घेरि कोनो बाघ-सिंह बैसल हुअए। फचाँरि काका, जे समाजमे सभसँ मानल-जानल जाइ छैथ ओ बालगोविन सन मौगमेहराक बातक मानिए केते देथिन। थकमकाइत फचाँरि काका आ सकपकाइत बालगोविन।

बालगोविनक मनमे उठल, एक तँ ओ (फचाँरि काका) पहिने दुतकारलैन, तैसंग 'बुड़ि' कहि बेकूफ कहलैन, तैपर सँ 'बजै ने अबै छौ' सेहो कहलैन। की बालगोविन जनकबाबाक दरबारक अष्टावक्र अछि? मन पाछू उनैट तकलकै तँ बुझि पड़लै जे पाछूसँ दौगल अबैत किछु मनमे पइस गेलइ। पैसते मुँह फुटलै–

"काका, हमरा बजै ने अबैए आकि अहाँकेँ बुझै ने अबैए।"

बालगोविनक बात सुनि, जहिना बाघक आँखिपर जाधैर मनुक्खक आँखि अँटकल रहैए ताधैर ओकरा एको डेग बढ़ैक साहस नइ होइ छै, तहिना फचाँरि काकाकेँ भेलैन। बजैक वेगमे बालगोविन बाजि देलक, एहेन बात नहि, अपन कमख्या देवीक वरदान ओते मनकेँ सक्कत बनौने रहै, जे किछु ने। जइ दिन बालगोविनक जन्म परिवारमे भेल तइ दिन जहिना पिता जशोदाक ललना बुझैत, तहिना माए पिताकेँ नन्दक पलना बुझैत बालगोविनक सेवा करैत रहली। सात बर्खक बोलगोविन बिआह करै जोकर भऽ भेलैन। बचकानी बिआह तँए बचकानी बर-कन्याँ। जहिना बचकानी बर-कन्याँ तहिना बचकानी बिआहक दिन। अखुनका जकाँ सभ वीध बिआहेक राति होइ तँ भाय बड़-बढ़ियाँ, मुदा मीठगर-नोनगर दुनू एक्के साँझ होइ, से तँ विचारऽ पड़तह। मुदा से सभ बात नइ रहै, बाल-बिआहक चलैन, तँए ढहलेल-बकलेल सभ बर-

कन्याँक बिआह होइते आबि रहल अछि। बकलेल-ढहलेल ऐ दुआरे जे बिआहो एकटा संस्कार छिऐ, जे बिआहक पछातिये भेटै छइ। अखुनका जकाँ बर-कन्याँक बिआहमे दॉव-पेँच करब सेहो नहियेँ छल। ओना, धुरतैक आड़ि आइए नइ सभ दिनसँ पड़िते आबि रहल अछि।

साते बर्खक अवस्थामे बालगोविनक बिआह करा माए-बाप बेटाक संस्कार बेटाकेँ दऽ देलैन। मुदा बच्चा बालगोविन अखन कमाइ-खटाइ जोकर नइ, तहूले तँ उपाय माता-पिताकेँ छेलन्हिहेँ जे जखन कमाइ-खटाइ जोकर बेटा-बेटी होइ छेलै तखन दुरागमन होइ छेलइ।

बीस बर्खक अवस्थामे बालगोविनक माता-पिता आजीज भऽ गेला जे भरिसक बालगोविनकेँ मोछ-दाढ़ी नइ हएत। ओना, सोलहसँ अठारह बर्खक अवस्थामे बरक दुरागमन होइए से बालगोविनकेँ मोछे-दाढ़ी खा गेल। गामो आ समाजो तँ ओहने अछि जे अनेरे साले-साल, मासे-मास, दिने-दिन आकि छने-छन-पले-पलक हिसाब जोड़ै पाछू तवाह रहत, भेल तँ एक बेर जन्म, से तँ सभकेँ बुझले छै, दोसर बेर बिआह-दुरागमन, तेकर ठेकान तँ ऐछे जे सोलह-अठारह बर्खमे लोककेँ मोछ-दाढ़ी भइये जाइ छइ। अही धोखा-धोखीमे बालगोविनक दुरागमन दू-तीन बर्ख पछुआ गेल। मुदा तइले बालगोविनकेँ मिसियो भरि मनमे कुवाथ नइ भेल। नि-धन्धी बालगोविन, जेतए धड़ तेतए घर मानि चलनिहार! ने खाइक ठोकान आ ने रहैक ठेकान। तइले माइयो-बापकेँ मनमे कोनो तेहेन कठाइन नइ जे किए बालगोविन अढ़ौलासँ जहिना अपनो काज करैए तहिना अनका अढ़ौलासँ अनकरे करैए, मुदा तैसंग ईहो तँ छइहे जे खेबो-पीबो तँ करिते अछि।

ओकरा कमाइके कोन खगता छै जखन दुरागमन हेतइ अपने खगतै, अपन करत, तइले हमरा की। अनेरे तैपर सँ लोको कहत बेटा-कमाइपर फुरफुरी छइ। जखन बापक बेटा हमहूँ छेलिऐ तखन हमरो भेल आब की हमरा अछैत बालगोविनकेँ नइ हेतइ। बालगोविन तँ सहजे

बालगोविने बनि गेल अछि, ने पुरुख ने मौगी। तइले बालगोविनकेँ मनमे कुवाथ हेतै किए। अपन शब्दकोषसँ बालगोविन ओमिट कऽ मनसँ हटा नेने रहए। तँए जेहने अपन घर तेहने दोसराक घर बुझि भाए-बहिन, काकी-दादीक सम्बन्धसँ तेना मिलि-जुलि गेल जे अपनासँ उमेरक छोट बलिगोविना भैया कहै तइले बालगोविनकेँ मनमे कोनो बेथा किए हेतइ।

बीस बर्खक अवस्थामे बालगोविन दुरागमन करए सासुर गेल। मोछ-दाढ़ी रहबे ने करै जे माथक केशक आड़ि-कोण बनबैत, तँए नौआक काज भेले ने रहइ। मुदा से बात नइ रहै बालगोविनकेँ ऊपरका ठोरक (मोछबला ठोर) दुनू कोणपर एकहकटा मोछ जनमल। नीचला ठोर (माने दाढ़ीबला) मे तीनटा दाढ़ी जनमल। मुदा किए परिवारमे ओइ मोछ-दाढ़ी-ले कोनो विचार होएत। पुरुख छी सोल्होअना दाढ़ी-मोछ लऽ कऽ सासुर के कहए जे सासुरक अतिरिक्तो गाम जा सकैए। ओ पाँचो दाढ़ी मोछ नेने बालगोविन दुरागमन करए सासुर गेल। भाय सासुर तँ सासुर छी तहूमे बिआह-दुरागमनक। नान्हि-नान्हिटा सरही आम कलकतिया-कृष्णभोग आकि सबुजा सन-सन बड़का आमक डारिमे जुटि कलमी भऽ जाइए, आ...। जखने बालगोविन ससुरक दुआरपर पालकीमे पहुँचल कि कौछक दीपक इजोतमे सारि सभ पाँचो मोछ-दाढ़ी देखि नेने छल, मुदा दुआरपर आएल अतिथिकेँ समैयक संग ने सुआगत हएत। तहूमे भरि रतुका रहैक बात अछि, हमरो सबहक नानी अण्डा नै पाड़त, से बात तँ नहियेँ अछि। तखन सभ सवुर बान्हि चुप रहि गेल, मुदा आन-आन जे बरक रूप-रेखा देखने होथि मुदा सारि सभ वएह पाँचो मोछ-दाढ़ी देखलक।

एक तँ दुरागमन जे बिआहक उनाड़ी भेल, अधिक विधि-बेवहार तँ बिआहेमे भेल रहै छै, आ किनको उपनैनेमे भेल रहै छैन, तँए दुरागमन, काजक दृष्टिए जेते भारी- नमहर- हुअए मुदा विधि-बेवहारक लेखे संस्कारसँ बाहर अछि। काजक दृष्टि भारी ई जे एक समाजक कनियाँ

दोसर समाजमे प्रवेश करती, अइले कि सबहक खगता अछि। खेला-पीला पछाइत बालगोविन सारि सबहक बीच आबि गेल। बिआह-दुरागमनमे समाजे आ माइए-बापटा कैं नहि बरो-कनियाँक मनमे खुशीक जुआरि ऐबते अछि। सारिक बीच अपनाकैं देखिते बालगोविनकैं दरबज्जामे टाँगल फोटो मोन पड़ि गेलइ। एकटा कृष्ण सइयो रानी! मनक उदगार जगलै रहै जे आरो बढ़ि गेलै, तही बीच एक गोटे, जे साँझसँ हियौने रहै, बाजल–

"पाहुन, एकटा कहू ते, दूटा केहेन चिड़ैकैं दोस्ती होइ छै?"

बालगोविन तँ बालगोविने, वेचारा चिड़ैक मानैयें ने बुझलक। केशमे चलैबला केतौ ककबा कहबैए तँ केतौ चिड़ै-चिरनी। अकबका गेल। बाजल-

"हमरा ते बुझले अछि पहिने अपन बहिन सभसँ पुछि लियनु जे किनका सभकैं बुझल छैन आ किनका सभकैं बुझल नहि छैन।"

बालगोविनक बहटारब गाए-महींस जकाँ दोसर सारि बुझि गेल छल, बाजल–

"जहिना दूटा ओहन मनुक्खक दोस्ती होइ छै तहिना दूटा चिड़ैक दोस्ती होइ छइ।"

हँसैत बालगोविन बाजल–

"अपना दुनू गोरेक मुँह-कान की एक रंग नइ अछि।"

अपन दॉवकैं सुतारैत तेसर बाजल–

"कोसीकातक कास-पटेर जकाँ जँ मुँहमे पाँचटा झाड़ जे जनमल अछि ओ दुनू गोरेक मुँह-कानकैं कहियो एकरंग बनए देत?"

हारल पाशा बालगोविनक। बाजल–

"से तँ नहियें बनए देत!"

"तरवन?"

"अहाँ जे कही।"

"कही नइ! पाँचो गोरे एकहकटा उरवाइर फेक देब।"

जेना सुनि कऽ बालगोविनक मन हल्लुक भेल, तहिना बाजल–

"अहाँ ऐठाम छी जेना-क रहए दैक मन हुअए तेना रहऽ दिअ मुदा एकठाम रहू।"

बालगोविन गामक ओहन युवक जे आँगनमे जँ पत्नीकेँ चुल्हि पजारैत देरवैत तँ बाल्टीनमे पानि भरि अनैत। जँ लोहियामे आगिक ताव आ धुआँमे पत्नीकेँ तरकारी लाड़ैत-चाड़ैत देरवैत तँ सिलौटपर मसल्ला पीसऽ लगैत। जइसँ गामक लोक ने पुरुखे बुझैत आ ने मौगीए। मुदा सामाजिक पक्ष ओकर ई छेलै जे बँसबिटीसँ कियो जँ असगरे बाँस काटि अनैत तँ तेकरा देखिते पाछूसँ पकैड़ बाँसक छीपकेँ हिलऽ-डोलऽ नहि दइत। वंशे जकाँ ने बाँसो अछि जेकरा जँ जड़ि पकैड़ उठाएब तँ छीप माटिपर लटैक जाएत, जँ बीचमे पकैड़ उठाएब तँ छीपो आ जड़ियो माटि पकैड़ लेत, जँ छीप पकैड़ उठाएब तँ जड़िये ने उठत! मुदा दू गोरे मिलि उठौलासँ सोझ-साझ बाँसो रहिते अछि।

❑

शब्द संरव्या: 1996, तिथि: 23 फरवरी 2015

लेहाज

ठक्कन आ वरस्पैत दुनू एके गौंआँ, एके कौलेजसँ बी.ए. पास सेहो केने अछि। हारि-थाकि दुनू गाम आएल। गाम आएल नहि, रहबे करए, मुदा ठौर नइ भेटने माने नोकरी नइ भेने दुनू गामेमे रहि किछु करैक विचार केलक। ओना, ठक्कनो आ वरस्पैतो दू जातिक सेहो आ दू टोलोक। ओना, कहैले दू टोलक अछि, मुदा से प्राकृतिक नहि, एके टोलमे दू जातिक सीमा रहने दू टोल भेल अछि। मुदा तैयो दुनू गौंआँ, पढ़ै-लिखैक संगी आ दोसो तँ रहबे करए, एकरा के नकारत।

मुदा सभ किछु रहितो दुनू सदिकाल अपने विचारमे ओझराएल रहए। मुदा तैयो करवनो संगी बनि फगुओ गाबए तँ करवनो दुनू एक-दोसरकेँ देखि निमग्न भऽ जाए जे फुटैयो पाएब कठिन भऽ जाइत। जे जनमौटीक समदौन छी कि मरौटीक। मुदा जहिना बकलेलो-ढहलेल बेटा किए ने होउ मुदा बापक तँ सोने छी, तहिना ने दोस्तियो अछि...। ऐठाम आबि दुनू गोरेक मनमे दोस्तीक मर्म बढ़ि जाइ, तँए एक-दोसर छाती-मे-छाती मिला किछु निर्णय कऽ दुनू गोरे ओही रस्ते चलैक कोशिश करऽ लगए। मुदा लाख मिलानक पछाइतो गरमिलान भइये जाइ, आ जेतेकाल गरमिलानक झोंक मनमे चढ़ल रहै तेतेकाल टोका-टोकी बन्न, मुदा सौंझुका कौआक पनचैती (भरल पेट) आ भोरुका पनचैती जँ एके रंग करत तखन तँ भेल वंश-वृद्धि। सभ काग-भुसुण्डीए भऽ जाएत। काग भुसुण्डी हुअ कि नइ हुअ मुदा दुनू कि कोनो औझके दोस छी आकि जहिएसँ गामक स्कूलमे नाओं लिखौलक तहिएसँ अछि। धिया-पुतामे जे

गुल्ली-डण्टा आकि चीका-चीका खेलाइमे झगड़े भेलै तेकरा पुरनाएल कागज जकाँ फाड़ि कऽ फेक देत आकि अनेरे मनक अलमारीमे भरने रहत। अपने दुनू अपने मने पनचैती कऽ फरिया लिअए जे जखन झगड़े ने दन भेल, तखन अनेरे जे चुन-तमाकुल बन्न राखब ई बुड़िपना छोड़ि किछु ने भेल। मन मानिते दुनू एकठाम तमाकुलो खाए लगए आ गपो-सप्प करए लगए...।

..तहिना मिलान भेल रहइ। ठक्कनक हाथमे तमाकुल-चुन आ वरस्पैतक हाथो खाली आ मुहोँ खाली, आ तैपर जँ बोलो खाली तखन तँ भेल बराबरीक दोस्ती...। ई बात मनमे ऐबते वरस्पैत बाजल–

“ठक्कन दोस, एकटा बात बुझै छिऐ जे दुनू गोरे जे एकठाम तमाकुल खाइ छी तइसँ केते नीक होइए?”

हाथमे तमाकुल-चुन तैपर औंठासँ तरहत्थीपर मैलब, ठक्कनकेँ जेना आरो झोंक चढि गेल होइ तहिना मुँह फाड़ि बाजल–

“नहि।”

जहिना भनसिया लग बैस मसल्ला सबहक चर्च केलासँ सुआदिष्ट तरकारी भेटै छै तहिना वरस्पैतकेँ भेटल। बाजल–

“दोस, अपना दुनू गोरे गौंआँ छी, काजमे घटी-बढ़ी होइते अछि से हेबे करत। तहूमे जे नमहर काज रहल तइमे आरो नमहर होइ छै मुदा अहूकेँ तँ नहियेँ नकारल जाएत जे जैठाम दू गोरेक काज एक गोरे करत आ बीचमे काजक विचारक जे आदान-प्रदान दोसरक हाथे हएत अहीसँ ने समाजक सम्बन्ध सूत्र सेहो सक्कत हएत।”

वरस्पैतक बात जेना ठक्कनकेँ नचा देलक। बाजल–

“दोस! मोन पाड़ू अपन ओ दिन जइ दिन दुनू गोरे कौलेजसँ विदा होइत घर अबैत रही आ विचार केने रही जे घूस दऽ कऽ नोकरी नइ करब। तेकरे ने साफल भेल जे पाँच बर्खक जिनगियो गेल, खरचो भेल

आ नोकरियो ने भेल?”

चारक ओलतीक पानिक धारकेँ अपन अँगनाक पानिक धारमे मिलबैत वरस्पैत बाजल–

“सएह ने! बुझै के अछि, जे तेकरे साफल दुनू गोरे भोगै छी। मुदा साँझे मुइला तँ केते कानब। तहूमे असगरूआ छी। कब्र खुनए जाएब आकि बजारसँ कपड़ा आनए जाएब आकि कानि-कानि लोककेँ बुझाएब...। छोड़ू पैछलाकेँ, आब किछु करैक विचार करू।”

‘किछु करब’ सुनि ठक्कन सकपका गेल। सकपका ई गेल जे किछु करब। करैले तँ ऐ दुनियाँमे बहुत अछि तखन किछु की करब। सभटा ने किए करब। माथक मोटरी सम्हारैत ठक्कन बाजल–

“भाय, जखन नान्हिटा संकल्प नेने एतेटा जिनगीक नोकरी गेल तखन जँ अपनो किछु ने करब तँ जीब केना? जीबैले तँ किछु करए पड़ै छै किने?”

सोझराएल ठक्कनकेँ देखि वरस्पैत बाजल–

“अनेरे केतए वौआइले जाएब दोस, जेतए छी, जेतबे अछि तेकरे अपन बुझि काज शुरू करब।”

धारक चौरस पेट जकाँ सहटि ठक्कन बाजल–

“दोस, एना किए बुझै छिऐ जे गाम हमर नइ छी आकि समाज हमर नइ छी। जहिना गामक भीतर अनेको गाम अछि तहिना समाजोक भीतर अनेको समाज अछि। अपन समाज अपने ने गढ़ि-मढ़ि, जोड़ैत आगू नम्हरो आ नीको बनै छइ।”

सहीटमे सहटैत ठक्कनकेँ देखि पाछूसँ ठेलैत वरस्पैत जिगेसु बनैत बाजल–

“दोस, की कहलिऐ समाजोमे समाज छै?”

तैबीच दुनू गोरे तमाकुलक पहिल पीत फेक लेलक। मनो हल्लुक भेलै जइसँ बजैक वीणाक तार मनमे दुनूक झनझनाएल। ठक्कनकेँ जेना ठोँठिमे बैसल रहै तहिना बाजल–

“हँ मीत, एकटा अछि अपन समाज आ दोसर अछि आन समाज।”

बुझनुक वरस्पैत, मुदा अपनाकेँ अनाड़ी बनि जिज्ञासा करैत। जिज्ञासा ई करैत जे केते दूर तक हमर बात ठक्कन पकैड़ रहल अछि। जेतऽ पकड़त तेतऽ बुझि जाएब आ ओतै डेरा दुनू गोरे खसा धरमशाला बनबैत सीता-राम सीता-राम मरैबेर तक करैत रहब। देखनिहार-बुझनिहार बूझत जे राम-राम करै छी कि मरा मरा...। बाजल–

“भाय, एकटा बात हमरा मनमे हूलि-मालि करैए, से कनी फरिछा कऽ बुझा दिअ।”

वरस्पैतक विचारक गुरु-गंभीरत्वकेँ पकैड़ ठक्कन धुर-झार ओ बात बाजल जे कक्काक मुहेँ सुनने छल–

“भाय, अपना दुनू गोरे स्कूलमे विद्यार्थी समाज बनि, जे सक लागल केलौं, तहिना आनो-आन समाज अछि। शिक्षक समाज, प्रोफेसर समाज, डॉक्टर समाज, इंजीनियर समाज, जाइतिक समाज, सम्प्रदायिक समाज ने जानि केते समाज अछि।”

वरस्पैत बुझि गेल जे बहैत कमला धार जहिना अपन बास स्थलसँ जल बोझि अनवरत बैशाख-जेठक रौद बरदास करितो माने रौदचट्टा समय गमबितो चलैत रहैए तहिना जँ ठक्कनकेँ सह देब तँ आगूए-आगू घोड़ा जकाँ दौड़ऽ लगत। बाजल–

“ठक्कन भाय, तूँ ते तेते नमहर ओझरीक बात कहऽ लगलह जे हमर मने वौआ गेल।”

जहिना कोनो हरेलहा-भुतिएलहा बच्चाकेँ लोक पकैड़, बुझबए

लगैए जे बौआ तूँ हरेलह हेन कहाँ, परिवारबलासँ कनी छुटि गेलह हेन, तोरा माए-बाप लग पहुँचा देबह, कानह नहि। तहिना वरस्पैतकेँ बुझि ठक्कन बाजल–

"भाय, अपना दुनू गोरे आब कि ऐ समाजमे छह-पाँच करब, जखन सभ किछु रहितो, समाजमे किछु ने अछि तखन तँ अपन ओझरी केना सोझराएब, सएह ने जरूरी अछि। अनेरे जे उड़ल कौआ गनैत रहब, तइसँ की अपने भेटत आ की समाजकेँ भेटतै।"

जे बात वरस्पैत ठक्कनसँ बजबए चाहै छल तइ बातसँ ठक्कन बहैक गेल छल। मुदा धारक पानि तँ आड़ि बन्हने नइ रोकाएत, ओकर तँ मुँह ओरिया कऽ घुमबए पड़त। बाजल–

"भाय, समाजक चर्च करै छेलिऐ?"

वरस्पैतक इशारा पबिते ठक्कन बाजल–

"अपना दुनू गोरे दोसो छी, संगियो छी, गौओं छी, पड़ोसियो छी आ पुरुखो छीहे। मुदा जतियाक तेहेन पतिया अछि जे अहाँ दोसर जाइतिक समाज भेलौं आ हम दोसर जाइतिक। देखैले एके टोलमे, कनी हटि कऽ दुनू गोरेक घरो अछि, हम तीनियेँ घर अपना जाइतिक छी, टोलक नाउओं दछिनवारिये टोल अछि, मुदा तैबीचमे हमरा तीन टोलिया किए लोक कहैए?"

ठक्कनकेँ जेना मनमे कोनो कचोट जरूर अछि, जँ से नइ अछि तँ किए अपनाकेँ तीनटोलिया परिवार बुझैए? समाजक परिवार छी, एक तँ टोलक टुकड़ी किछु प्राकृतिक बनाबटिक खियालसँ आ किछु जातिक सेहो तँ बनले अछि। जेना रस्तापर छोटका बच्चा सभ हाथसँ बहारि चिक्कन करैत घर-अँगना बनबैत खेलाइत, अन्तिम रूप दैत-दैत खेलक समैये खेलैत खेलमे बीता हाँइ-हाँइ कऽ उसारि घर-अँगना उजाड़ि-पुजाड़ि आँगन अबैए, तहिना ठक्कनक विचारसँ वरस्पैतकेँ आभास भेल। मुदा

आभासो बूझब असान नहि। वरस्पैत बाजल–

“दोस, चारि बजेक समय रहल। दुनू गोरे एकठाम बैस गाममे किछु करैक संकल्प काइए लेब।”

ठक्कन किछु ने बाजल। अवाक बनि वरस्पैतक मुँह देखए लगल...।

चारि बजे वरस्पैत ठक्कन ऐठाम पहुँच बाजल–

“दोसतिनी हाथक चाह अपनेटा पीब आकि दोसो-महिम, गौओं-घरूआकेँ पीआएब?”

ओना, बच्चेसँ दुनू गोरे- वरस्पैतो आ ठक्कनो- एकेठाम खेलबो-धुपबो कएल आ एके स्कूलमे नाउओं लिखा पढ़बो-लिखबो केलक, मुदा दिन-तारीख मासक हिसाब दुनूक जन्मक हेरा गेल। जइसँ अखनो तक दुनू नइ बुझि पाबि रहल अछि जे उमेरक हिसाबसँ के जेठ आ के छोट अछि, जेकर चलैत जहिना वरस्पैत ठक्कन-दुनू-बेकतीसँ गप करैत तहिना ठक्कनो वरस्पैत-दुनू-परानीसँ। ओना, लोको दुनूकेँ दुनूसँ गप-सप्प करैत देखैत मुदा दुनूक दू जगह रहने, बिच्चेमे हेरा जाए। ओना, हेरा जाएत से नीके हएत, जँ आइयो अहिना हुअए जे भैंसुर मोटर साइकिलमे चुरम-चुर भेल छैथ आ भावो डॉक्टर केना देहमे भीर पट्टी बन्हती। ओना, दुनूक खतियान बनैएमे गजपट भऽ गेल रहइ। गजपट ई जे दुनू दू जातिक रहने छठिहारिक राति दुनूक दू विधि विधातो, देवगणो आ दाय-माइक देवीगण सेहो दू दुनियाँक। तँए दू रंगक खतियानी-बोहीमे नाओं दगा गेल। तहिना स्कूलोक खतियान गजपट भेल। एके दिन दुनू गोरे गामक स्कूलमे नाओं लिखबए गेल, शिक्षक अपन प्रवेश-तिथि देखि एके दिन एके तारीख ठीकि देलैन। मुदा तेतबे वरस्पैत आ ठक्कनक संग नहि छल, दुनूक सासुर सेहो एके गाम, तँए दुनूक सम्बन्धोमे बढ़ोत्तरी भइये गेल छेलइ। बढ़ोत्तरी भेल सढ़ूआरे। नैहरेसँ दुनू सुआसिन बहीना लगौने, तँए

समाज बाजियो ने सकैए। बहिनसँ जहिना बहीना, तहिना बहीनासँ बहिनोइयो ने। अखन धरिक जे वरस्पैत आ ठक्कनक बीच गप-सप्प भेल, ओ वातावरणकेँ मोहक बना देलक। चाह पीब दुनू दोस बैस विचारऽ लगल जे आगू की कएल जाए, केना कएल जाए...।

पहिने ठक्कने बाजल–

"भाय वरस्पैत, सभ दिन अहाँ किछु ने किछु नव काज दिस बढ़ैले कहै छी मुदा तेहेन जालमे ओझरा जाइ छी, से केम्हरो तकबो करब से आँखिए जलिया जाइए।"

ठक्कनक बात सुनि वरस्पैत मने-मन विचार करए लगल जे सोल्होअना काजक भार ठक्कन सुमझा रहल अछि, एहेन स्थितिमे अन्ध-भक्तकेँ अन्हरा भगता बनाएब उचित नहि। मुदा लगले मनमे उठलै जे असगरे जे मने-मन चेथारब तइसँ नीक जे मूर्त्त रूपमे काजकेँ निरमौलासँ आगूए-आगू सभ किछु आबए लगत...।

वरस्पैत बाजल–

"भाय ठक्कन, जहिना दुनियाँमे काजक कमी नइ अछि तहिना गामो-समाज, परो-परिवार आ बेकतियो-बेकतीक बीच नहियेँ अछि।"

बिच्चेमे ठक्कन बाजल–

"हँ से तँ नहियेँ अछि।"

"तखन?"

"तखन तँ यएह ने जे नीक होइ?"

ठक्कनक विचार पबिते वरस्पैतक मन जेना फुला गेला। बाजल–

"रंग-रंगक काजो समाजमे पसरले अछि। चाहे ओ अर्थ सम्बन्धी होइ कि सामाजिक होइ आकि शैक्षणिक। मुदा अखन तँ अपने दुइए गोरे छी, तँए समाजकेँ अँकैत ओहन काजमे हाथ लगबए पड़त जइमे समाज

मनसँ संग देत। जखने मनसँ संग देत तखने काजक सफल साफल हेबे करत।”

वरस्पैतक बात ठक्कनकेँ जँचल। समर्थनक भाव जगबैत बाजल–

“भाय, जिनगीमे पहिले काजक नीक-बेजाएपर विचार करब, हमरा ओते नीक नइ बुझि पड़ैए, किए तँ जे सुतल अछि ओ पहिने नीनक भक्क तोड़त तखन ने मन फरीच हेतइ। जखने फरीच हेतइ, तखने नीक-बेजाए बेड़ा लेत। तँए पहिने ओहन काजक जड़ि रोपह जेहेन जगह अछि।”

संगे-संग दुनू गोरे सभ दिन रहल तँए एक-दोसराक बात बुझैमे बेसी तरतम्य नइ होइ। वरस्पैतक विचार जेना ठक्कनक मनकेँ धक्का मारलक। धक्का लगिते बाजल–

“भाय, जखन किछु करैक विचारसँ दुनू गोरे एकठाम भेलौं तखन आइ काजक गोड़ा रोपिए देब।”

ठक्कनक विचारसँ जेना वरस्पैतोक मनमे शक्तिक आभास भेल। शक्तिक आभासो तँ सोभाविक अछि, जखने चारिटा हाथ, चारिटा पएर, चारिटा आँखि आ चारिटा कानक संग दूटा मन एकठाम हएत तखने शक्तिक संचार होइ छइ। बाजल– “भाय ठक्कन, सभ गाममे सभ रंगक पूजो होइए आ मेलो लगैए, तहिना अपनो दुनू गोरे एकटा मेला करैक विचार करह।”

पूजाक मेला सुनि ठक्कनक मन नाचि उठल। बाजल–

“बढ़ियाँ विचार, मुदा एकरंगाह मेलामे गाम-गामक बीच प्रतियोगिता भऽ जाइ छै जइसँ एक-दोसरकेँ ने देखि पबैए आ ने चीन्ह पबैए। तँए किछु नव होइ।”

जेना वरस्पैतक मनमे विचारले छेलै तहिना बाजल–

“नव काजमे नीक हएत जे अपना सभ लछमी पूजो आ चारि

दिनक मेलो लगाएब।”

चारि मास आगू लछमी पूजाक समय देखि ठक्कन बाजल– “भाय, लछमी पूजाक समैयक अखन बहू-दिन अछि, लग-पासक दोसर करह।”

ठक्कनक जिज्ञासा देखि वरस्पैत बाजल– “लछमी पूजा सबदिना छी, जहिया गर लागए, तहिये कऽ ली। आसीनमे दुर्गाजीक संग आ कातिकमे कालीजीक संग, तहूमे सालमे चारि बेर दुर्गो पूजा होइते अछि।”

महिनाक अन्तिम पूर्णिमा दिन तँइ करैत विचारकेँ आगू बढ़ौलक। एक तँ गाममे पहिल सार्वजनिक उत्सव तैसंग नव रूपमे लछमीक पूजा, समाजोक नीक सहयोग भेटल। तीस दिनक काजक दौरमे दुनूक विचारो आ बेवहारोमे दूरी बनि गेल। ओना, पूजो आ मेलोक प्रशंसा एते भेल जे समाज लछमीजीक स्थायी स्थान बनेबाक विचार सेहो कऽ लेलैन। समाजक सहयोग पाबि वरस्पैत आगूक काज समाजकेँ सुमझा देलकैन, मुदा ठक्कन चन्दाक उगाही देखि अपनाकेँ ओइमे साटि लेलक...।

..जहिना वरस्पैत अपन लेहाज बँचा काज केलैन तहिना ठक्कन अपन लेहाज उठा काज केलक, जइसँ समाजमे बदनामियोँ भेलइ।

ऐगला सालक पूजो आ मेलोक सम्बन्धमे अपन विचार दैत वरस्पैत बाजल–

“समाजक काजक संग छी, जे जेकर छी ओते सहयोग ताधैर दैत रहब, जाधैर अहाँ सभ अपन संकल्पक संग आगू बढ़ैत रहब।”

❑

शब्द संख्या: 1906, तिथि: 26 फरवरी 2015

विचार हेरा गेल

परोपट्टाक सभसँ पैघ प्राइवेट कोचिंग शिक्षण संस्थानमे ज्योतिक नाओं लिखबए देवचन जेता, जे सूचना काल्हिये पुतोहुकेँ दऽ देने छेलखिन। बी.ए. पास सुवोधनी, ससुरक आदेश-बात सुनि चुपेचाप काजक रूप-रेखा मनमे तैयार कऽ लेलैन। एहेन कोनो बीचमे बाधा सेहो नहि जे प्रश्न रूपमे उठि कऽ ठाढ़ होइतैन। चारिम बर्ख चढ़ि गेल, विद्यालयमे दाखिलाक उचित समय ज्योतिक छी। पाँच बजे भोरेसँ काजमे लगि जाएब। काजो कम नहि, बेटीक संग ससुरकेँ खुऔनाइ-पीऔनाइ, तैसंग बेटीकेँ वस्त्राभूषण सजौनाइक संग साज-शृंगार सेहो करब अछि। सात बजे धरि सभ काज सम्पन्न करैत दुनू गोरेकेँ सुढ़िऔनाइ अछि। तइमे जँ एको मिनट बिलम हएत, तँ गहुमन साँप जकाँ ससुरक फुफकार सुनए पड़त। से किए हुअ देब..?

सुवोधनीक मन सुवोधनीकेँ धकलैत कहलक। ज्योति बेटी विद्यालय जाएत। पाँच बजेसँ काजमे लगल सुवोधनी पौने सात बजे काज निपटा साँस छोड़लैन।

ज्योतिकेँ ब्रह्मचारिणीक रूपमे आगूमे ठाढ़ देखि सुवोधनीक मन अपन विद्यालयक जिनगी दिस बढ़ि गेलैन। वएह धार ने धारा बनि आगू बढ़त। ओना, ज्योतिकेँ घरसँ निकलैमे पनरह मिनट समय बाँकी अछि, सुवोधनीक सिरे कोनो काज पछुआएलो नहियेँ छैन, तइसँ मनमे खुशी छैन्हे। देवचन अपने कनी पछुआएल छैथ, ओना, समैयक हिसाबे ओहो

नहियेँ पछुआएल छला, धोती-कुर्ता पहीरि नेने छैथ, चद्दैर आ जूता खाली ऊपर-निच्चाँ ओढ़ब-पहीरब पछुआएल छैन। ज्योतिक ज्योतिमे अपन ज्योति मिलैबते सुवोधनीक मन बिहुसल, बिहुसिते बकार फुटल–

"की महाभारतक अर्जुन जकाँ अपन लक्ष साधि सकलौं। मनमे की रोपि जिनगी जीबैक सोचने छेलौं आ की भोगि रहल छी! आकि विचार हेरा गेल? नइ विचार हारि गेल। हारबो ने कएल, वौआ गेल!"

'विचार हेरा गेल आकि हारि गेल' ऐठाम आबि सुवोधनीक बकार बन्न भऽ गेलैन। बन्न होइक कारण भेलैन एक संग मोती-झाबा फूल जकाँ एकेबेर विचारक घोंदे फुला गेलैन। विचार हेरा गेल, कि हारि गेल, हरण भऽ गेल आकि दहन भऽ वौआ गेल...! सुवोधनी अकवका गेली। तैबीच देवचन दरबज्जेपर सँ चिल्होरि जकाँ टाँहि देलखिन–

"ज्योति ई इ इ!"

ससुरक टाँहि सुनिते सुवोधनी आँगनसँ ज्योतिकेँ अगुएने डेढ़ियापर पहुँच गेली। 'जय गणेश मंगल गणेश' करैत देवचन निकलला मुदा जेना रस्तेपर आगूमे केतौ किछु ठाढ़ रहै तहिना मनमे पइस गेलैन। पैसते उठलैन, आइ गुरु दिन कहाँ छी, माने वृहस्पति। विद्यालय प्रवेशक लेल शुभ दिन मानैक धारणा सभमे बनले अछि। आइ तँ शनि छी। मुदा छी तँ प्रवेशक अन्तिम तारीख। आइ जँ दाखिला नइ हएत तँ साले पछुआ जाएत। साल कि पछुआएत पढ़ैक साल पछुआएत।

ओना, परिवारक गारजनी साठि बर्खक देवचन अपने दुनू परानी हाथमे रखने छैथ मुदा अपना सन पत्नी नहि छैन। दुनूक दू गति-मति तथापि पति-पत्नीक बीच जिनगी। पत्नी- कामिनी- परेखी तँए काजसँ परिवारकेँ अँकैत। अपन दुनू परानीक काज कामिनीक मनकेँ खुशी रखनहि छैन। किए ने रहतैन, गाममे दुइए गोरे प्रोफेसर बनला, तइमे एकटा तँ अपने बेटा छैथ। बेटा- रूपचन- गामसँ हटि पनरह किलो मीटरपर कौलेजक प्रोफेसर छथिन। मोटर साइकिलसँ अबै-जाइ छैथ।

ओना, दुनू गौंआँ ओही कौलेजमे काज करै छैथ मुदा दुनू दू टोलोक आ दू जातियोक। तँए पारिवारिक जिनगीमे अन्तर सेहो छैन। दुनूक पत्नियोँ बी.ए. पास मुदा सुवोधनी घरेमे घुरियाएल छैथ, जखन कि सरोजनी हाइ स्कूलक शिक्षिका छैथ। नोकरीक पाछू सेहो दू कारण, सरोजनीक परिवार निच्चाँसँ उठैत तँए नोकरीकेँ जीविकोपार्जनक साधन बुझि करैत, मुदा सुवोधनीक सम्पन्न परिवार, तँए महिलाक बीच नोकरी-चाकरीकेँ निकृष्ट नजैरसँ देखि निषिध बुझल जाइत अछि। एक तँ ओहुना नोकरी-चाकरी हेय छीहे। एक तँ अपन सम्पन्न परिवार कामिनीक तैपर बेटोकेँ नीक कमाइयो आ प्रतिष्ठो तँ छैन्हे। ओना, ज्योतिकेँ विद्यालयमे प्रवेश जहिना सुवोधनीक मनमे नचैत तहिना कामिनियोँक मनमे, मुदा दुनूक दू-दिशाह नाच छेलैन। कामिनीक मनमे नचैत जे अपना बेटी नइ रहने परिवारमे विद्याक प्रवेश तँ पुतोहुए-जनीसँ भेल, मुदा अप्पन परिवारक चमकी ज्योतिमे चमकैत देखबे केलैन। अपने कामिनीकेँ एको अक्षरक बोध नहि। पोतीक संग पतिकेँ विद्यालय गेने दरबज्जा खाली भइये गेलैन, जे कामिनीकेँ पसिन्न नहि तँए आँगन छोड़ि दरबज्जे पकैड़ लेलैन। असगरे सुवोधनी आँगनक पुबरिया घरक ओसारक चौकीपर देवाल लगल ओंगठल, मने-मन अपन माता-पितापर नजैर देलैन। की जानि माता-पिता पढ़ौलैन, आ की पाबि रहल छी..!

प्रोफेसर माता-पिताक बेटी सुवोधनी, पढ़ै-लिखैक वातावरणमे पलित सुवोधनी। जइसँ हाइए-स्कूलसँ अपन पहिचान निखारऽ लगल छेली। जेहने पढ़ैमे तेहने लिखैमे आ तेहने बजैमे गुरुत्व रूप सुवोधनीक। अपन आत्मबल शुरूहेसँ एहेन जगल जे कहियो परीक्षाक रिजल्ट अधला नइ भेलैन। हाइयो-स्कूलक वार्षिक पत्रिका आ कौलेजोक पत्रिकादिमे कविता, कहानी, निबन्ध सभ प्रकाशित भऽ चुकल छेलैन। जइसँ मनमे किछु लिखैक जिज्ञासा सदैत रोपाएल रहै छेलैन। मुदा परिवारो तँ परिवार छी। हजारो पहियापर चलित गाड़ी...।

आइ तीन बर्खसँ माने ज्योतिक जन्मसँ लऽ कऽ चारिम बर्ख चढ़ैत विद्यालय जेबासँ पहिने चौबीस घन्टा आठो पहर प्रहरीक रूपमे रहए पड़ल, ने सुतैक ठेकान आ ने खाइक ठेकान, ने नुआँ-विस्तरक सेखी, देहसँ ओछाइन धरि रहल, तैपर ससुरक सोझहा केहेन बनि जाइ, सासुक सोझ केहेन, पतिक सोझ केहेन आ बेटीक बीच केहेन...।

..फेर लगले माता-पितापर नजैर गेलैन, जहिना माए प्रोफेसर तहिना तँ पितो छैथ, की हमर जिनगीकेँ हमरो जन्ममे नहि बुझि सकली जे बेटियोकेँ एहेन जिनगीक टपान अछिए। से जँ बुझल रहैत तँ पहिनेसँ ने क्रियाशील बनल रहितौं। आब छोड़ि कऽ भागियो केना जाएब। सृष्टिक कर्ता-धर्ता हम छिऐहे किने। मुदा लगले मन ठमकलैन, घट-घट घटवारीकेँ घटे-घट काजक आकर्षण-विकर्षण होइ छै, जिनगीक किछु काज एहनो तँ ऐछे जे स्वयं-भोगी बेसी सक्कतो आ बेसी नीको होइ छइ। माता-पिताक बीच सुवोधनी अपने उलैझ गेली। उलैझ ई गेली, हम अपना बुधिये विचारै छी आ विवेके निर्णय करै छी मुदा जँ ऐसँ फरिक्को दोसर रस्ते जँ ओ दुनू सोचने-विचारने होथि तखन अनेरे हुनका ऊपर अपन दोख लगाएब उचित नहि। अपन जे काज अछि, चाहै ओ पढ़ै-लिखैक होइ, दिनचर्याक होइ चाहै पारिवारिक होइ ओ तँ अपने केने हएत। लगले फेर नजैर अपन कौलेजक जिनगीपर गेलैन। अखन परिवारक भारक बीच पड़ि गेल छी, तँए किछु लिखि नै पबै छी। मुदा बिआहसँ पहिने, किछु खास गनल-चुनल पत्रिकामे दू-चारिटा कविता आ कहानी छपल। लोक जानलक आ कवि-कहानीकार मानलक मुदा लोकक मानकेँ हम रखि सकलिऐ? निमाहि सकलिऐ..?

..लगले फेर सुवोधनीक मन समयपर गेलैन। समय तँ जहिना अखन चौबीस घन्टाक अछि तहिना तहियो छल। अखन परिवारक केते काज करै छी, भलें अपन मन-मुद्रा दबाएले किए ने रहि गेल हुअए, मुदा जे श्रम करै छी, तेकरो नकारल तँ नहियेँ जा सकैए...।

..फेर मन आगू घुसैक देखलकैन तँ बुझि पड़लैन जे अपन पढ़ैक धार तँ नीक रहल, एहेन नीक रहल जे कोशी-कमला जकाँ अपन पेटकेँ के कहए जे आनो आनक चास-बास धरिया गेल छल। जे लिखैक बाट छोड़ि मंचपर बजैक बाट पकड़ा देलक। लिखबो-ले वौस चाही बजबो-ले वौस चाही। सुवोधनीक मन धारक मोनिक पानि जकाँ नचलैन, नचिते मनमे उठलैन, गाँधीजीक शहादत दिवसपर देल गेल भाषण। गाँधीजी एशिया महादेशक भारत, आ अफ्रिका महादेशक बीच गुलामीक विरोधमे महाभारतक कृष्ण जकाँ शंख फुकलैन। की ओ नइ जनै छला जे गुलामीक केहेन-केहेन जाल अछि। गाँधीजीक ओही विचारकेँ बुझै पाछू अपन समय चलि गेल। एशिया महादेशक सउदी अरब, यमन, ओमान, भूटान लाओस जहिना, तहिना अफ्रिकाक माली, वरकिना, नाइजर, टागो, सेनेगल मनकेँ घेरि मुड़ीकेँ गोंति गोंतिया कहा-बधी करा नेने छेलैन जे गाँधीजीक शहादत दिवसपर पोथीक रूपमे लोकार्पण करब, कहाँ भेल! किए ने भेल?

..अनायास सुवोधनीक मन मोनिक पानि जकाँ घुमैत प्रोफेसर पतिपर एलैन। जीवन संगी। प्रोफेसर गौड़ीनाथक परिवारक एहेन ढर्ड़ा पकैड़ नेने जे भरि दिन मोटर साइकिलपर चढ़ल-चढ़ल चुरम-चूर रहै छैथ। ढर्ड़ा ई जे एक तँ नामी-गामी देवचनक परिवार, तहिना सासुर, गौड़ीनाथक मात्रिक, सर-सम्बन्धी सभसँ झमटगर बनल। तैसंग अपन कौलेजक प्रोफेसरक नव समाजक बीच बास, तँए बिआह-श्राद्ध आ जन्मसँ मृत्यु धरिक, मूड़न, उपनैन इत्यादि सइयो काज सालमे पूरऽ पड़ै छैन, तैसंग पाबैनक न्योता-पिहानी सेहो, तेतबे नइ तैसंग जन्म दिनक हकार सेहो। जे दरमाहा उठबै छैथ ओ नते-हकार आ भोजे-भातक पाछू चलि जाइ छैन, जइसँ पत्नी- सुवोधनी-केँ पतिक मासक दरमाहा देखब खाली सपने रहलैन। पतिक प्रेम भरल सिनेह संवेदनशील सुवोधनीकेँ कहियो पतिसँ प्राप्त नहि भऽ रहल छैन। दिनमे भिनसरे नहा-धो तैयार

भऽ गौड़ीनाथ किछु जलखै खा चाहे चाहेटा पीब धड़फड़ाइत बजैथ–

"पहिने फल्लाँठाम मूड़नक असीरवाद दैत कौलेज जाएब, पछाइत चारि बजेमे जखन निकलब तँ फल्लाँठाम श्राद्धक डाली पूरैत आएब।"

एहेन जिनगी गौड़ीनाथक जोड़ीक बीच जे जखन दुनू बेकती- गौड़ीनाथ आ सुवोधनी- एकठाम होइत तखन अपन चुरम-चूर बेथा पत्नीक सोझमे रखि दैत। जे पति अपने बेथे बेथाएल ओइ पतिसँ केते आशा करती। भाग्यकेँ कोसव छोड़ि दोसर कोन उपाय...।

सुवोधनीक मन पुन: घुमैत प्रोफेसर पितापर गेलैन। ओ की बुझि पोसलैन जनमदाता आ पितामे अन्तर होइत। जाधैर हुनका ऐठाम रहलयैन ताधैर कहियो कोनो दुर्वचन नहि कहलैन। ने कहियो पढ़ै-लिखैमे कोताही केलैन आ ने कहियो कोनो विचारक दाब देलैन। ओना, हुनकर मन हमरा काजसँ सदिखन खुशी रहै छेलैन। जँ से नहि रहै छेलैन तँ केना लोककेँ कहै छेलखिन– "सुवोधनी सरोजनी नाइडू जकाँ वक्ता हएत।"

तखन? भरिसक हुनका मनमे ई तँ ने भेलैन जे बेटा जन्मसँ लऽ कऽ पिण्डदान तकक हकदार अछि, गारि पढ़ियो कऽ आकि सुनियोँ कऽ, बेटा सबदिना भेल, जबकि बेटी जनगीक एक कालखण्डक। माने बिआहसँ पूर्ब धरिक मात्र! तहूमे समाजो एहेन बहुरंगी अछि जे कोनो विचारकेँ बुझैए ने चाहैत। कन्याँगत अपना कन्याँकेँ जेते बेसी पढ़ा-लिखा नीक मनुक्ख बना दुनियाँक रंगमंचपर अबै जोकर बना संगबे देथिन तँ संगबैयेक कोनो ठेकान नहि! एक तँ अपन जिनगीकेँ काटि-छाँटि नीक अध्ययनक बेवस्था बेटीकेँ करब पछाइत जखन संगी तकैले जाएब तँ जेते सेवा बेटीक केने छिऐ सभ पानिमे जा कहत जे बाबू अहाँक ई दोख नइ जे हमरा पढ़ेलौं, दोख ई जे समाज बेटी-जातिकेँ विद्यासँ वंचित रखि अपन बुधि-विवेक जगै ने देलकै। जँ जागऽ देल जाइतै तँ रूपक संगी गुणो होइतै, मुदा से कहाँ अछि। केतौ रंग-बेदरंग करैत तँ केतौ अर्थ वेदरंग करैत समाजेकेँ बहुरंगी बेदरंग बना देने अछि। जँ कन्याँकेँ घरसँ

निकालि पढ़ऽ देबैन तँ पर्दाक पाठ पढ़ा अनुचित कहल जाइ छै, तँ केतौ संवेदनशीलाकेँ कठोरशीलामे जोति जिनगीक भार कन्हापर लटका देल जाइ छइ।

हमर संवेदनशीलताकेँ पिता जानि कऽ जब्बह केलैन आकि कोनो वाध्यता छेलैन। बीचमे बाजब सुवोधनीकेँ उचितो तँ नहियेँ कहल जा सकै छइ। अभिभावक किछु छैथ तँ हमरासँ बेसी अनुभवी छैथे, मुदा तँए कि ओहो जानि कऽ गरदैनमे छुरी चलौने हेता? केना कहबैन, जनमदाता छैथ। मुदा हमर संवेदनकेँ ओ तखन आँखिक सोझक ताखपर रखि विचार केलैन जखन लेन-देनमे प्रोफेसर पति सुवोधनीक संगी बनि जाइ तँ की हर्ज। समाजोक बीच लोक-लाज तँ बँचल रहत। प्रोफेसर माए-बापक बेटी, प्रोफेसर पतिक संग रहत तँ कि अपना जिनगी सदृश सुवोधनीकेँ नहि भेटतै, जरूर भेटतै...।

..पिता-बेटीक सम्बन्धक बीच बाटमे सुवोधनीक मन वौआ गेलैन। अपन पितापर सँ नजैर हटि सुवोधनीक राष्ट्र-पिता महात्मा गाँधीपर गेलैन। जहिना सिनेमाक उन्टा रील नचैत तहिना गाँधी बाबा सुवोधनीक मनमे नचला। गाँधी बाबा अपन लीलसा पूरा कऽ लेलैन। हुनक लिलसा रहैन जे शहीद होइ, जे भेलैन। मुदा हुनके मंचपर अपन कएल संकल्प केना राँड़-बाँड़ भऽ छिड़िया रहल अछि..? जिनगीक शुरूआती तीस बर्ख बहुत भेल आ किछु ने भेल। जँ कनी-मनी विघ्न-वाधामे अँटैकितो जँ बाट धऽ चलैत चलनिहारक लेखे किछु ने भेल, मुदा विपरीत बाट धऽ चलनिहारक लेखे बहुत भेल। बहुत ई भेल जे ओ तीसे नै तीस बर्ख पुरबैमे साठि बर्ख गमबए पड़तै। सुवोधनीक मनमे सवुर भेल। सवुर होइते गाँधीजीक शहादत दिवसपर लेल संकल्प मनमे उठलैन। मनमे उठिते मुहसँ फुटलैन– "देशक सटले सीमानक कातक देश भूटान अछि, जैठाम रेलगाड़ी नसीव नइ भेल। छियालीस हजार छह साए वर्ग किलोमीटरमे पसरल देशक पनरह-सोलह लाख देशवासीक भाग्य

निर्माण, तहिना सउदी अरब जे भूटान जकाँ सटल नहि मुदा महादेशक दूरियो नहि, सउदी अरब, यमन, ओमान लाओसटा नहि अफ्रिकाक माली जे बारह लाख चालीस हजार एक साए बियालीस वर्ग-किलोमीटरमे पसरल देशक अठहत्तैर लाख लोकक जिनगी, जइमे अदहासँ बेसी जमीन मरूभूमिये अछि, अदहामे सहेल सवाना घास उपजैए, तहिना बरकिना जे दू लाख चौहत्तैर हजार एक साए बाइस वर्ग किलोमीटर जमीनमे पसरल सरसैठ-अरसैठ लाख लोक ओहने ठाम ने अछि जैठाम एक दिस सहारा मरूभूमिसँ गुजरैत सर्द हवा जीवन-मरणकेँ सदिकाल झुलबैत रहैए। मुदा तैयो गिनीक मानसूनी हवा जीवनो तँ दइते छइ। तहिना नाइजर, टोगो इत्यादि-इत्यादिक अछिए।”

‘इत्यादि-इत्यादि’ सुवोधनीक मनमे उठिते रहैन तखने सासु दरबज्जापर सँ आँगन आबि आदेश दैत कहलखिन– “कनियाँ, बुड़हाकेँ अबै बेर भऽ गेलैन, तँए पहिनेसँ अपन ओरियान-बात कऽ लिअ।”

सुवोधनियोँकेँ सुतरलैन। सुतरलैन ई जे अखन तँ अँगने नहि दरबज्जोक मालिक साउसे छैथ, बजली– “अखनो बुड़हे सोहाइ छैन मुदा चारि बर्खक पोती नइ सोहाइ छैन।”

पछड़ैत कामिनी कनी पाछू घुसकैत बजली– “बुड़हा कि कम सियाखी छैथ अपनो गुप-चुप खेनहि-पीनहि हेता आ पोतियोकेँ खियौनहि हेता की।”

एक संग दुनू- सासु-पुतोहु-क आँखि, कान, विचार आ मुँह सम बनैत ठहाका मारि आत्मसात करए लगल।

❑

शब्द संख्या: 1917, तिथि: 1 मार्च 2015

ओ दिन

फगुआसँ एक दिन पहिने, ओना, फगुनेहटि हवा सेहो चलैत रहै मुदा वसन्ती तँ वसन्ती छीहे। चाहे पुरबा बहौ कि पछबा, उत्तराहा बहै कि दछिनाहा, मुदा कहौत तँ वसन्तीए किने, भलेँ दिनेमे करवनो पुरबा आकि पछबा चाहे दोरस-तेरस किए ने बहौ...।

ओना, मौसमोक आँखि-मिचौनी खेल सेहो चलिये रहल अछि, जइसँ पोखैरक डुमा-डुमी खेल सेहो चलिते अछि। आँखि-मिचौनी ई जे गोटे दिन पूबोसँ आ गोटे दिन पछिमोसँ वादल पहुँच बदरीहन जकाँ समय बनैबते अछि, तहिना गोटे दिन शिशिरक सिरसिरौनीक हवा पच्छिमसँ तेना झोंकि देलक जे शिवरातिक राखल सीरक दोहरा कऽ निकालऽ पड़ल। मुदा गोटे दिन एहनो तँ होइते अछि जे जइ दिन हवो ठमकल आ मेघो ठमकल रहल तइ दिन सुर्जोक तँ अपन बरह-सलिया उखमज रहिते छइ। जइसँ दिने देखार जाड़ जुआरिकेँ जरा-जरा अकासमे भष्मी बभूत सेहो बँटिते छैथ, जइसँ बसन्तीक अनेको रूप पाबैनमे पसरिये जाइए।

काल्हि होली छी, सम्मत सेहो जरत। ओना, अखनो सीरके तर राति कटैए मुदा फगुओक तँ अपन गुण-धर्म छइ। केना लोक ऊनी कपड़ा पहीरि हरिअर-लाल-पीअर रंगसँ रँगाएत। तइले तँ सुतीए वस्त्र ने चाही, तहूमे रंगर नहि, रंगर तँ कनी जाड़ो बँचबै छै, मुदा उज्जर तँ उज्जवल छी, जँ से नइ रहत तँ ऊपरसँ रंग केना चढ़तै। तहूमे डोलक ढारल रंगो रहबे करत, जाबे खेलाइत रहब ताबे ओहो देहकेँ सिरसिरैबते

रहत।

चँकिआएल गाम राघोपुर। गौंआँ-सँ-अनगौंआँ सबहक कान ठाढ़। सन-सनी गाममे, तँए एक-दोसरक बात सुनैले सबहक कान ठाढ़। जहिना बाढ़ि एने आकि कोनो सार्वजनिक स्थलपर सार्वजनिक उत्सव भेने लोक गोलियाइत तहिना चौको-चौराहा आ दुआरो-दरबाजापर लोक गोलियाइते रहैए। रंग-रंगक विचारो आ गप्पो गाममे पसैरते छै, जखने लोक बैसारी हएत तखने ओकरा कहै-सुनैले किछु अवसर चाहबे करी। ओही बात-विचारक धारमे नीक-अधला भँसऽ लगैए।

एक षड्यंत्रक भीतर सुबल छअटा संगीक संग मुकदमाक धारा 'तीन साए सात'मे पुलिससँ बँचैले गामक पछबरिया बाधक गाछीमे रातिक एगारह बजे छबो संगीकेँ जाड़सँ देह-हाथ ठरि गेल रहइ। एक तँ नीक जकाँ जाड़ नइ कटल, तैपर सात-आठ दिनसँ पछबा हवा झोंकि कऽ आरो ठण्ढ बना देलक। बुन्दा-बुन्दी बरखा शुरू भेल, ओना, काल्हि फगुओ छी, शिवराति भऽ चुकल अछि, बर्खा-पानिक संग हवो अपन रूखि तेज केनहि रहए। ओछाइनसँ चद्दैर धरि छबो गोटेक भीज गेल। लाख परियासक बादो दाँत-पर-दाँत छबोक खटखटाइते रहलै। मुदा उपाय? सुबलकेँ किरण कहलक–

"सुबल भाय, जिनगीक कठोर परीक्षा भऽ रहल अछि।"

गरमाएल मन रहौ कि फड़हाएल, बजैक सभ अंग हल्लुक रहैए तँए बेसी बजलो जाइ छइ। मुदा कठुआएल देहक अंगो तँ ओहिना कठुआ जाइ छै, तखन कठुआएल बाते केते मुहसँ फुटत। किरणक बातकेँ सुबल ने बतंगर बनबए चाहलक आ ने बतकटोबलि करए चाहलक। सोझ-साझ सुरे सुबल बाजल–

"भाय, अपना-ले नइ ऐगला-ले परीक्षा दइ छी।"

समाजमे संक्रमणक स्थिति पनपए लगल। गामक गाड़ीक चक्का

केमहर मुहेँ घुमि चलत? जेहेन चलौनिहार रहत तेम्हरे मुहेँ ने चलत। राघोपुर गामक एक दिनक एकटा केसक मुकदमाकेँ के कहए जे सत-सत, अठ-अठटा केस हुअ लगल। भरि दिन थाना राघोपुरक लोकसँ झँपाएल रहैत, गामोमे तहिना दू-चारि-पाँच ठाम पटका-पटकी, थापर-मुक्का आ लाठी-फराठी चलिये जाए। बेवस्थाक यएह धुरी छी। जे बेवस्था घँसाइत-घँसाइत एते घँसा गेल अछि जे डेग भरि आगू मुहेँ ससरब कठिन भऽ गेल छै, तेनामे बदलाव छोड़ि दोसर रस्ते की छइ। एक दर्जन सी.आर.पी.क चौबीस घन्टाक ड्यूटी प्रशासनिक अफसरक संग गाममे भऽ गेल। मुकदमाक धारो दू-दिसिया भऽ गेल। दू ग्रुपक बीचमे एहेन स्थिति बनौल गेल जे एक दिस जँ मच्छरो ने मरैत तेकरो बदला मर्डर केस होइत, तँ दोसर दिस हथियारसँ कपारो कटल रहैत तँ ओकरा लाठीए बना देल जाइ छल, स्थिति भयंकर बनऽ लगल। विस्फोटक बनऽ लगल। न्यायालयक प्रति सुबल सबहक बिसवास बढ़ल। थानाक वहिष्कार ऐ शर्तपर केलक जे आगूक कारवाईमे थनोक स्टाफकेँ लपटौल जाए। जे बेवहारिक रूपमे तँइ भेल। छबो संगीक संग सुबल मनमे ठानि लेलक जे गाम नइ छोड़ब, गाम छोड़ब पाछू हटब भेल, से नइ हटब। दिन भरि तँ दर्जन भरि सिपाहीक आगू हजारो सिपाही मर्द-औरत समाजमे ठाढ़ अछि, मुदा राति तँ राति छी। तँए छबो गोटे गामसँ एक किलोमीटर हटि गामेक गाछीमे बिसवासक संग राति बितबै छल।

ओना, तीन मासक दौड़मे, जाबे धरि दर्जन भरि सी.आर.पी.क ड्यूटी रहल, समाजकेँ बहुत लाभ भेल। वारन्टीक पकड़-धकड़ तेते नइ भेल, मुदा समाजक दर्जनो उचक्का फँसि गेल। जहिना जालमे घोंघा-सितुआ ओंघराइत फँसि जाइए तहिना भेल। सभकेँ अन्दाजमे आएल जे जाबे गामक उचक्का नइ सोझ हएत, ताबे समाज केना सोझ डारि पकड़त। मुदा सोचब, करब आ हएबक बीच तँ किछु-ने-किछु दूरी बीचमे अछिए। अही बीचक फाँकमे भेल ई जे रंग-रंगक घटना फँसल।

से दुनू दिससँ फँसल। के केकर शासन करत। लड़की संग घटना फोर्सो एकटा परिवारक संग केलक। तहिना गौओंक बीच भेल। तीन मास बीतैत-बीतैत शासन बदैल गेल।

बहरबैया मालिकक सात कट्ठा घराड़ी खेत। एक गोटे खेत खरीदैक गप केलैन। बेना-बट्टा भऽ गेल। दू फरीकक हिस्साक जमीन। दुनू फरीक बिकरीक गप तँइ कऽ नेने छला। रजिष्ट्रीक डेट बनल एक फरीक रजिष्ट्री ऑफिस पहुँचबे ने केलाह। जइसँ अदहा हिस्सा जमीन बँचल रहि गेल। गामेक दोसर गोरे, जे रेलबेमे नोकरी करैत, दोसर फरीककेँ जिनकर हिस्सा बँचल रहैन, जमीनक बिकरीक बात उठा, डाक करैत दाम चढ़ा देलक। जमीनबला बात पलैट बेसी दाम देनिहारक हाथे जमीन रजिष्ट्री कऽ देलक। ने समाजक कियो बहरबैयासँ पुछनिहार जे एना बात किए पलैट समाजमे झंझट ठाढ़ कऽ देलिऐ। नइ पुछैक कारण गाम अपने दोलि-पत्ता करैत। केकरो बात ने कियो सुनैले तैयार आ ने मानैले। पैछला रजिष्ट्री करौनिहार दुनू फरीकक सोल्होअना जमीन माने सातो कट्ठा जमीन लाठी हाथे हथिया लेलक। मुकदमाबाजी शुरू भेल। तैबीच एकटा षड्यंत्र रचल गेल। षड्यंत्र ई रचल गेल जे जिनकर जमीन छिनाएल रहैन हुनकर बेटा एकटा लिफाफमे गारि लिखि जमीन हथिऔलहाक नामे लिखि पठौलक। मुदा अखनो धरि ओकर सत्यापित नइ भेल अछि। लड़ाइ उग्र भेने बहुत नीको काज दबि जाइ छइ। जइ लड़काक नाओं चिट्ठी लिखिनिहारमे आएल ओकरा पकैड़ चिट्ठी पौनिहार मारलक। की मारलक केते मारलक, ई तँ तेसर वएह बुझि सकै छैथ जे ओइठाम होथि, मुदा मारलक।

होइतो अहिना छै जे केतौ कमो मारि बेसीकेँ आँकल जाइए आ केतौ बेसियो कम भऽ जाइए। ओही मारिसँ 307 दफाक मुकदमा गढ़ल गेल जइमे मारनिहारक संग सुबलक संग छबो गोरेकेँ फँसा देलकैन। मुदा तइले छबो गोरेक मनसूबा दबल नहि। एहेन मनसूबा बनि गेल जे

मुरदापर जेहने अस्सी मनक लाद तेहने नब्बे मनक। एक तँ पुलिस प्रशासन अपने लोभे परमोशन-ले लोभाएल जे जाधैर जी-जान लगा काज नइ करब ताधैर खरकाह केना बनब। जखने खरकाह बनब तखने ने अवसर हाथ लगत।

न्यायालयमे मुकदमा पहुँचते पुलिसक सिरचढ़ भेल। साते दिनक भीतर मारनिहार कोर्टमे हाजिर भेल। ऐ खियालसँ जे औवेल मुदालह छी जिला न्यायालयसँ जमानत हेबे करतै, पछाइत बाँकी मुदालहक ओही आधारपर जमानत भऽ जाएत। मुदा पुलिसक कारवाइ एते तेज भेल जे सातमे दिन मुदालहक घरमे जब्ती-कुर्की भऽ गेल। सुबलक घरक केबाड़-चौकी आदि जे जब्त भेलैन से तँ भेबे कएल जे खेतीक दमकल, जे सिंचाइक साधन छी, ओहो जब्त भेल। जे दू सालक पछाइत आपस भेल। दू साल लगैक कारण भेल जे मुकदमाक सघनता। एक-ने-एक वारन्ट बारहो मासक रहबे करै, जे से थानाक रस्ता सुबलक बन्न रहल।

थानासँ कोनो जब्त वस्तुकेँ छोड़बैमे महीनोक चक्कर लगबए पड़ै छइ। जिला न्यायालयसँ पहिल मुदालहक जमानत होइत-होइत मास दिन लगि गेल। एकतीसम दिन छबो मुदालहक जमानत नीचले कोर्टसँ भऽ गेल।

ओना, राघोपुरमे दू साल पहिनेसँ वैचारिक टकराउ शुरू भऽ गेल छल, जइसँ बाता-बाती, गारा-गारी, मारा-मारी एक तरहक चलैन जकाँ बनि गेल छल। वैचारिक संघर्ष छल तँए थाना-पुलिसकेँ रंग-रंगक मुकदमा अपने गढ़ऽ पड़ै, मुदा वायुमण्डलमे जहिना दोरस हवा एक संग बोहैत, माने धरतीसँ किछु किलोमीटर ऊपर एक हवा चाहे पूर्बा होउ आकि पछबा, तइसँ ऊपर दोसर हवा चलैत जइसँ अकासक शक्तिकेँ रोकाबट होइते छै तहिना हुअ लगल। जहिना थाना-सिपाही गरिखर मुँह-छुट्टू तहिना पीड़ित परिवारक समाजोक लोक। मुदा किछु बदलाउ भेल। बदलाउ ई भेल जे किछु दिन पहिने जेना थाना-सिपाहीक गारि लोक

सुनैत आबि रहल छल, ओ कमैत-कमैत रूकल। जहिना धारक धाराकेँ बान्ह-बान्हि बान्हल जाइ छै तहिना बन्हाएल। बन्हेबे नइ कएल थानाक क्रिया-कलापकेँ गामो आ गामसँ बाहरो उजागर कएल गेल जइसँ गौंआँ-अनगौंआँ सबहक मुहेँ थाना-ऊपर दिन-राति गारि बरिसऽ लगलै। दिनो-दिन लोकक बीच उत्साह बढ़िते गेल।

ओना, एक थानाक एक गामक जमीनक झगड़ा राघोपुरमे छल मुदा चौबगली थानाकेँ चेतौनी पड़ि गेल छेलै जइसँ अनेरो आन-आन थानाक सिपाही सबहक दौड़ भइये गेल रहइ।

जहिना चौबगली गाम सभमे विचारक टकराउ हुअ लगल तहिना थाना-कचहरीमे सेहो हुअ लगल। गामक लोक जखन कोर्ट आकि आन गाम पहुँचै छला तखन गामक हाल-चालमे आबिये जाइ छल। ओना, थाना-कचहरीमे स्टाफक अदली-बदलीसँ सेहो विचारपर प्रभाव पड़ल।

307 दफाक मुकदमा निचला कोर्टसँ किछे दिनक पछाइत सी.जी.एम. कोर्टमे चलि गेल। जहिना लोक रोगाएल अछि तहिना परिवार रोगाएल छै, परिवारे किए समाजे रोगा गेल अछि। जखने गाछक जड़िमे गराड़ धरत तखने नसे-नसे डारियो सभकेँ रोगेबे करत किने। कोटो-कचहरी तइसँ किए अबंच रहत। नस-नसमे रोग घुसले अछि, जइसँ जिनगियो बेठेकान भऽ गेल छइ। जैठाम न्यायालयक न्याय अबिसवासू भऽ जाए, तखन तँ लड़ाइ-झंझटक तँ वएह रूप ने पकड़त जे खाइ-पीबैले शहर-बजारक कचहरी रहऽ दियौ आ रगड़ा-रगड़ी समाजमे करी। जँ से नइ करब तँ समुद्रक अमृत थोड़े भेटत। तइले समुद्र मथै पड़त। यएह सभ सोचि केसकेँ बीस बर्ख तक ऐ आशासँ जे पच्चीस-तीस बर्खमे जँ नीचला कोर्टमे अँटकत तँ ऊपरका जाइत-जाइत साठि-सत्तैर बर्ख भऽ जाएत। जिनगीए केतेटा अछि, तखन तँ भेल लड़ाइ-झगड़ा, एक आइटम काज। बाइस बर्खक पछाइत कोर्टसँ केसक फैसला भेल। रोगाएल जेहेन फैसला हेबा चाही सएह भेल। सभकेँ सजा भेल। सभ

जेल गेल।

मास दिन पछाइत हाइ कोर्टसँ जमानत भेल। दस सालक पछाइत हाइ कोर्टसँ सभ छूटल।

तीस साल पछातिक सालक काल्हि होली छी। छबो संगी सभ दिनसँ संगे-संग होली खेलाइत आएल छैथ काल्हि सेहो खेलबे करता।

होली दिनक प्रभात वेला। छबो संगी- सुबल, किरण, अरूण, तरूण, वरूण, करूण सभ कियो एकठाम होइते अरूण तरूणकेँ कहलक–

"तरूण भाय, नइ आशा छल जे समाज एना मरूण भऽ जाएत।"

अरूणक बात सुनि तरूण ताड़ल चूराक धान जकाँ बाजल–

"से की, से की भाय सहाएब।"

तरूणक चुटकुल्लाक माने अरूण बुझि गेल, मुदा पाशा बदलैत बाजल–

"से की गामसँ केतौ परदेश चलि गेल छेलह, जे एना अकचका कऽ बजै छह।"

अरूण-तरूणक बीच रोगाएल बातक रस सुबल, किरण, वरूण आ करूण ओही रूपेँ लैत रहए जे रूप रोड़ाएल राहड़िक दालिमे काँच आमक फाँड़ाक होइत, कनी नून मिला दियौ तैयो हलुआ नइ तँ कनी गुड़ मिला दियौ तैयो हलुआ। जिनगीमे जँ हलुआ-पुड़ी भेटैत रहए तँ अनेरे स्वर्ग लोक किए जाएत।

अरूणकेँ अपना ऊपर खौंझ चढ़ैत देखि तरूण बाजल–

"भाय सहाएब, अनेरे तरङै छी, आब कि ओ दिन रहल जे मरद-औरत, धिया-पुता सभ मिलि गेबो करत, खेबो करत आ रंगो-अबीर खेलत।"

तरूणक बात सुनि वरूणकेँ जेना अपन पहिलुका बात मनमे उठि

गेलइ। उठि ई गेलै जे जइ मुकदमाकेँ पच्चीस-तीस बर्ख कोर्ट-कचहरीमे लड़लौं, जहल गेलौं, अपन शरीरक शक्तिक संग परिवारक आर्थिक छति सेहो भेल, मुदा एते नोकसानक जड़ि कारण की? किछु ने! बाजल–

"बौआ तरूण, जखन वसन्ते नइ तखन वसन्ती होली केहेन।"

होली सन पाबैनक दिन जँ फुसिये-फटकमे बीति जाएत तखन तँ भेल होली। विचारैत करूण बाजल–

"भाय, केतौ किछु होउ जहिना सब दिनसँ होली मनबैत एलौं, होलिका दाह करैत एलौं, तहिना मनबैत रहब आ होलीका दाह करैत रहब।"

करूणकेँ रबाड़ दैत वरूण बाजल–

"भूखे भजन ने होइ गोपाला। सोझहे करूणानिधि बनि गेने थोड़े हेतह, एकठाम बैस पुआ-मलपुआ केना चलत, से विचार ने पहिने हेबा चाही।"

वरूणक बात सुनि सुबल बाजल–

"खाइबेर भेलापर ने खाएब, अखन तँ माथमे ललका अबीर लगबैक समय अछि, पहिने से ने हेबा चाही।"

❑

शब्द संख्या: 1782, तिथि: 4 मार्च 2015

उरीन

अदराक अमैया भार साँठिते जहिना बुधना कक्काक मन हल्लुक भेलैन तहिना सुधनियोँ काकीकेँ भेलैन। पैछला अरखाढ़मे बेटीक बिआह भेने अमैया अन्तिम भार छी, जे पूरि दुनू परानी बुधना कक्काक मन हल्लुक भेलैन। हल्लुक होइते चैनिक नमहर साँस छोड़लैन। नमहर साँस ई जे बेटी बिआहक भार-दौरक प्रकरणक आखिरी वीध-बेवहार छी। ओना, भार-दौरक वीध-बेवहारक चलैन बेठेकान अछि, से दुनू परिवारक, माने बरो पक्षक आ कनियोँ पक्षक मुदा एते तँ ठेकनाएल ऐछे जे कोन पाबैन आकि समैयक भार कोन पक्षसँ आएत-जाएत। जहिना पवनौट तहिना समैया, जे दुनू पक्षसँ सालो भरि चलिते अछि।

भार-दौर बेठेकान एना अछि जे जइ मासमे बिआहक वीध-बेवहार पूर होइए तेकर पछाइतसँ भार-दौरक वीध-बेवहार शुरू होइए। ओना, कुमार-भारक चलैन सेहो अछि जे बिआहसँ पहिने होइए...।

..जहिना माता-पिताक मृत्युक सराधक पछाइत मासे-मास तीर्थानुकूल छाया होइत बरखी लग पहुँच बिसरजन करैए, तहिना बेटो-बेटीक बिआहक पछाइत सालक आखिरी मास, माने जइ मासक लग्नमे बिआह भेल रहल तइ मासमे पहुँच बिआहक प्रकरण पूर होइए। तँए जहिना बरखी भेला पछाइत ऐगला बरखीक प्रकरण शुरू होइए तहिना साल बीतला पछाइत दुरागमनक प्रक्रिया शुरू होइए।

मृत्युक पछाइत जहिना छायो बेठेकान अछि जे कोन माससँ शुरू

हएत। तहिना बिआही भारोक अछि। बेठेकान ई जे जेना अगहनमे मृत्यु भेने पूससँ छाया शुरू होइए तहिना जेठमे बिआह भेने अमैया भारसँ शुरू होइए।

बुधना काका अपन तेसर बेटी, माने अन्तिम बेटीक बिआह पैछला अखाढ़मे केने छला, जइसँ भार पछुआ गेलैन, सएह पाँचटा भार समधियौर, जमाए ऐठाम पठा दुनू परानी- बुधना काका आ सुधनी काकी- नमहर साँस छोड़लैन। बेटीक रीनसँ अपनाकेँ उरीन पबिते मने-मन दुनूकेँ खुशी उपकलैन। खुशियो उपकब सोभाविके छेलैन। सोभाविक ई जे जहिना माथपर भरिगर बोझ रहने देहक सभ अंग भार तर दबल रहैए मुदा निच्चाँ रखिते देहक संग अंगो भार मुक्त भऽ जाइए तहिना दुनू बेकती बुधनो काकाकेँ भेलैन। सालक भार-दौरक हिसाब जोड़ैत सुधनी काकी बजली–

“जेना अपन पहिल भार पुरलौं तेना ओ कहाँ पुरा सकला।”

‘बर-पक्षक पहिल भार दब पड़लैन..!’ पत्नीक बात बुधना काका कानसँ तँ नीक जकाँ सुनलैन मुदा मनकेँ अनसुन बनबैत बजला–

“जखन दुनू परिवार एक सीमापर सम्बन्ध स्थापित केलौं, तखन एहेन चर्च नीक नहि।”

पतिक बात सुनि सुधनी काकीक मनमे कचोट भेलैन। कचोट ई जे जखन दुनू परिवारक सम्बन्ध बनल तखन जँ सभ वीध-बेवहारपर नजैर खिड़ा मिलानी नइ करैत चलब तखन एकरसता दुनू परिवारमे केना औत। ई बात जरूर जे दू परिवारक बीच उच्च कोटिक सम्बन्ध स्थापित भेल, तँए छोट-छीन काजो आ बातोपर धियान ओही नजैरे (साधारण बुझि) देबा चाही, मुदा ओही छोट-छीन काज-विचारमे तँ पैघो-पैघो मान-समानक बीआ तँ नुकाएल ऐछे...।

..मुदा मनक कचोट सुधनी काकीकेँ लगले टघैर गेलैन। टघैरते मन

घुमलैन। घुमिते बजली–

“आरो जे भेल से भेल मुदा सात गंगा नहेला साफल तँ भइये गेल।”

पत्नीक मुँहक बहैत गंगा-धारमे जँ बुधना काका नइ भरि देह तँ चिड़ैयो जकाँ एको लोल जँ लूझि नै लेता सेहो केहेन हेतैन। बजला–

“किछु छी तँ अपन गाम अपन गाम छी। कोनो कि टोल-टपराक बास अछि। पाँचटा अमैया भार जोड़ब, ओ थोड़े बुझत जेकरा गाममे बेसी तारे-खजूरक गाछ छइ।”

धारक ऐगला रेतमे पतिकेँ बहैत देखि धोतीक पैछला खूट–ऐ दुआरे जे धारमे खढ़ो जखन मददगार होइ छै, तखन पतिक धोतीक खूट तँ सहजे पुरुखक खूट छी– पकैड़ दुनू पएर पाछूसँ पटकैत बजली–

“पाँचो भारक पाँचो रंगक आम पाँच गामक रहितो एके गामक ने भेल। मुदा तैयो अपन गुण-धर्म तँ अछिए।”

‘गुण-धर्म’ सुनि बुधना काका चौंकला। चौंकला ई जे गुण-धर्म तँ मनुक्खमे होइ छै, आमक नाओं किए कहली? मुदा पति रहैत ईहो कहब नीक हएत जे हमरा नइ बुझल अछि, से कनी फरिछा कऽ बुझा दिअ। मनमे अतस्-वितस् उठलैन। मुदा लगले मन फरीच भऽ गेलैन।

बजला–

“जहिना-जहिना ऐगला-पैछला भरियाक संग आमक भार सँठने छेलौं तहिना-तहिना ने आमो छेलइ।”

पतिक सह पबिते सुधनी काकी बजली–

“फैजली आमक भारमे की केने छेलिऐ से अहाँ बुझलिऐ?”

पत्नीक बात सुनि बुधना कक्काक मन कहलकैन, जँ प्रश्नक उत्तरमे देरी लगाएब तँ ओ सोचल-विचारल भेल, तइमे जँ चुकब तँ गाछक बानर

जकाँ डारिक चुकब हएत, आ जँ धड़फड़मे बाजव तँ ओ भेल उतरा-चौड़ी। तहूमे दुनू परानी छी, पत्नी-पति छी जँ उतरा-चोड़ी नइ करैत चलब तँ परिवारक गाड़ी गुड़कबे ठमैक जाएत। मुदा देरी देखि सुधनीए काकी बजली–

"फैजली आमक भारक तऽरमे, पेनीमे सापसीन आम पसारि देने छेलऐ!"

'सापसीन आम' सुनि बुधना कक्काक मन ठमकलैन। ठमकलैन ई जे बम्बइ, कलकतिया, सपेताक चर्च करबे ने केलैन आ सापसीनक गप किए चालि देलैन। फेर मनमे भेलैन जे जँ अपना नीक लगल एकर माने ईहो तँ नहियेँ हएत जे पत्नियोंकेँ नीक नइ लगैन...।

..भेल तँ जे सा-पसीन कहलैन, से जँ सपसिन कहितैथ तँ बुझितौं जे अपन पसीनक विचार कहलैन। सेहो 'स' नै 'सा' कहि देलैन! ओना, अमैया समय छी आमक लग्न भेल, ऐमे जँ कथा-कुटुमैती जकाँ कूट भाषाक प्रयोग करब तँ ओ अनुचित हएत। तँए सापसीन आम भेल, जे सजमनियेँ आम जकाँ कहियौ आकि फैजलीसँ डेढ़िया-दोबर नमहर कहियौ, से तँ होइते अछि। मुदा शुरूहेसँ जे आम रोगाए लगैए ओकर अन्तो पीलुए भोगसँ होइ छइ। तखन तँ भेल पील्लू भोग। मुदा छी तँ सापसीने। गृहिणीक गृह विद्यालय तँ ओहन गुरुआश्रम होइत जैठाम सिसैकतो आ सिहैकतो पति ज्ञान ग्रहण करैत। पतिक रूपमे बुधना काका बजला–

"सापसीन आम तँ पीलुआहा आम छी, फैजली आमक तरमे किए घोंसिया देलिऐ?"

पतिक गिरगिराइत, मिरमिरइत बात सुधनी काकीक मनकेँ जेना धक्का मारलकैन। जहिना दारीम, कटहर, नेबो, शरीफा पकि कऽ फटैत-फटैत, आवाज करैत फटि जाइए तहिना फटकैत सुधनी काकी बजली–

“अहाँ बुझै छिऐ जे जमैया भार छी, मुदा हम तँ समधिनियाँ भार बुझै छी, तँए रंगक संग रभस नइ होइ तखन भारे की भेल?”

पत्नीक विचारकेँ बहटारैत बुधना काका बजला–

“सालक लग्नक आखिरी मासो छी आ आखिरी भारो छी। पार लगि गेल।”

‘पार लगि गेल’ बजैक क्रममे तँ बुधना काका बाजि गेला मुदा जेना अपने मन अपना बोलकेँ रोकि देलकैन। रोकि ई देलकैन जे गाम-समाजमे बिआहक जे मान-दण्ड समाजमे चलैत अछि- जे दस वर्षे भवेत कन्या, जँ तइ हिसाबे सही समयपर बेटा-बेटीक बिआह नइ भेल तँ अनेको प्रश्न समाजक बीच उठऽ लगैए। मुदा नइ होइक पाछू की कारण अछि, तइबेरमे गाम-समाज चुप भऽ जाइए..!

..एक दिस प्रश्न अछि बेटीकेँ पढ़ा-लिखा डॉक्टर, इंजीनियर, प्रोफेसर इत्यादि बनाउ, दोसर दिस पनरह-सोलह बर्खक बेटी होइते, रंग-रंगक टीका-टिपणी समाजमे उठऽ लगैए। दुनूक विपरीत परिस्थिति छै, प्रोफेसर वा डॉक्टर बनैमे बीस-पचीस बर्खक उमर भइये जाइए। दुनूक बीच सामंजस केना हएत..?

मुदा से हेबो केना करत, एक दिस समाजक अधिकार बुझि लोक बाजव उचित बुझैए मुदा जैठाम काजक प्रश्न अछि तैठाम पीठ देखा पाछू ससैर जाइए..! मुदा लगले बुधना कक्काक मन फरीच भऽ गेलैन। समाजसँ परिवार दिस बढ़ला। बढ़िते मनमे उठलैन, एना बेटी माए-बापकेँ भार किए बनल अछि? ओना, पहिलुको दुनू बेटीक बिआहमे तवाही भेले रहए मुदा तेसरमे तँ नाको-दम भऽ गेलौं। असे ने छल जे बेटीक बिआह कऽ सकब। मुदा फेर मन घुमलैन। घुमिते बिआहक खर्चपर नजैर गेलैन। तीन लाख रुपैआक काज भेल..!

बिआहक चौदहम मासमे बैंकक लोनक तगेदाक सूचना बुधना

काकाकेँ भेटलैन। जे एजेण्ट गाइक खटालक नाओंपर बैंकसँ लोन दिया देने रहैन सएह पत्रक सूचना बुधना काकाकेँ देलकैन। बिआहक खुशी बुधना कक्काक मनसँ मेटाएलो ने रहैन, दोसर साल बीतते तेसर साल दुरागमन करता, तैबीचक सभ वीध-बेवहार निमाहि बेटी-दुरागनक हीक लगले छैन जे हँसी-खुशीसँ बेटी माए-बापक परिवार छोड़ि सृष्टिक सृजनमे एक नव परिवार बनि जीवनक धारमे बहैत झिलहोरि खेलाइत चलैत रहत।

बैंकक नोटिस नेने बुधना काका पहुँचला। बेरुका समय। एके-दुइए बेरुका चाह केते गोटे पीबियो नेने आ केते गोटे पछुआएलो रहैथ। हमहूँ पछुआएले रही। ओना, बुधना कक्काक घर बेसी हटलो नहियेँ छैन, मुदा बेरुका रौदमे आएल रहैथ, उनटा रस्ता तँए सिरचढ़ रौद। जइसँ चेहरामे मलीनता आबिये गेल रहैन। देखिते कहलयैन–

“काका, गोड़ लगै छी, एते रौदमे किए..?”

कहि कुरसी आगू दिस बढ़ा, बाँहि पकैड़ बैसौलयैन। थाकल-ठेहियाएल चेहरा देखि कहलयैन–

“काका, चाह पीबैक समय अछि। बनि रहल अछि। तैबीच पानियोँ पीब?”

‘चाह-पानि’ सुनि बुधना कक्काक मन सिहरलैन। बजला–

“तोहूँ बैसह ने, घरवारी सब चाह-पानि पीऔत कि तोहीं पीयेबह। किछु काजे एलौं हेन।”

बदलैत मुहोँ आ बोलोक सुर्खी देखि मनमे भरोस भेल। मनमे ई हुअए जे भरिसक कोनो उकड़ू काजमे काका फँसि गेल छैथ तँए जालमे फँसल चिड़ै जकाँ फड़फड़ा रहल छैथ। दोसर दिस जखन मन बहटतैन तखन अनेरे पैछला सोग-पीड़ा कमतैन। कहलयैन–

“काका, साठि बर्ख तँ पार कऽ गेल हेबै किने?”

हमर बात सुनि बुधना कक्काक मनमे जेना अकासक अस्सी मन बरखा बरिस गेल होन्हि तहिना बिहुसैत बजला–

“निरमल, तोरासँ लाथ की, जिनगीमे कहियो डायरी नइ लिखलौं। डाइरियेक कोन बात जे पढ़ै-लिखैक लाटे टुटि गेल। मुदा गामक तँ नीक परिवारमे माने दस-पनरह बीगहाबला किसानमे सब दिन हिसाब रहल। कहियो ने कोनो तेहेन भार पड़ल आ ने बुझि पेलौं।”

बुधना कक्काक दौड़ैत मन जेना परिवारमे सोन्हि खुनए विदा भेल होन्हि, तहिना बुझि पड़ल। तैबीच माए चाह नेने पहुँचलि। उठि कऽ डिसमे सँ चाह उठा हाथमे दैत कहलयैन–

“चाह नइ पीआबै छी, चाहक भाँज पुरबै छी।”

जेना बुधना काकाकेँ नीक लगलैन, बजला–

“चाह की भेल आ भाँज की भेल?”

कक्काक बात सुनि मन मानि गेल जे बुधना काका सोलहन्नी बाटीक पानि जकाँ थीर भऽ गेला। कहलयैन–

“काका, एक गिलास चाहक दूधमे दू गिलास चाह बनल, तँए कहलौं चाह नइ चाहक भाँज पुरेलौं।”

मधुशालामे जँ सबाल-जवाब नइ होइत चलत तँ ओ मधुशले की? केते कण्ठ फाड़ि-फाड़ि मधुमाछी सभ मधु बनबैए आ...।

..मनमे अपन विचार चलिते रहए कि बुधना काका बजला–

“ई तँ भेल फुसियाही वौस। असल चाह तँ जिनगीक चाह छी।”

कहि चुप्प भऽ गेला। चेहरासँ बुझि पड़ल काजक चिन्ता किछु बेसी छैन, तँए धड़फड़ी जकाँ छैन।

कक्काक डमहाएल बोली सुनि कहलयैन–

“गपमे एते धड़फड़ाएब तँ गप चलत। असथिरसँ पहिने चाह पीबू,

पान खाएब तखन आगूक गप हेतइ।”

बुधना कक्काक उधियाइत मन तैयो उधिया जाए। चाह सधलो ने छेलैन कि बिच्चेमे उधैक बजला–

“बौआ निरमल, यएह चाह छी जे लगले पहिने पीने रहैए ओकरा-ले किछु ने भेल, अपनो मन यएह कहतै जे गदे-पर-गद उचित नहि। मुदा थाकल-ठेहियाएलक बीच आकि जाड़-ठाड़मे पड़लाहक बीच अमृतो तँ बनियेँ जाइए।”

चाह सधल, पान खेलौं। मुँहमे पान जाइते जहाँ मुँह उठा बुधना कक्काक मुँहपर देलिऐन कि हुनकर नजैर अपन काजपर अँटकल बुझि पड़ल। जेबीसँ लोन-आपसीक किस्तक कागत देखए देलैन। कागतकेँ देखि टेबुलपर रखि कहलयैन–

“काका, अहाँक कन्यादान सभसँ नीक ऐ साल गाममे भेल।”

‘सभसँ नीक भेल’ सुनि बुधना कक्काक मन मौलाए लगलैन। जिनगीमे चारू भागसँ जेना अपनाकेँ घेराएल बुझि पड़लैन। एक दिस अछैते कमासुत परिवार रहितौ रंग-रंगक बाधा परिवारमे उपस्थिति भऽ गेल अछि। बेटीक बिआह कऽ अपनाकेँ बेटीक रीनसँ उरीन भेलौं, मुदा बिआहक मोटाक भार तँ ऊपरमे अछिए। दुनू बेटा अपनामे अराड़ि ठाढ़ कऽ आरो फसाद परिवारमे लादि देने अछि। मुदा अपनाकेँ सम्हारैत बुधना काका बजला–

“अपना केने थोड़े भेल, समाजक केने ने भेल। चारू दिससँ सोंगर लगा, सोंगरेपर घर ठाढ़ कऽ देलक, पछाइत... ।”

पुछलयैन–

“काका, कर्ज किए लेलौं?”

कर्ज किए लेलौं! एकरा सभ अधला बुझैए। मुदा परिस्थितिक सामना लेल कर्जक खगता लोककेँ भइये जाइ छइ। सामंजस करैत

बुधना काका बजला–

“बौआ, करजे ने रीन छी। मुदा जहिना माए-बापक श्राद्ध-क्रिया तक पार लगा बेटा उरीन होइए तहिना ने बेटियो बिआह रीन छी, ओकरा केलाक पछातिये ने ओइ रीनसँ उरीन हएब। कोनो कि खाइ-पीबैले लोन लेलौं।”

बुधना कक्काक दु-दिसिया प्रश्नक बीच भोथिया गेलौं। भोथिया ई गेलौं जे परिवारमे ओहन बहुतो रीन अछि, जेकरा चुकताएब कर्तव्यक सीमामे अछि। पाशा बदलैत पुछलयैन–

“काका, दुनू भाँइकेँ नोकरीमे बचत नै छैन जे बहीनक बिआह निमाहितैथ।”

हमर बात जेना काकाकेँ नीक लगलैन। बेटाक बेवहारसँ मन एते खिन्न भेल छेलैन जे बेकाबू भऽ गेला, मुदा अपनाकेँ सम्हारैत बजला–

“की बाजू बौआ, नइ बाजू तैयो गेलौं! बाजू तैयो गेलौं! हाथक कोनो ओंगरी कटने घा अपने हएत!”

टोकारा देलिऐन–

“से की काका!”

बुधन काका बजला–

“बौआ, तेसर बेटीक बिआह, अन्तिम कन्याँदान छल। पहिल कन्याँदानमे समय एते नइ कुदल छल तँए बेसी भारी नहियेँ भेल। दोसर कन्याँदानमे दुनू भाँइ, माने दुनू बेटा अपन बहिन बुझि सब काज केलक। नीक खर्चो भेल आ कुटुमैतियो नीक भेल। मुदा..!”

‘मुदा’ कहि कक्काक बोल रूकि गेलैन। जेना कियो पाछूसँ पकैड़ पाछूए दिस खिंचए लगलैन तहिना। एकाएक बीचमे बोली बन्न होइते मनमे शंका भेल जे किए बिच्चेमे काका रूकि गेला। मुदा रूकैयोक केते

कारण होइ छै, जँ किछु बीचक बात बिसैर गेलौं...। चाहे जँ कोनो एहेन बात सोझमे आबि जाए, जइसँ विचारेमे टकराहट आबि गेल...। एहनो भऽ सकैए जे बिच्चेमे पानि पीबैक इच्छा जगि गेल, कण्ठे सुखए लगल...। एहनो भऽ सकैए जे मुँहमे किछु पड़िए गेल...। अनेको कारण अछिए। तँए कनी अपनो बजैसँ परहेज केलौं।

जहिना उफनाएल पानि धरियाइत-धरियाइत असथिर होइत-होइत शान्त भऽ फरीच हुअ लगैए तहिना बुधना कक्काक मन सेहो फरीच भेलैन। फरीच होइते बजला–

“बौआ निरमल, बड़का तीन-तसियामे परिवार फँसि गेल अछि।”

‘परिवार’ सुनि मन ठमकल। ठमकल ई जे कियो अपने कुचालि चलने फँसि जाइए, जेकरा सुचालि बनबैमे केतौ-केतौ विचारकेँ तोड़ए पड़ै छै आ केतौ-केतौ बदलैयो पड़ै छइ। अपने अही घुरछीमे घुरियाएल रही, कि बिच्चेमे बुधना काका बजला–

“बौआ निरमल, दुनियाँमे कियो केकरो ने!”

कक्काक दार्शनिक बात सुनि अपनो मन जागल। पुछलयैन–

“से की काका?”

जेना कियो ठोहि फाड़ि कनबो करैए आ बजबो करैए तहिना बुधना काका ठोहि फाँड़ि बजला–

“बौआ! बेटी हमर छी, मुदा बहिन तँ ओही दुनू भाँइक छिऐ! जे बहिन अपन बपौती सम्पैत हँसी-खुशीसँ भाए-भौजाइले छोड़ि जाइए..! आ ओही बहिनक बिआहमे अपन मुड़ी छिपैत भाए, हँसी-खुशी घरसँ बहिनकेँ विदा नै कऽ भगबैक भाँज लगा दइए!”

एक संग बुधना काका केते बाजि गेला। जँ सभ बातकेँ पकैड़ आगू बढ़ब तँ सम्भव अछि जे काजेक गप पछुआ जाए वा छुटि जाए आ अकाजेमे समय चलि जाए। तँए प्रश्नक जड़िकेँ पकैड़ पुछलयैन–

“काका, एना सोझरा कऽ कहू जे छोटकी बेटीक बिआहमे दुनू बेटामे सँ कियो मदैत नहि केलैन?”

‘मदैत’ सुनि जेना बुधना कक्काक दुनू बेटा परहक तम-तमी आरो चढ़ि गेलैन। बजला–

“पाँच भाए-बहिनमे जँ एक रंग-के जमीनक हिस्सा बाँटि दिअए तँ दस बीघामे चारि बीघा दुनू भाँइकेँ हेतइ। बाँकी छह बीघा तँ ओही तीनू बहिनक होइतै जे छोड़ि ओ सभ सवुर केने अछि, मुदा भाए सबहक एहने किरदानी होइ जे अपन रुपैआ बैंकमे रखने अछि आ अपने बैंकक लोनसँ बेटीक बिआह केलौं।”

बुधना कक्काक भँसैत विचार देख, मोड़ैत पुछलयैन–

“काका, छोटकी बहिनक बिआहमे दुनू भाँइमे सँ कियो ने आएल? आ ने किछु उचितो-उपकार केलक?”

अपन हारल जहिना बजैए तहिना काका बजला–

“नहि।”

कक्काक बात सुनि मनमे भेल जे एहेन तँ ने भेल छैन जे दुनू बेटा एक विचार बना हिनके ने तँ धकिया देने छैन। मुदा से बूझब केना। पुछलयैन–

“काका, एना किए दुनू भाँइ एकमुहरी मुँह घुमा लेलैन?”

‘एकमुहरी’ सुनिते जेना दुनू बेटा-बीचक बुधना कक्काक मनमे पन्ना उनटलैन। निधोख बजला–

“बौआ, दुनू एकमुहरी कहाँ अछि, दू-मुहरी अछि आ दुइए-मुहरी की कहबै, बहुमुहरी अछि!”

एक-मुहरी, दू-मुहरी आ बहु-मुहरीक बीच ओझरा गेलौं। पुछलयैन– “एना नइ बुझब, कनी सोझ-साझ करि कऽ बजियौ, तखन

बुझब।”

हमर बात बुधना काकाकेँ नीक लगलैन। बजला–

“दुनू भाँइमे भैंसा-भैंसीक भिरंत भीतरे-भीतर भीतरघात केने छइ। जेकर फल हमरेटा किए परिवारोकेँ भोगए पड़ि रहल छइ।”

पुछलयैन– “से की?”

बजला–

“जड़िएसँ कहै छिअ। मैझली बेटीक बिआहमे दुनू भाँइ, बहिनक बिआह बुझि जी-जानसँ यज्ञ सम्हारलक। जे करीब दस बर्ख भऽ गेल हएत। दुनू भैंयोँ आ दुनू दियादिनियोँमे खूब मेल-मिलान रहइ। मुदा..!”

‘मुदा’ कहि फेर बुधना काका रूकि गेला, जेना हरक नाश कोनो बुट्टीमे लगि गेलापर बरद ठाढ़ भऽ जाइए तहिना बोलती बन्न कऽ लेलैन। हरवाह जहिना बरदक नाङरि पकैड़ बोली दइए तहिना बोली देलिऐन–

“काका, अहूँ केकर दिनक पइर करै छी, पहिरै जोकर धोती जहिना फटऽ लगैए तहिना सुनै जोकर बात जखन मनमे भेल कि चुप्पे भऽ गेलौं।”

हमर बात सुनि काकाकेँ जेना हूबा जगलैन, बजला–

“दुनू भाँइक बीच किए गरमेल अछि आ की भेलै से तँ ओ सभ जानए, मुदा गामक आवा-जाही दुनू बन्न केने अछि। ने कोनो खोज-पुछारि कियो करैए आ ने...।”

कहलयैन–

“तखन तँ अहाँकेँ आरो नीक भेल किने। मारे खेत-पथार अछि, बेच-बेच खूब खाउ-पीबू। जे मन फुरए, जेना मन फुरए से करू।”

ओना, उत्साहित होइ दुआरे कहलयैन मुदा काजक घुरछीमे काका तेना ओझरा गेल छैथ जे उत्साहे टुटल छैन। बजला– “बौआ, दुनू भाँइ

भैयारीक झगड़ा तेना कपारपर पटैक देने अछि जे कोनो सशे-वश ने चलैए।"

पुछलयैन– "से की?"

बजला–

"दुनू भाँइ कोर्टसँ नोटिस करबा देने अछि जे बिना कोर्टक आदेशे सम्पैतकेँ किछु ने कऽ सकै छी। तँए ने, ने तँ दस कट्ठा खेत बेचि कऽ बेटीक बिआह कऽ लइतौं, आ जहिना ओकरा सबहक मुँह-कान घुमल छै तहिना अपनो घुमा लइतौं।"

मुहसँ तँ किछु ने निकलल मुदा मुड़ी डोलबैत कक्काक विचारकेँ सूहकारि लेलिऐन। ओना, कक्को बजैत-बजैत चुप भऽ गेल छला, तैबीच अपनो आगू किछु सुझबे ने करए जे किछु पुछितिऐन। किछु समय दुनू गोरेक बीच गुमा-गुमी रहल। तैबीच माए सेहो दोहरी चाह नेबोबला बनौने आएल। चाह देखि बुधना काका बजला–

"नेबो देल चाह तँ चाहे होइ छइ।"

चाहक प्रशंसो आ मनक खुशियो देखि पुछलयैन–

"काका, बैंकसँ लोन केना भेटल?"

हमर बात जेना बुधना काकाकेँ नीक नइ लगलैन। बजला–

"से सभ नइ पुछऽ! ई तँ धैनवाद कुमुदेकेँ दिऐ जे वेचारा तीस-चालीस हजार अपन संगसँ खर्चा कऽ तीन लाख रुपैआ गाइक खटालक नाओंसँ लोन दिआ देलक। जइसँ बेटीक बिआह पार लागल।"

ओना, हमर पुछैक मतलब रहए जे बेटी-बिआहक दहेजक नामे तँ बैंकसँ लोन नइ भेटै छै, सुधंग लोक बुधना काका छैथे, तखन केना भेटलैन? मुदा अपन सभ बात झँपैत-तोपैत बुधना काका बजल छला। फेर मनमे भेल, हमरा बूते जे मदैत हेतैन सएह ने करबैन। जमीनक बौण्ड

बनले हेतैन, तैपर बेटा सभ सेहो सम्पैतकेँ न्यायालयक मुँह देखा देलकैन। दू-दिससँ कानूनी पकड़मे काका आबि रहल छैथ। लौनो चुकताएब हुनके छैन, तैसंग अपन ओहन नगदी आमदनी नइ छैन जइसँ नगदीमे चुकौता। बेटा सभ सहजे अतिक्रमण कऽ देने छैन। अतिक्रमण ई जे जाधैर पिता जीबै छथिन ताधैर वंशगत रूपेँ हुनकर सम्पैत छिऐन। दियादी-बँटवारा आकि भैयारी-बँटवारा तँ आगूक सीढ़ीक भेल। मुदा एकरो तँ नहियेँ नकारल जा सकैए जे जाबे लोक अपने नइ जीबए चाहत आ जीबैक लूरि नइ बना लेत, ताबे दोसराक भरोसे केते दिन जीब सकैए। पुछलयैन–

"काका, अपन मन की कहैए जे केना पार-घाट लगत?"

हमर बात जेना कक्काक छातीक ओइ निरजन निरजल स्थानपर पहुँच बेधि देलकैन जैठामसँ मनमे कछमछी उठलैन। चौबगलीसँ घेराएल बुधना कक्काक मन, ओइ अपराधी जकाँ बुझि पड़ैन जेकरा दर्जनो सिपाही दर्जनो हथियारसँ घेरि पकड़ने रहैए। डोलैत मन टुटैत विचारक संग बुधना काका बजला–

"बौआ, आरो जे भेल से भेल, मुदा जहिना माता-पिताक रीनसँ उरीन भेलौं तहिना धियो-पुताक रीनसँ उरीन भइये गेलौं। तँए बहुत कचोट मनमे नहियेँ अछि, मुदा... ।"

कक्काक मनक खुशीसँ अपनो मनमे खुशी जगल, पुछलयैन–

"मुदा की?"

बजला–

"मुदा यएह जे जेतबो औरदा बँचल अछि तेतबो दिन निचेनसँ केना जीब, तेकर उपाय कहह।"

एक संग केतेको उलझन छैन! तैबीच चैनसँ जीबए जाहै छैथ, समस्या छोट नहियेँ अछि। मुदा छोट हुअए कि नमहर, बिनु समाधाने

चैनसँ रहबो तँ कठिन छैन्हे। तँए नीक हएत जे एक-एक समस्याकेँ सोझरा दिऐन। जखने समस्या सोझरा जेतैन तखने जिनगी सोझरा जेतैन, आ जखने जिनगी सोझरा जेतैन तखने निचेनी आबि जेतैन। कहलयैन–

"काका, बैंकक लोनक तगेदाक प्रक्रिया सेशन कोर्ट जकाँ लगले-लगले नइ होइ छै, एते चूक तँ भेबे कएल जे ओ वेपारी लोन छिऐ, जेकर लाभ वेपारे केनिहारकेँ होइ छै, से नइ भेल। मुदा बेटियोक बिआह तँ मान-सम्मान, इज्जत-प्रतिष्ठा बँचा पार लगाएब साधारण नहियेँ अछि। तखन तँ भेल भीख मांगि भीख बाँटब, चाहे देब।"

हमर बातसँ जेना बुधना कक्काक मन फुनगुनेलैन, बजला–

"गाममे देखै छिऐ बैंकक सिपाही अबै छै आ लोककेँ घरसँ पकैड़ लऽ जाइ छै, तेकर डर होइए!"

कहलयैन–

"जहिना बेटा सब तीन-तसिया चालि मारि अहाँकेँ ओझरा देलैन हेन तहिना ओकरो सबहक ऊपरमे भार दिअ पड़त कक्का।"

बिच्चेमे बजला–

"से जँ होइ तँ घीवोसँ चिक्कन।"

बुधना कक्काक चपचपाइत मन देखि पुछलयैन–

"काका, आबो कहू जे अपन मन की अछि।"

जेना बुधना कक्काक मनमे विचारले रहैन कि की, तहिना धाँइ-दे बजला–

"बौआ, साँपो मरि जाए आ लाठियो ने टुटए, तेहेन जँ भऽ जाए तँ सभसँ नीक। किछु छी तँ परिवारे छी किने, केना अपना ऑखिए ओइ गाछ जकाँ देखब जे या तँ बँझिया गेल अछि या गराड़-पील्लूसँ जकैड़ गेल अछि या जेकर सुखाएल, ठुठियाएल डारिसभ भऽ गेल छइ।"

बजैत-बजैत जेना बुधना कक्काक मन उमैड़ गेलैन। मुँहक बकार बन्न मुदा धारक पलाड़ी जकाँ परिवारक धार हृदयमे बहऽ लगलैन।

कहलयैन–

“काका, सभ किछ ठीक भऽ जेतै! खाली मनकेँ चैन कऽ चेन जकाँ रस्ता बना ऐगला डेग उठबए पड़त, तहीसँ सबटा बेचैनी मनसँ पड़ा जाएत।”

बिहुसैत बुधना काका बजला–

“बौआ, जहिना अबैकाल रस्ता चोन्हिआइ छल से आब फरीच बुझि पड़ैए। अखन जाइ छी, फेर निचेनमे आगूक गप करब।”

कहलयैन–

“बड़बढ़ियाँ।”

❑

शब्द संख्या: 3235, तिथि: 8 मार्च 2015

❑❑❑

❑❑

❑

Notes